अभ्यासक्रम

इकाई १ आयोजन

१.१ गद्य, पद्य, रचना एव व्याकरण के संदर्भ मे तास एवम् इकाई योजना

१.२ श्रवण, कथन, पठन एवं लेखन कौशल्यो के विकास का महत्व एवं प्रवृतियाँ

1.3 निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षा

इकाई - २ शैक्षणिक उपकरण उपयोग एवं महत्व

२.१ पाठ्यपुस्तक

२.२ श्यामफलक

२.३ शब्दकोश

२.४ चार्ट-चित्र

२.५ फिल्म

इकाई - ३ परिक्षण एवं मूल्यांकन

३.१ मूल्यांकन का महत्व एवं प्रसार

३.२ त्रिपरीमाण दर्शक सारणी एवं प्रश्नपत्र संरचना

इकाई - ४ भाषा शिक्षक

४.१ भाषा शिक्षक की महत्ता

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

४.२ भाषाकीय योग्यता

४.३ व्यवसायिक योग्यता

इकाई : 1

आयोजन

1.1 पाठों का आयोजन

1.2 हिन्दी भाषा के विभिन्न स्वरूपों की शिक्षा : तास एवं इकाई आयोजन

(1) गद्य शिक्षा

(2) पद्य शिक्षा

(3) व्याकरण शिक्षा

(4) रचना शिक्षा

इकाई आयोजन

(1) गद्य

(2) पद्य

(3) व्याकरण

1.3 श्रवण, कथन, पठन एवं लेखन कौशलों के विकास का महत्त्व एवं प्रवृत्तियाँ

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

1.4 निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षा

1.1 पाठों का आयोजन

1. पाठ के आयोजन की बुनियादी बातें

2. पाठ के अंग

3. पाठ निरीक्षण

4. इकाई योजना की संकल्पना स्वरूप

5. इकाई नियोजन एवं सामान्य पाठ नियोजन में अन्तर

स्वाध्याय

1. पाठ के आयोजन की बुनियादी बातें :

सफल शिक्षक पाठ के पूर्वआयोजन के बिना वर्ग में कदम नहीं रखता है। उसकी सफलता का आधार उसकी पूर्वतैयारी है। अध्यापन एक कला है। टेढ़े-मेढ़े पत्थर की मूर्ति बनाने वाला कलाकार पहले से यह जानता है कि उसे कौन सी मूति बनानी है। उसके मन में वह मूर्ति स्पष्ट होती है। अपनी पूर्व संकल्पित विचारधारा के अनुसार वह उस पत्थर को आकार देता है। ठीक उसी प्रकार शिक्षक भी एक कलाकार है। उसके सामने यह स्पष्ट होना चाहिए कि वह क्या पढ़ाने जा रहा है और कैसे पढ़ाने जा रहा है। पाठ का आयोजन करते समय निम्नलिखित बातों का खास ख्याल रखा जाना चाहिए :

(1) वह भिन्न-भिन्न रुचि और मानसिक स्तर के विद्यार्थियों को पढ़ाने जा रहा है, इसलिए उसके आयोजन में सर्वसाधारणता का गुण होना चाहिए।
(2) वह जो विषय पढ़ाने जा रहा है उसका उसे पूर्ण ज्ञान होना चाहिए ।
(3) वह जो विषय पढ़ाने जा रहा है उसके बारे में पाठ संकेत तैयार कर के ही पढ़ाये ।
(4) जहाँ तक हो सके पाठ में किया द्वारा शिक्षण देने का आग्रह रखा जाय ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(5) पाठ में जो कुछ भी पढ़ाया जाय उसका जीवन के साथ जीवित संबंध होना चाहिए ।

(6) पाठ में रुचि उत्पन्न करने के सभी तरीके काम में लाये जाय ।

(7) पाठ में क्रम बरता जाय। हर एक शैक्षणिक मु ा (Teaching point) बिना उलझन के और सरलता से विद्यार्थी की समझ में आ जाना चाहिए।

(8) पाठ का आयोजन करते समय और पाठ देते समय बिनजरूरी बातें तत्काल टाल दें। पाठ का विषय यदि विस्तृत हो या गहरा हो तो उसकी मुख्य बातों का ही जिक रसपूर्वक किया जाना चाहिए ।

(9) प्रत्येक शैक्षणिक मु ` का अध्यापन कार्य पूरा होते ही एकाध छोटे प्रश्न के द्वारा उसका मूल्यांकन करके दूसरे शैक्षणिक मु ` के प्रति आगे बढ़ते रहना चाहिए ।

(10) पाठ में सरल भाषा वाले, एक ही उत्तर लाने वाले, संक्षिप्त ढंग के सवालों का उपयोग करना चाहिए। पाठ में मुख्यतः शिक्षण प्रश्न (teaching questions) का उपयोग करना चाहिए और जरूरत पड़ने पर परीक्षण प्रश्न (teaching question) का उपयोग करना चाहिए ।

11) पाठ देते समय विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने के

(12) प्रश्न पहले संपूर्ण कक्षा से पूछा जाय और बाद में किसी एक विद्यार्थी से पूछा जाय ।

(13) प्रश्न करने के बाद तुरंत उत्तर न माँगा जाय । सोचने के लिए विद्यार्थियों को थोड़ा समय (pause) दिया जाय।

(14) शुद्ध उत्तर ही स्वीकृत किये जाय और अशुद्ध उत्तर के कारण समझाये जाय ।

(15) विद्यार्थियों को आवश्यकता से अधिक प्रोत्साहित न किये जाय ।

(16) जहाँ तक हो सके अशुद्ध उत्तर विद्यार्थियों से ही शुद्ध करवाये जाय । फिर भी इस बारे में कोई नियम नहीं बांधा जा सकता है। परिस्थिति के अनुसार काम करने की कुशलता शिक्षक में होनी चाहिए ।

(17) जहाँ जरूरत पड़े वहाँ मौखिक उदाहरण (oral illustration) तथा दृश्य उदाहरण (visual illustration) देना चाहिए मगर ऐसे उदाहरणों की मर्यादा समझ लेना चाहिए ।

(18) इस पुस्तक के आगे के इस विषय के अन्य प्रकरण में दिये हुए सिद्धांतसूत्रों का उपयोग पाठ देते समय बार बार करत रहना चाहिए ।

(19) श्यामपट्ट पर जो लिखा जाय वह शुद्ध, स्पष्ट और सभी विद्यार्थी पढ़ सके ऐसे ढंग से लिखा जाना चाहिए ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

2. पाठ के अंग :

पाठ के मुख्य निम्नलिखित अंग हैं :

(अ) पाठ पढ़ाने का उ`शों और विशिष्ट उ`शों (Objectives and specific objectives)
आ) वस्तु (Content)
(इ) वस्तु को कार्यान्वित करने की पद्धतियाँ (Procedures)
(ई) साधनों (Teaching aids)
(3) शिक्षक की प्रवृत्तियाँ, ये प्रवृत्तियाँ परस्परावलंबित हैं और कलम 'अ' से 'इ' तक के समग्र सहयोग से की जाती हैं।
(ए) मूल्यांकन
(ऐ) गृहकार्

3. पाठ निरीक्षण :

पाठ का निरीक्षण एक कला है। किया और सिद्धांत दोनों को एक साथ और कार्यान्वित रूप में हम पाठ में देखते हैं। इसलिए जो पाठ हम देखना चाहें उसके बारे में उसका लिखा हुआ रूप आगे से पढ़कर समझ लेना चाहिए। पाठ बिना पूर्वग्रह के देखना चाहिए। प्रत्येक शिक्षक की अपनी खास विशेषता-खूबी विशिष्टता होती है इसका ख्याल रखकर पाठ के विभिन्न स्तरों को देखना चाहिए। पाठ निरीक्षण के लिए हम निम्नलिखित मापदण्ड देते हैं। जरूरत पड़ने पर उसमें हेरफेर भी किया जा सकता है ।

(1) उद्देश और विशिष्ट उद्देश :

(1) पाठ का उ`श कौन-सा है ?
(2) पाठ के विशिष्ठ उ`श मुख्य उ`श को भलीभाँति स्पष्ट करते हैं ?
(3) उ`श और विशिष्ठ उ`श प्राप्त हो सके ऐसे हैं या विद्यार्थी और शिक्षक की पहुँच के बाहर की बात है ?
(4) उ`श सरल भाषा में, सचोट रूप से और छोटे वाक्य में प्रकट किय गये हैं ?
(5) विद्यार्थी और शिक्षक दोनों उ`श को स्पष्ट से समझते हैं ?

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(6) पाठ के शैक्षणिक मु` स्वतंत्र होते हुए भी एक दूसरों के साथ सुगुम्फित हैं ?

(7) शिक्षक ने जब वर्ग छोड़ा तब क्या कोई ठोस बात विद्यार्थियों को देकर छोड़ा ? कौन-सी बात ?

(8) शिक्षक का आज का पाठ अगले पाठ के क्रम का निर्वाह करता है ?

(2) पद्धति :

(1) शिक्षक ने कौन-सी पद्धति अपनायी ?

(2) इस पद्धति का असर शिक्षक और विद्यार्थी पर क्या है ?

(3) ऐसा कोई उदाहरण है जब 'वर्गनियंत्रण' और 'शिक्षण' दोनों एक बन गये हों ?

(4) पाठ के विकास में विद्यार्थी कैसा भाग लेते हैं ?

(5) शैक्षणिक साधनों का उपयोग सफल हैं ?

(6) पाठ देते समय वर्ग में पैदा होती तात्कालिक समस्याओं का हल शिक्षक किस तरह करता है ?

(7) शिक्षक वर्ग में जो कुछ करता धरता है वह विद्यार्थियों के व्यक्तिगत भेदों को समझकर करता हैं या एक लकड़ी से सब को हाँकता है ?

(8) शिक्षक के उ`शों के साथ उसकी पद्धतियाँ मेल खाती हैं ?

(3) विद्यार्थी :

(1) शिक्षक विद्यार्थियों को भलीभाँति समझता है ऐसा कोई उदाहरण है ?

(2) शिक्षक समग्र वर्ग को एक ईकाई समझकर पढ़ाता है या वर्ग के इनेगिने विद्यार्थियों को ही पढ़ाता है ?

(3) शिक्षक विद्यार्थियों के रस और उनकी आवश्यकताओं के प्रति सांवेगिक हैं ? उदाहरण ?

(4) शिक्षक और विद्यार्थी दोनों पारस्परिक सहकार से कार्य करते हैं या विद्यार्थी केवल शिक्षक के ऊपर ही आधार रखते हैं ?

(5) एक विद्यार्थी के नाते आप शिक्षक के लिए क्या अभिप्राय बाँधते हैं ?

4. इकाई योजना की संकल्पना स्वरूप (Concept - Nature):

किसी भी पाठ्यक्रम की बुनियादी सामग्री को एक इकाई कहा जा सकता है। यह सामग्री विषयवस्तु के स्वरूप में, संपूर्ण विचार के स्वरूप में, अनुभव के समुच्चय के स्वरूप में अथवा व्यवहार के स्वरूप में भी निर्धारित की जा सकती है। बाह्य लक्षणों की द्रष्टि से भिन्न किन्तु आन्तरिक रीति से परस्पर सुसम्बद्ध इकाइयों के संगठन द्वारा एक परिपूर्ण पाठ्यक्रम के ढाँचे की निर्मित होती है। पाठ्यक्रम रचना करनेवालों को इस तथ्य का समुचित ज्ञान होना चाहिए क्योंकि, पाठ्यक्रम केवल विभिन्न तथ्य या घटकों के जोड से कुछ अधिक है। पाठ्यक्रम के उदेश्यों को

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

परिपूर्ण करने के लिए शिक्षक को भी अध्यापन योजना में इस तथ्य का खयाल रखकर समग्र पाठ्यक्रम को विभिन्न इकाईयों में विभाजित कर लेना चाहिए। Unit plan of course of study अर्थात् निर्धारित पाठ्यक्रम एवं निर्धारित पाठ्यपुस्तक दोनों का समग्र रूप मे आकलन कर अध्यापन की दष्टि से प्राथमिकता प्राप्त इकाईयों के क्रम का स्पष्ट प्रत्यक्षीकरण करना शिक्षक के लिए अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं उपयुक्त कर्तव्य है। ऐसा न होने पर पाठ्यपुस्तकीय विभिन्न पाठ्ययांशो का खण्डशः पृथक् अध्यापन कार्य होने की ही संभावना रहती है। परिणामतः पाठ्यक्रम के उदेश्यों की सिद्धि अपूर्ण रह जाती है और अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया के फलस्वरूप विषयसमग्र की प्रतिमा का बोध व निर्माण नहीं हो सकता तथा खण्डित, अपूर्ण एवं अर्थ की दष्टि से अस्पष्ट बोध हो विद्यार्थी कर पाता है। इन दिनों शायद यही समस्या सर्वत्र महसूस हो रही है। विद्यार्थी अधिक गुण तो प्राप्त कर लेता हैं किन्तु विषय-बोध अस्पष्ट ही कर पाता है ।

मूलतः अध्यापन-सामग्री को अध्ययन-अध्यापन योग्य स्वरुप में संगठित करके वैज्ञानिक एवं मनोवैज्ञानिक प्रणाली से प्रस्तुत करने की प्राथमिक योजना ज्होन फ्रेडरिक हर्बार्ट ने सर्व प्रथम प्रस्तुत की थी, जिसे 'पंचपदीय पाठ योजना' के नाम से हम जानते हैं। समय के साथ पंच सोपानों के नाम, स्वरुप, संख्या आदि की दृष्टि से परिवर्तन अवश्य हुए हैं किन्तु मूल मनोवैज्ञानिक सिद्धान्त एवं उनका वैज्ञानिक महत्त्व आज भी सर्वस्वीकृत है। इकाई संगठन की मूल संकल्पना भी हर्बार्ट की ही देन है, किन्तु पाठ्य योजना, सोपान क्रम, ढाँचा आदि संबंधित आग्रह एवं विवाद तथा अन्य कुछ मर्यादाओं के कारण हर्बार्ट सूचित आयोजन का प्रबल विरोध हुआ और साथ-साथ इकाई संगठन की संकल्पना भी सम्भवतः 1920 तक दुर्लक्षित या अपेक्षित रही। सन 1920 के बाद पुनश्च इसकी ओर ध्यान केन्द्रित हुआ और इसकी महत्ता तथा प्रभावोत्पादकता का समर्थन शुरू हुआ। मतमतान्तर अभी भी है. किन्तु इकाई संगठन का महत्त्व आज सर्वस्वीकृत है ।

संकल्पना (Concept):

इकाई अथवा अध्ययन-अध्यापन घटक एकांश को स्पष्ट रूप से समझने के लिए कुछ परिभाषाओं का आकलन उपयुक्त सिद्ध होगा ।

(1) "The unit is a plan of instruction based on a significant area of learning." अध्ययन के किसी एक विशिष्ट अर्थपूर्ण क्षेत्र पर आधारित एक पूर्ण घटक का आयोजन ही इकाई आयोजन है। यहाँ अध्ययन प्रक्रिया में अर्थपूर्णता और विचार की पूर्णता अथवा समग्रता पर बल है। अर्थात् एक विचार की समग्रता, पूर्णता और अर्थपूर्णता अध्ययन की बुनियाद है, इसको अध्यापन का केन्द्र बिन्दु बनाकर योजना बनानां आवश्यक है। कोई भी विचार अपने आपमें

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

संपूर्ण स्वतंत्र, अलग नहीं हो सकता । अन्य विचार बिन्दुओं से उसका संबंध रहता ही है। इस समग्रता का प्रत्यक्ष-बोध अध्ययन में महत्त्वपूर्ण है ।

(2) एकीकृत शैक्षिक अनुभव ही इकाई है। यहाँ भी परस्पर संबंधित अनुभवों के समग्र पर ही बल है। अनुभव खण्डशः और अनुभव समग्र का भेद समझकर सहसंबंधित अनुभवों के एकीकृत स्वरुप को एक घटक या इकाई मानना चाहिए। ऐसी समग्र इकाइयाँ अध्ययन की बुनियाद डालती है।

(3) सुसंगठित विज्ञान, कला (विषय) एवं मानवीय व्यापारों के पर्यावरण का एक अर्थपूर्ण अंग ही इकाई या घटक है। ऐसी इकाईयों के अध्ययन के फलस्वरूप व्यक्तित्व समायोजन की दिशा स्पष्ट रुप से सूचित होती है। व्यक्तित्व का संगठन भी विशिष्ट लक्षण-समूहों का ही संगठन व प्रतिफल होता है। ऐसे लक्षण-समूह विशिष्ट कला, विज्ञान आदि के अध्ययन के फलस्वरूप प्राप्त होते हैं। अतः अध्ययन इकाई को वर्तनगत परिवर्तन के प्रेरकों के रुप में देखा जाना चाहिए । अध्ययन की परिभाषा भी इसी अर्थ में दी जाती है। जिससे Modification of behaviour होता है उसे हम अध्ययन इकाई कह सकते हैं। अन्ततः इसीसे व्यक्तित्व निर्माण होता है ।

(4) सामाजिक संदर्भ में यथार्थ बोधग्रहण प्राप्त करने पर आधारित हेतुपूर्ण शैक्षिक अनुभव के रुप में इकाई को परिभाषित किया जा सकता है। इस प्रकार का अनुभव अध्ययनकर्ता के समग्र व्यवहार में इच्छनीय एवं यथोचित परिवर्तन लाने की क्षमता रखता है। उपरान्त इससे व्यक्ति विभिन्न परिस्थितियों से आन्तरक्रिया करके अनुरूप परिवर्तन लाने की क्षमता प्राप्त कर सकता है। केवल व्यवहार-परिवर्तन यहाँ अपेक्षित नहीं है। ऐसा परिवर्तन जो व्यक्ति को विभिन्न स्थितियों का सामना करने की क्षमता प्रदान करें, व्यक्ति के अपने प्रतिचारों को संस्कृत बनाए और अपने साथ-साथ पर्यावरण-प्रक्रिया को भी समृद्ध बनाए ऐसी अपेक्षा है। इसे हम सामाजिक इकाई कह सकते हैं ।

इन परिभाषाओं के अध्ययन से हमें कुछ महत्त्वपूर्ण तथ्य प्राप्त होते हैं। यथा

+ समकक्ष हेतुपूर्ण अनुभवों का संकलन ।
शैक्षिक अनुभवों का लाक्षणिक संगठितसमग्र ।
आचार-व्यवहार एवं व्यक्तित्व गठन में परिवर्तन करने की क्षमता हो ऐसे शैक्षिक अनुभव
सामाजिक घटक विषय के सामाजिक पहलू को समग्र रुप में प्राप्त करने की इकाई
इन साररूप तथ्यों को देखने पर पता चलेगा कि इनमें समग्रता, संयोजन जैसी संज्ञाओ 'को बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है (Wholeness, Gestalt, Configuration, Synthesis) अतः इकाई उसे कहेगें जो अपने आपमें एक पूर्व या समग्र हो, स्वयं स्पष्ट हो, उसके अपने स्पष्ट उ`श्य हो, अपने स्पष्ट आधार एवं तथ्य हो, बाह्य विश्व के

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE RAJKOT

अन्य अनुभव एवं तथ्यों से उसका सहसंबंध हो ऐसा एक पूर्ण या समग्र इकाई है। एक स्वयंपूर्ण-संपूर्ण घटक, जिसके बिना बाह्य या विशाल समग्र अपूर्व है वह इकाई ।

इकाई योजना से लाभ :

इकाई आयोजन से अध्ययन में एकसूत्रता उत्पन्न होती है।
पूर्व अभ्यास व आयोजन में सघनता आती है ।
ज्ञान की अखंण्डितता का बोध होकर संकल्पना स्पष्ट हो सकती है।
शिक्षा में अनुभव बनेगा । वैविध्य होने से अध्ययन रुचिपूर्ण
समस्या होंगे । समाधान (हल) की कला से विद्यार्थी परिचित
व्यापक एवं सघन अध्ययन संभव होगा ।
शिक्षक का कार्य भी अधिक प्रभावोत्पादक एवं फलप्रद होगा ।
निर्धारित उ`श्य सफलतापूर्वक सिद्ध हो सकेंगे ।
इस प्रक्रिया के अमल करने से बार-बार पुनरावर्तन नहीं करना पड़ता ।
अध्येता को सातत्यपूर्ण अनुभव मिलता है।
समग्र अध्ययन-अध्यापन प्रक्रिया रसपूर्ण, उ`श्य विधि में सहायक तथा प्रत्येक छात्र के लिए आत्मलक्षी सिद्ध होगा
विषय को हृदयंगम करने में, आत्मसात करने में इकाई आयोजन सहायक सिद्ध होगा ।

प्रत्येक इकाई की संरचना एवं निर्धारण में निम्न मुद्दों का समावेश करें ।

(1) अन्विति का शीर्षक
(2) अन्विति की 35 इकाइयाँ
(3) हेतु निर्धारण
(4) संकल्पनाओं की रुचि एवं स्पष्टता
(5) विषय के महत्त्वपूर्ण अंश
(6) अध्ययन-अध्यापन प्रवृत्तियों का निर्धारण
(7) सम्भवित अनुबंधों का आकलन एवं समावेश
(8) पर्याप्त समय का आयोजन

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(9) संदर्भसूची

(10) अध्यापन की पद्धतियाँ और प्रविधियाँ

(11) उपकरणों का योग्य आयोजन

(12) मूल्यांकन कसौटी (निदानात्मक लब्धात्मक एवं उपचारात्मक कार्य)

(13) स्वाध्याय

(14) समय निर्धारण में चार तास से ज्यादा समय

(15) श्यामपट्ट कार्य

पाठ्यपुस्तक में यदि कोई पद्य या गद्य अधिक लम्बा हो तो इसके लिए तास योजना के बजाय इकाई योजना शिक्षक को तैयार करनी चाहिए। प्रत्येक इकाई में क्रम बनते चलेंगे। विषय-वस्तु विस्तार के आधार पर कम बनाने पड़ेंगे।

उदाहरण : पंच परमेश्वर (कहानी) प्रेमचंदजी ।

प्रथम पिरियड - पाठ प्रवेश "पंच परमेश्वर"
द्वितीय पिरियड - विषयवस्तु की चर्चा
तृतीय पिरियड - विषयवस्तु आधारित नाट्यीकरण
चतुर्थ पिरियड - भाषाकीय तत्त्वों की चर्चा
पंचम पिरियड - पंचायत पर निबंधलेखन और मूल्यांकन ।

•शिक्षण योजना के चरण (Steps of Teaching Planning):

शिक्षण एक सो`श्य प्रक्रिया है। शिक्षण की व्यवस्था विशिष्ट उ`श्यों की प्राप्ति हेतु की जाती है। कोई भी शिक्षक जब एक शिक्षण योजना बनाने की तैयारी करता है तो योजना निर्माण के लिए उसे तीन प्रश्नों के उत्तर ज्ञात करना आवश्यक हो जाता है जिससे कि वह शिक्षण द्वारा वांच्छित उ`श्यों को प्राप्त कर सके। ये प्रश्न निम्न हैं -

(1) हम क्या प्राप्त करना चाहते हैं ?
(2) हम जो कुछ प्राप्त करना चाहते हैं, वह कैसे प्राप्त करेंगे ?
(3) हमें यह कैसे ज्ञात होगा कि हमने वह प्राप्त कर लिया है, जो हम प्राप्त करना चाहते थे ?

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

यदि उक्त तीनों प्रश्नों पर विचार किया जाय तो प्रथम प्रश्न शिक्षण-उ`श्यों से सम्बन्धित है जबकि दूसरा प्रश्न शिक्षण अधिगम- व्यवस्था से । शिक्षणोपरान्त जो उपल्धियाँ हुई उनका मूल्यांकन भी आवश्यक है, तीसरा प्रश्न इससे जुड़ा हुआ है। इस प्रकार शिक्षण योजना एक वैज्ञानिक योजना है ।

डेविस (Davis) ने ठीक ही कहा है कि "शिक्षण योजना एक शिक्षक द्वारा निर्मित योजना है, जिसके द्वारा शिक्षण उ`श्यों की सफलतापूर्वक प्राप्ति की जाती हैं ।"

• शिक्षण योजना का महत्त्व :

शिक्षण की योजना ठीक उसी प्रकार महत्त्वपूर्ण है जैसे कि किसी मकान को बनाने की योजना। यदि व्यक्ति बिना योजना के मकान चाहे तो श्रम और साधन दोनों का अपव्यय होगा यही बात शिक्षण योजना के लिए भी सत्य प्रतीत होती है। यदि अध्यापक अपने कार्य के बारे में पूर्व चिन्तन कर ले तथा अध्यापन के कार्य को भली प्रकार से सम्पन्न करने की एक रूपरेखा तैयार कर ले तो उसके अध्यापन का कार्य न केवल सरल अपितु प्रभावी रुप से सम्पन्न हो सकेगा । शिक्षण योजना बनाना निम्नांकित बिन्दुओं की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है

(1) शिक्षण योजना शिक्षण कार्य को निश्चित दिशा प्रदान करती है।
(2) विषय-वस्तु को एक तार्किक क्रम में व्यवस्थित करती है।
(3) अध्यापक विषय-वस्तु से सम्बन्धित तथ्यों, पदों, प्रत्ययों, सिद्धांतो आदि को अपनी स्मृति में सजीव कर उन पर पूर्व चिन्तन कर लेता है ।
(4) बालक व्यवहार के तीन पक्ष-ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा क्रियात्मक के विकास हेतु संगठित प्रयास निश्चित करता ह।
(5) इकाईयों के शिक्षण हेतु आवश्यकतानुसार समय का निर्धारण पूर्व में करता है। इससे सभी इकाईयों को उनके महत्त्व एवं कठिनाई के स्तर के अनुसार समय मिलना सम्भव हो जाता है ।
(6) शिक्षणोपयोगी साधन एवं सामग्री का चयन कर उपयोग में लाता है।
(7) उपलब्ध समय का अधिकाधिक उपयोग करना एक शिक्षक के लिए सम्भव हो जाता है ।
(8) अध्यापक का मनोबल ऊँचा उठता है क्योंकि पूर्व नियोजन से उसका कार्य सरल तथा शिक्षण प्रभावी बनता है ।
5. इकाई नियोजन एवं सामान्य पाठ नियोजन में अन्तर : सामान्य पाठ आयोजन और इकाई आयोजन का तुलनात्मक स्वरूप कुछ ऐसा होगा:

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

सामान्य पाठ आयोजन	**इकाई आयोजन**
(1) विषय विषयांग को भिन्न समझकर अध्यापन।	(1) विषय से संबंधित यथा संभव अधिक मु ों का संकलन।
(2) एक ही तास (Period) का आयोजन।	(2) एक विचार के लिए इसे 8 अन्तरों का समन्वित आयोजन।
(3) चर्चा स्पष्टीकरण के लिए मर्यादित समय।	(3) सर्वग्राही चर्चा, विचार विनिमय के लिए पर्याप्त समय।
(4) सूत्रबद्धता का अभाव और इसलिए खंडित अनुभव।	(4) सूत्रबद्ध, अखण्ड अनुभव प्रदान करने का आयोजन।
(5) एकांगी मर्यादित आयोजन।	(5) सर्वांगी सर्वाग्रही आयोजन।
(6) आंशिक अपरिपक्व मूल्यांकन।	(6) सर्वग्रासी परिपक्व मूल्यांकन।
(7) शैक्षणिक उपकरण एवं प्रवृत्ति।	(7) शैक्षणिक उपकरण, प्रवृत्ति, अनुभव के लिए सम्पूर्ण आयोजन।
(8) सतही अध्ययन।	(8) सघन अध्ययन।
(9) कौशल विकास उपेक्षित	(9) विविध कौशलों का समन्वित विकास।

•एकम वाक्य का पाठ आयोजन :

पाठ आयोजन

विषय-हिन्दी कक्षा-9 ता. 1-1-16

विषयांग : राजभक्त पन्ना

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

सामान्य हेतु :

(1) विद्यार्थी राष्ट्रभाषा के तत्वों की जानकारी प्राप्त करें ।
(2) विद्यार्थी लिखी हुई हिन्दी समझकर पढें ।
(3) विद्यार्थी अपने विचारों को बोलकर अभिव्यक्त
करें ।

विशिष्ट हेतु :

(1) 01 विद्यार्थी नये शब्दों में अर्थ दें ।
02 विद्यार्थी मुहावरों के सही अर्थ दें ।
(2) 01 विद्यार्थी घटनाओं का अर्थघटन करें ।
02 विद्यार्थी प्रसंगो का वर्णन करें ।
(3) 01 विद्यार्थी पात्र का सही वर्णन करें ।
02 विद्यार्थी पूछे गए प्रश्नों के सही उत्तर दें ।
03 विद्यार्थी अपने विचार शुद्ध भाषा में प्रस्तुत करें ।
राष्ट्रभाषा शिक्षण में प्रयोग एवम् शोध

•शैक्षणिक मुद्दे :

राजभक्त पन्ना :

• राजस्थान की घरती की विशेषता वीरता एवं त्याग ।
•पन्ना, आम परिवार की स्त्री दासी, उदयसिंह की देखभाल ।
• बप्पा, पन्ना का इकलौता बेटा, उदय और बच्चे का साथ साथ खेलना।
•मेवाड का अधिपत्य, बनवीर उदय के प्रति वैरभाव ।
• बनवीर का आधी रात का महल में आना, पन्ना से पूछताछ ।
•पन्ना को पहले से पता होने से अपने बेटे उदय को पलंग में लेटा देना ।

SHREE H.N SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

•स्वामीपुत्र की रक्षा के लिए अपने ही बेटे को उदय को पलंग में लेटा देना ।

•स्वामीपुत्र की रक्षा के लिए अपने ही हाथों निज संतान की हत्या देखना ।

•कर्तव्यपालन, संपूर्ण, त्याग ।

नये शब्द : इकलौता, घटिया, संत्री

मुहावरें : फूट फूट कर रोना, आश्वस्त, पौ फटना

•शैक्षणिक प्रवृत्ति :

(1) पंक्तियों का वाचन (2) प्रश्नोत्तर (3) चर्चा (4) गद्य वाचन (5) मूल्यांकन चर्चा (6) स्वाध्याय नोंघ ।

•शैक्षणिक मुद्दे :

संदर्भ पंक्ति :

"यें हैं अपना राजपूताना
नाझ जिसे तलवारों पे
जिसने सारा जीवन काटा
बरछी तीर कटारों पे
ये प्रताप का वतन पला है
आझादी के नारों पे
कूद पड़ी थी यहाँ हजारों
पद्मिनिया अंगारो पे
बोल रही है कण कण से कुरबानी राजस्थान की।

इस मिट्टी से तिलक करो ये घरती है बलिदान की।

•राजस्थान : मेवाड, वोरों की भूमि

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

•**पन्ना :** आम परिवार की महान खी

•महाराणा द्वारा राजकुमार उदय की देखभाल सौंपी जाना

•**बप्पा और उदय :** समान वय एक निजी सन्तान एक राजकुमार दोनों का साथ में पलना लेकिन का प्रेम निश्चित ।

•महाराणा का अवसान और कारोबार में बनवीर के जुल्म।

• उदय बनवीर के मार्ग का रोड़ा उसको मारने का पड्यंत्र।

•संत्री का सावघान करना और उदय की रक्षा के लिए पन्ना का अपने पुत्र के बलिदान का निर्णय ।

• उदय को सैनिकों के द्वारा बाहर भेज देना-रक्षण

• बच्चे की हत्या, माँ का विलाप-अपूर्व त्याग

•**नये शब्द :** इकलौता, संत्री, अंगरक्षक, अरावली

• **मुहावरें :** पौ फटना, आश्वस्त होना, फूट फूट कर रोना

•**मूल्यांकन :** प्रत के अनुसार

विद्यार्थियों की प्रवृत्ति :

•छात्र संदर्भ पंक्तियों को पढ़ेंगे ।

•पंक्तियों के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के प्रत्युत्तर देंगे।

•राजस्थान के अन्य महानुभावों के नाम बतायेंगे ।

• विद्यार्थी आदर्श वाचन के साथ मौनवाचन करेंगे और पात्रों की जानकारी प्राप्त करेंगे ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

•विद्यार्थी प्रसंगो का अर्थधटन करेंगे ।

•विद्यार्थी पात्रों का परिचय देंगे ।

छात्र मये शब्दों के अर्थ की जानकारी प्राप्त करेंगे ।

•विद्यार्थी एकम आधारित चर्चा में अपने विचार प्रस्तुत करेंगे।

• विद्यार्थी एकम के मूल्यांकन में प्रवृत्त होंगे ।

•विद्यार्थी फलक नोंध करेंगे और स्वाध्याय नोंघ करेंगे ।

Δ अध्यापन की प्रवृत्ति :

•शिक्षक फलक में बताई गई पंक्तियों (जो शैक्षणिक मु ो के कोलम में है वह छात्रों से पड़वायेंगे) पंक्तियों के आधार पर निम्न जैसे प्रश्न पूछकर एकम शिक्षा का प्रारंभ करेंगे।

•इन पंक्तियों में किस प्रदेश का वर्णन किया गया है ?

•राजस्थान की किन बातों पर हमें अधिक गर्व हैं ?

•राजस्थान के किस महापुरुष को यहाँ याद दिलाई गई है?

•पचिनियाँ के द्वारा किस प्रसंग की कवि हमें याद दिलाना चाहते हैं ?

•यहाँ वर्णित है इनके उपरान्त ओर कोई महापुरुष या चोरों के नाम आप में से कौन बता पाएगा ?

•आज हम राजस्थान की एक महान नारी के विषय में जानकारी प्राप्त करेंगे ।

•विद्यार्थियों को छपी हुई प्रतियाँ बाँटी जाएँगी और तत्पश्चात, शिक्षक पाठ का आदर्श वाचन करेंगे ।

•आदर्श वाचन के बाद निम्न जैसे प्रश्नों के द्वारा पाठ को विस्तृत चर्चा होगी ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

• राजस्थान की धरती की विशेषता क्या है ?

• किन किन महापुरुषों को लेखक यहाँ याद करते है?

•पन्ना कैसे घराने की स्त्री थी ?

• पन्ना को महाराणा ने क्या काम सौंपा था ?

•उदय किसके साथ खेलता था ?

• पन्ना की जगह ओर कोई स्त्री होती तो दोनों बच्चों के साथ व्यवहार में क्या अन्तर करती ?

• उसका असर उदय पर क्या पड़ता था ?

•बनवीर के हाथ में मेवाड़ की बागडौर कैसे आ गई ?

• उसने उदय के विषय में क्यों पूछताछ करवाई ?

• उदय के महल पर आधी रात को कौन आया होगा ?

• उसने संत्री से क्या कहा होगा ?

•अंगरक्षक और संत्री किसके आदमी होंगे ?

•पन्ना को किस षड्यंत्र का पता चला ?

•पन्ना ने उदय की रक्षा के लिए क्या योजना बनाई ?

• बनवीर क्यों आगबबूला हो गया ?

•पन्ना पलंग के पास क्यों जाने लगी ?

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

• वहाँ जाकर उसने क्या किया ?

•पन्ना का त्याग अपूर्व त्याग क्यों हैं ?

•शिक्षक बताई गई प्रत के अनुसार मूल्यांकन प्रवृत्ति करेंगे।

•शिक्षक स्वाध्याय की नोंघ करेंगे (फलक नोंध के अनुसार)

• राजस्थान की धरती की विशेषता क्या है ?

• किन किन महापुरुषों को लेखक यहाँ याद करते हैं?

•पन्ना कैसे घराने की खी थी ?

• पन्ना को महाराणा ने क्या काम सौंपा था ?

• उदय किसके साथ खेलता था ?

• पन्ना की जगह ओर कोई खी होती तो दोनों बच्चों के साथ व्यवहार में क्या अन्तर करती ?

• उसका असर उदय पर क्या पड़ता था ?

•बनवीर के हाथ में मेवाड़ की बागडौर कैसे आ गई ?

• उसने उदय के विषय में क्यों पूछताछ करवाई ?

• उदय के महल पर आधी रात को कौन आया होगा ?

• उसने संत्री से क्या कहा होगा ?

•अंगरक्षक और संत्री किसके आदमी होंगे ?

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

• पन्ना को किस षड्यंत्र का पता चला ?

• पन्ना ने उदय की रक्षा के लिए क्या योजना बनाई ?

• बनवीर क्यों आगबबूला हो गया ?

• पन्ना पलंग के पास क्यों जाने लगी ?

• वहाँ जाकर उसने क्या किया ?

• पन्ना का त्याग अपूर्व त्याग क्यों है ?

•शिक्षक बताई गई प्रत के अनुसार मूल्यांकन प्रवृत्ति करेंगे।

•शिक्षक स्वाध्याय की नोंघ करेंगे (फलक नोंध के अनुसार)

∆ शैक्षणिक साधन :

विशेष नोंध: (1) राजस्थान, मेवाड़ (2) वीरता (3) प्रताप (4) वीर भामाशा (5) वीरांगना लक्ष्मीबाई (6) पद्मिनी, जौहर, चितौड और अलाउ ीन ।

प्रतें बाँटना । आम परिवार की महान स्त्री, व्यवहार में फर्क बताती, अपनी संतान का पक्ष करती, अपनी संतान की कुरबानी के कारण महान हैं।

∆मूल्यांकन :

- सही कारण दो-जोड़ बनाओं-प्रसंगो को उचित कम दो।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

फलक नोंध

विषय : हिन्दी	विषयांग : राजभक्त पन्ना	दि. 20-6-2016
शब्द :	मुहावरें, कहावतें	पात्र
		पन्ना, उदय
		बप्पा, बनवीर
कर्मभूमि	पता चलना	**मेवाड** : राजस्थान का
सेवाशुश्रूषा	उछल पड़ना	एक विशेष भाग
आम घराना	पौ फटना	– राणा प्रताप
इकलौता	वार करना	– मीरां
तनिक	दंग रह जाना	– वीरांगना लक्ष्मीबाई
बागडौर	आगबबूला होना	– दानवीर भामाशा
धटिया	फूट फूट कर रोना	
अंगरक्षक		
संत्री		
गाथा		

स्वाध्याय

1.निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तर उत्तर दीजिए ।

(1) पाठ आयोजन का महत्त्व बताकर पाठ आयोजन के उ`श्य लिखिए।

(2) पाठ आयोजन तैयार करते समय किन बातों को ध्यान में रखेंगे ?

(3) पृथक् पाठ आयोजन और इकाई पाठ आयोजन में क्या अन्तर है ?

(4) इकाई योजना की संकल्पना एवं प्रक्रिया स्पष्ट कीजिए तथा निबंधरचना का इकाई नियोजन आप कैसे करेंगे ? सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

(5) पाठ आयोजन के सोपान लिखिए ।

(6) अच्छे प्रश्न के लक्षण सोदाहरण समझाइए ।

2.निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त में उत्तर दीजिए ।

(1) किसी मनपसंद इकाई का विषयाभिमुख का आयोजन कीजिए ।

(2) एकम पाठ आयोजन के लाभ बताइये ।

(3) किसी भी कक्षा के एकम की श्यामफलक नोंध कीजिए।

1.2 हिन्दी भाषा के विभिन्न स्वरूपों की शिक्षा : तास एवं इकाई आयोजन

1.गद्य शिक्षा

1.1 गद्य शिक्षण का महत्त्व

1.2 गद्य का अध्यापन

1.3 गद्य के विभिन्न रूपों का अध्यापन

1.4 अर्थबोध तथा विस्तृत व्याख्या

1.5 पाठ आयोजन

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

2 पद्य शिक्षा

2.1 कविता की शिक्षा का महत्त्व

2.2 कविता सिखाने की विविध विधियाँ

2.3 कविता का शिक्षक

2.4 कविता की विस्तृत व्याख्या

2.5 कविता सिखाने में ध्यान रखने योग्य बातें

2.6 कविता में अभिरुचि बढ़ाना

2.7 पाठ आयोजन

3. व्याकरण की शिक्षा

3.1 व्याकरण की शिक्षा का महत्त्व

3.2 व्याकरण सिखाने की पद्धतियाँ

3.3 व्याकरण के पाठ का क्रम

3.4 मातृभाषा तथा हिन्दी का व्याकरण

3.5 व्याकरण की शिक्षा के लिए उपयोगी सूचन

3.6 पाठ आयोजन

4. रचना शिक्षा

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

4.1 रचना की शिक्षा का महत्त्व

4.2 रचना के विविध प्रकार

4.3 स्वतंत्र रचना का अध्यापन

4.4 रचना लेखन का आयोजन

4.5 भूलसुधार

4.6 पाठ आयोजन

∆ स्वाध्याय

1. गद्य शिक्षा :

The purpose of intensive reading is to gain a style and a good command of the language.

1.1 गद्य शिक्षण का महत्त्व :

अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी की शिक्षा पाँचवीं कक्षा से शुरू की जाती है। इस कक्षा से विद्यार्थियों पर हिन्दी भाषा का अधिकाधिक संस्कार करना हर एक शिक्षक चाहता है। जिससे विद्यार्थी आसानी से और सहजता से उस भाषा को अपनाने लगे। ऐसे संस्कारों के लिए तथा भाषा सीखने में सहायता करने के लिए सूक्ष्म अध्ययन के लिए पाठयपुस्तक रखी जाती है। पाठयपुस्तक में अधिकतर गद्य पाठ होते हैं । पाठ्यपुस्तक में आये हुए प्रत्येक पाठ का गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया जाता है। इससे विद्यार्थी के शब्द-भंडार की वृद्धि होती है और पाठ में निहित सूक्ष्मातिसूक्ष्म भावों और विचारों को विद्यार्थी भलीभाँति समझ सकते हैं । शाब्दिक अर्थ के साथ साथ वाक्यों का भावार्थ भी वे समझते हैं । विद्यार्थियों को स्पष्ट रूप से सोचने, बोलने और लिखने की आदत पड़े इसलिए भी गद्यपाठ सिखाये जाते हैं। विचारों की स्पष्ट और सचोट अभिव्यक्ति आज के जमाने की मांग है। किसी भी व्यक्ति के द्वारा व्यक्त किये गये विचारों में पुनरावृत्ति, संदिग्धता तथा अतार्किकता न हो इसलिए भी गद्य की शिक्षा दी जाती है। वर्तमान समय में हमारा व्यवहार गद्य के माध्यम से चलता है। अतः गद्य के विविध स्वरूपों का, शैलियों का तथा अभिव्यक्तियों का पूर्ण परिचय मिले इसलिए भी गद्य की शिक्षा दी जाती है। अपने विचारों को या मन के

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

भावों को योग्य शब्दों के द्वारा दूसरे तक पहुँचने की शिक्षा गद्य पाठ के द्वारा ही दी जा सकती है। गद्य योग्य शब्दों का उत्तम कम विधान है और इसकी शिक्षा सूक्ष्म अध्ययन के गद्य पाठों के द्वारा ही दी जा सकती है। कम से कम शब्दों का उपयोग करते हुए नापतोलकर तथा बिना पुनरावृत्ति के अपने विचारों को व्यक्त करने वाले बहुत ही कम लोग पाये जाते हैं। हमारे विद्यार्थियों में इस प्रकार की शक्तियों का विकास हो इसलिए हम गद्य की शिक्षा देते हैं।

इसके अतिरिक विद्यार्थी अपनी आयु के योग्य लेख को अस्खलित, शुद्ध और स्पष्ट उच्चारण करते हुए पढ़ सकें इसकी शिक्षा भी हम गद्य के द्वारा दे सकते हैं। लेखक के द्वारा अभिव्यक्त किये गये विचारों तथा भावों को वह समझ सके और संदर्भ से अपरिचित परंतु सरल शब्दों तथा मुहावरों का अर्थ वह स्वयं समझ सके तथा विभिन्न वाक्यरचनाओं की सहायता से व्याकरण की प्रमुख बातों को भी वह गद्य पाठ के द्वारा जान सके इसलिए गद्य पाठ सिखाये जाते हैं ।

1.2 गद्य का अध्यापन :

भाषा शिक्षण के लिए सूक्ष्म पाठों की शिक्षा गंभीर अध्ययन के लिए होती हैं। गद्य का अध्यापन करने के विविध तरीके हैं। हम यहाँ उन विविध तरीकों का विवेचन करना चाहते हैं। एक बात यहाँ स्पष्ट कर देना जरूरी है कि गद्य शिक्षा की कोई ठोस विधि नहीं है और न हो भी सकती है। शिक्षा विधि शिक्षक की शक्ति और विद्यार्थियों की ताकत पर बदलती रहती है। अतः गद्य शिक्षा की विधि को किसी भी प्रकार के ठोस ढाँचे में ढालना घृष्टता का कार्य है। किसी भी पद्धति का अंधानुकरण करना योग्य नहीं है । लकीर के फकीर बन कर शिक्षक शिक्षणपद्धति को तथा विद्यार्थियों को, दोनों को नुकसान पहुँचाते हैं ।

*** हर्बार्ट की पंचपदी :**

किसी भी विषय को सिखाने का सामान्य कम यह है कि सीखनेवाले को यह बताया जाय कि वह क्या सीखने वाला है । बाद में सिखाने की सामग्री उसके सामने पेश की जाती है और अंत में सीखी हुई वस्तु का मूल्यांकन किया जाता है । हर्बार्ट ने इसी क्रम को मनोवैज्ञानिक आधार दे कर अपनी एक 'विधि' के नाम पर चला दिया । हर्बार्ट के शिष्यों ने हर्बार्ट की पद्धति की स्पष्टता करते हुए उसका परिमार्जित स्वरूप शिक्षा जगत के सामने रख दिया। हर्बार्ट की पंचपदी अंत में इस प्रकार बनी ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(अ) प्रस्तावना

(ब) हेतुकथन

(क) विस्तृत विवेचन या प्रस्तुतीकरण

(ड) पुनरावर्तन

(इ) स्वाध्याय ।

हर्बार्ट की यह पद्धति आगमन और निगमन विधियों का सामंजस्य करती है। इस कारण इस पंचपदी का प्रयोग प्रत्येक ऐसे पाठ में कि जिसमें ये दोनों विधियाँ अपनायी हैं-हो सकता है। ऐसे पाठों में जहाँ नियम, सिद्धांत आदि निकालना नहीं होता है परंतु जो पाठ रसात्मक अनुभूति के होते हैं तो इन पदों में आवश्यक संशोधन करके इनका उपयोग किया जाना चाहिए ।

(1) प्रस्तावना में विद्यार्थी के पूर्वज्ञान का संबंध नये ज्ञान के साथ जोड़ने का प्रयत्न किया जाता है ।

(2) हेतु कथन: इस पद में पाठ का उ`श स्पष्ट शब्दों में विद्यार्थियों के सामने रखा जाता है।

(3) विस्तृत विवेचन या प्रस्तुतीकरण : इस पद में विद्यार्थियों को नया ज्ञान दिया जाता है तथा नये ज्ञान का पुराने ज्ञान के साथ संबंध स्थापित करते हुए सामान्य निरूपण किया जाता है। साथ ही जो नया ज्ञान दिया जाता ह उसे विशिष्ट से अलग कर सामान्य रूप दिया जाता है। नये ज्ञान की विस्तृत व्याख्या तथा विश्लेषण इस पद में किये जाते हैं ।

(4) पुनरावर्तन: इस पद में पाठ की मुख्य बातें दुहरायी जाती हैं। शिक्षक यह देखने का प्रयत्न करता है कि नये ज्ञान को विद्यार्थियों ने किस हद तक प्राप्त किया है।

(5) स्वाध्याय-गृहकार्य : इस पद में जो सिद्धांत आदि विद्यार्थी ने ज्ञात कर लिये हैं उन्हें नये उदाहरणों में प्रयुक्त करते हैं तथा स्वप्रयत्न के द्वारा ज्ञात ज्ञान का उपयोग विद्यार्थी करते हैं ।

*** हेतुलक्षी शिक्षा :**

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED COLLEGE-RAJKOT

सामान्य या हर्बार्ट की पंचपदी के अनुसार पाठों का आयोजन किया जाता है और कई बार हर्बार्ट की पंचपदी का अंधानुकरण भी पाठों में आयोजन के बिना किया जाता है। हर्बार्ट की पंचपदी में अनेक अच्छाइयों के होने के बावजूद उसका अंधानुकरण नुकसानकारक है। इस पद्धति का उपयोग ज्ञान के पाठों में हो सकता है। शिक्षण में इस पद्धति से लचीलापन नष्ट हो जाता है। शिक्षक अधिक सक्रिय बनता है, परंतु विद्यार्थी निष्क्रिय रहते हैं। हर्बार्ट की पंचपदी में पाठयवस्तु की ओर अधिक झुकाव होता है तथा स्वशिक्षण के लिए ये पद प्रतिकूल है। इस पद्धति में किया को प्रधानता नहीं दी जाती है तथा इसका मनोवैज्ञानिक आधार भी दुषित है। फिर भी सौ में से निन्यानब्बे पाठ इस पंचपदी के आधार पर आयोजित होते हैं ।

हर्बार्ट की पंचपदी के दोषों को दूर करने के लिए पिछले पन्द्रह वर्षों से भारत में उ`शलक्षी शिक्षा का प्रचार शुरू हुआ है। इसके बारे में हमने विशदता से आगे के अध्याय में चर्चा की है। इस पद्धति के अभिगम (Approach) द्वारा शिक्षक को वह जो सिखाना चाहता है उसका स्पष्ट ख्याल देने का प्रयत्न किया जाता है। वर्ग में जाने से पहले वह क्या सिखाना चाहता है उसकी स्पष्टता शिक्षक के दिमाग में होती है। अपने उ`श के अनुसार शिक्षक सिखाने की पद्धति में आवश्यक परिवर्तन करता है। इस प्रकार इस पद्धति में अधिक लचीलापन होता है। विद्यार्थियों की कक्षा के अनुसार तथा पाठ के अनुसार शिक्षण की पद्धति में परिवर्तनशीलता रहती है। पाठ को सिखा लेने के बाद शिक्षक अपने निर्धारित उ`शों की प्राप्ति हुई है या नहीं उसकी जाँच करता है। इस प्रकार शिक्षक का अंतिम लक्ष्य विद्यार्थी के व्यवहार में निर्धारित परिवर्तन हुए हैं या नहीं इसका मूल्यांकन है। हर घंटे में विद्यार्थी के व्यवहार में निर्धारित परिवर्तन लाते हुए उसे पूर्ण नागरिक बनाने की ओर गतिमान किया जाता है। कई शिक्षक इस पद्धति में हर्बार्ट की पंचपदी का उपयोग करते हैं परंतु ऐसा करना अनिवार्य नहीं है। हम यों भी कह सकते हैं कि हेतुलक्षी शिक्षा में शिक्षक को पंचपदी के उतने सोपानों का उपयोग करना चाहिए जिनसे विद्यार्थियों के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन प्राप्त हों ।

∆निम्न कक्षाओं में गद्य की शिक्षा :

कक्षा - 5, 6 और 7 प्राथमिक शिक्षा के अंतिम तीन वर्ष हैं। दूसरें शब्दों में हाईस्कूल के 7 वर्षों के प्रथम तीन वर्ष ये हैं। इन प्रथम तीन वर्षों में विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा का व्यवहारोपयोगी ज्ञान देने का उ`श है। अतः इन कक्षाओं की पाठ्यपुस्तकों में विद्यार्थी के परिचित विषय तथा उसके चारों तरफ के वातावरण से संबंधित पाठ लिखे जाते हैं। निम्न कक्षाओं में विद्यार्थी के पास आधारभूत शब्दावली (Basic Hindi Vocabulary) हो ऐसी अपेक्षा रखी जाती है । साथ

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

ही वह शुद्ध उच्चारण कर सकें, साधारण विषयों पर बातचीत कर सकें तथा सरल वाक्यों में वह लिख सकें इस हेतु से पाठ तैयार किये जाते है। प्रारंभिक कक्षाओ में हिन्दी सिखाना एक पेचीदा काम है। चित्रों की सहायता से तथा अन्य शैक्षणिक साधनों की सहायता से तथा विद्यार्थियों की मातृभाषा की कुशलताओं की सहायता से प्रारंभिक पाठों को रोचक बनाना चाहिए । विद्यार्थी की शब्दावली में क्रमिक रूप से वृद्धि की जानी चाहिए और 'सरलता से जटिलता की ओर तथा ज्ञात. अज्ञात की और' के सूत्रानुसार पाठ सिखाने चाहिए । विद्यार्थी बोधपूर्वक पढ़ सकें, पाठ के विषय को अपने शब्दों में कर सकें पाठ के अंदर प्रयुक्त मुहावरें तथा विशिष्ट भाषा का उपयोग वह अपनी भाषा में कर सकें ऐसी क्षमता उसमें पैदा करनी चाहिए। विद्यार्थी को वाचन में आनंद मिले तथा साधारण वाक्यों को वह समझ सकें इस दृष्टि से पाठों की चर्चा करनी चाहिए ।

प्रारंभिक कक्षाओं में विद्यार्थी की मौखिक अभिव्यक्ति का विकास करने के लिए प्रयत्न करने चाहिए । भाषण के बाद वाचन सिखाना चाहिए और लेखन अंत में सिखाया जाना चाहिए। पाँचवीं कक्षा के प्रारंभिक दो महीनों तक तो सिर्फ मौखिक कार्य ही किया जाना चाहिए। हिन्दी भाषा तथा विद्यार्थी की मातृभाषा में कई समान शब्द है। उन शब्दों का उपयोग प्रारंभिक मौखिक कार्य में करना चाहिए। प्रारंभिक मौखिक कार्य के लिए उपयोगी वाक्यों के साँचे या ढाँचे (Structures) तैयार किये जा सकते हैं। इन साँचों पर आधारित विविध वाक्य बनाकर विद्यार्थियों को बोलने का बार बार अभ्यास देना चाहिए । बाद में कमिक रूप से विद्यार्थियों की शब्दावली में वृद्धि हो ऐसे पाठ सिखाने चाहिए। निम्न कक्षाओं में व्याकरण की कोई अलग किताब नहीं रखी जाती है, परंतु पाठयपुस्तक से उत्पन्न होने वाला व्याकरण सिखाया जाता है। कई शिक्षक विद्यार्थियों को व्याकरण नहीं सिखाते हैं । इससे भाषा में सही क्या है और गलत क्या है इसका
पता विद्यार्थियों को नहीं होता है । व्यावहारिक व्याकरण की कमिक रूप से शिक्षा गद्य के साथ देनी चाहिए ।

∆उच्च कक्षाओं में गद्य की शिक्षा :

उच्च कक्षाओं में हिन्दी की पाठ्यपुस्तकों में विविध प्रकार की गद्य रचनाएँ संगृहीत की जाती हैं। गद्य शिक्षा में अर्थग्रहण और लेखक के हेतु की समझ दोनों महत्त्व रखते हैं । इसलिए अनुकूल वातावरण या भूमिका का सर्जन करना आवश्यक है। गद्य की विषयवस्तु से संबंधित अन्य वस्तु को, बातचीत की योजना, प्रस्तावना के लिए की जा सकती है । गद्यखंड अगर किसी उपन्यास या नाटक का अंश हो तो उसकी पूर्वकथा थोड़े शब्दों में बताकर विद्यार्थियों को पाठ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। पूर्वकथा बता देने से योग्य वातावरण उत्पन्न

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

होगा, विद्यार्थियों का रस जागृत होगा और शिक्षा प्रेरणाजन्य होगी। शिक्षक पाठ का 'आरंभ या पूर्वतैयारी के लिए, विद्यार्थियों के द्वारा प्राप्त ज्ञान का नये ज्ञान के साथ संबंध जोड़ने के लिए विभिन्न तरीकों को आजमा सकता है ।

गद्यपाठ में लेखक का मुख्य हेतु या लेखक द्वारा पेश किया गया विचार विद्यार्थियों को समझाने का कार्य शिक्षक का कर्तव्य है । साथ ही गद्य की सहायता से भाषा के विभिन्न तत्त्व सिखाना भी एक महत्त्वपूर्ण उ`श है । गद्य पाठ सिखाते समय हर्बार्ट की पंचपदी का उपयोग किया जाता है। उ`शलक्षी शिक्षा की दृष्टि से भी पाठों का आयोजन किया जाता है। इस प्रकार की विविध पद्धतियों के सोपानों का उपयोग तालीम के प्रारंभ में शिक्षक करे यह ठीक है । परंतु एक बार पद्धति का अर्थ और उसका रहस्य भलीभाँति समझ लेने के बाद शिक्षक को ईस प्रकार के निश्चित खाके से बाहर निकलने की कोशिश करनी चाहिए और गद्यपाठों के उ`शों के अनुरूप अध्यापन पद्धतियों का निर्माण स्वयं करना चाहिए । शिक्षक को स्वयं अपने मन में प्रश्न पूछना चाहिए "मैंने गद्यपाठ के अमुक उ`श निश्चित किये हैं ? मुझे इस पाठ को किस तरह से सिखाना चाहिए कि जिससे निश्चित उ`शों की प्राप्ति विद्यार्थियों में की जा सकें ?"

1.3 गद्य के विविध रूपों का अध्यापन :

हिन्दी भाषा की शिक्षा के लिए माध्यमिक शालाओं में हम पाठयपुस्तक को आधार मानकर चलते हैं, परंतु हमें यह सदैव ख्याल रखना चाहिए कि पाठ्यपुस्तक भाषा की शिक्षा के लिए एक उपयोगी साधन है, साध्य नहीं । हमारा साध्य है भाषाओं की कुशलताओं की प्राप्ति । अतः जो शिक्षक पाठयपुस्तक में दिये गये सभी पाठों को सिखाकर अभ्यासक्रम पूरा किया ऐसा संतोष मानते हैं वे भ्रम में है। निश्चित उ शों की प्राप्ति के द्वारा विद्यार्थी के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन कहाँ
तक संभव हुआ है उसे ख्याल में रखना अत्यंत जरूरी है। हमारी उच्च कक्षा की पाठ्यपुस्तकों में निम्नलिखित प्रकार के गद्यपाठ पाये जाते हैं। इन विविध प्रकार के गद्य के स्वरूपों का अध्यापन करने की सामान्य विधि निश्चित की जा सकती है। फिर भी गद्य स्वरूप के साथ साथ उसकी शिक्षा पद्धति में भी थोड़ा परिवर्तन अवश्य होगा । गद्य के स्वरूपों को देख लेने के बाद हम अध्यापन विधि की चर्चा करेंगे। गद्य के स्वरूप इस प्रकार हैं :

(1) सरल परिच्छेद

(2) छोटे संवाद या बातचीत

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(3) वर्णनात्मक पाठ

(4) कहानी

(5) निबंध

(6) एकांकी नाटक

(7) नाटयखंड

(8) उपन्यासखंड

(9) यात्रावर्णन

(10) आत्मकथा या जीवनी

(11) अनुवाद

(12) भाषण

(13) डायरी का पन्ना

(14) पत्र

ऊपर बताये गये गद्य के विविध स्वरूपों का अध्यापन करने का अपना-अपना अलग ढंग होगा फिर भी उनमें थोड़ी बातें सामान्य होगीं। आगे के पृष्ठों में उ`शलक्षी शिक्षा तथा हार्ट की पंचपदी के अनुसार पाठों का आयोजन करने के तरीकों की चर्चा हमने की है। पाठ्यवस्तु के बनिस्बत भाषाकीय उ`श महत्त्वपूर्ण है इस बात को हमें सदैव ख्याल में रखना चाहिए और सिखाते समय पाठ का विषय या वस्तु उ`श न बन जाय इस विषय में हमें सतर्क रहना चाहिए। सरल परिच्छेद जैसे घर, पाठशाला, बगीचा, डाकघर, पालतू जानवर, सब्जीमंडी, कोई खेल इन सब को प्रत्यक्ष पद्धति के द्वारा अच्छी तरह सिखाया जा सकता है। सरल प्रकार की वाक्य रचनाओं को सिखाने के साथ साथ विद्यार्थियों को विषयसंबंधी नये शब्दों से तथा भाषा की विशेषताओं से परिचित कराना चाहिए और इस प्रकार विद्यार्थियों के

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

भाषाज्ञान के विकास में सहायक होना चाहिए। छोटे संवाद या वातचीत के पाठों के आयोजन में अनौपचारिक बातचीत के द्वारा विद्यार्थियों को आहिस्ता आहिस्ता विषय की ओर आकर्षित किया जाय और विद्यार्थियों की सहायता से विषय के बारे में बातचीत हो। आवश्यकता पड़ने पर शिक्षक नये शब्द या नये वाक्य विद्यार्थियों की सहायता के लिए बीच बीच में रखता जाय और उनको श्यामपट्ट पर भी लिखें और अंत में पाठ्यपुस्तक से, विषय से संबंधित पाठ का वाचन विद्यार्थियों से करवाया जा सकता है।

एकांकी नाटक या नाटयखंड का अध्यापन करते समय विद्यार्थी की मौखिक अभिव्यक्ति के विकास में वृद्धि करने के अनेक अवसर दिये जा सकते हैं। एकांकी या नाटयखंड के पात्रों का अभिनय विद्यार्थी कक्षा के समुख कर सकें इसलिए उनको पात्र दिये जा सकते हैं। विद्यार्थी अपना पाठ जबानी कर लेगा और कक्षा के समक्ष भावपूर्वक अभिनय करेगा। कठिन शब्द और वाक्यरचनाओं का अर्थ शिक्षक आवश्यकता पडने पर समझा दे यह जरूरी है। ऐसे अंशों को स्कूल के सभी विद्यार्थियों के सामने खेला जाय तो अच्छा होगा। इससे विद्यार्थियों की आत्मस्थापन की वृत्ति को शैक्षणिक पोषण मिलेगा। सपर्धा के द्वारा विद्यार्थियों में शुद्ध उच्चारण तथा भावपूर्वक भाषण का आग्रह भी रखा जा सकता है। आकाशवाणी द्वारा प्रसारित सुंदर नाटयखंडो के श्रवण के द्वारा विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जा सकता है।

कहानी, उपन्यासखंड, आत्मकथा, भाषण, डायरी का पन्ना आदि का अध्यापन करते समय विद्यार्थियों की रुचि का हमें ख्याल करना होगा । विद्यार्थियों को ऐसे पाठ अधिक पसंद आते है। वे ऐसे पाठों पर सब से पहले झपट पड़ते हैं। विद्यार्थियों की कथासाहित्य में जो रुचि होती है उसका उपयोग हमें भाषा की शिक्षा में करना चाहिए। इन से विद्यार्थियों का सामान्य ज्ञान बढ़ता है, वक्तृत्व कला का विकास होता है और लेखन का अभ्यास भी करवाया जा सकता है। इन पाठों का अध्यापन करने मे पूर्व शिक्षक को तय करना होगा कि वह किस ढंग से पाठ पढ़ाना चाहता है। पाठ के स्वरूप के अनुसार आवश्यक तैयारी भी शिक्षक को कर लेनी चाहिए । निम्न कक्षाओं में चित्रों का उपयोग उपकारक होगा। कई बार शिक्षक विद्यार्थियों को कथन के द्वारा कहानी सुना सकता है। अध्यापक को सुन्दर ढंग से कहानी सुनानी चाहिए। सुंदर ढंग से कहानी सुनाने पर पाठ की आधी सफलता निर्भर है। श्रवण से विद्यार्थियों को फायदा होता है। अंत में विद्यार्थियों से कहानी कथन भी करवाया जा सकता है जो विद्यार्थी कक्षा में कहानी सुना सकते हैं वे अपने विचार करने में भी काफी सफलता प्राप्त करते हैं ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

जब किसी उपन्यास का खंड या भाषण या आत्मकथा का अंश या डायरी का पन्ना सिखाया जाता हो तब पूर्वकथा या माहिती से विद्यार्थियों को परिचित कराना चाहिए। पात्र या प्रसंगों की चर्चा भी पहले से कर लेनी चाहिए। बाद में इनका अध्यापन सामान्य गद्यखंडों के रूप में किया जा सकता है ।

पाठ्यपुस्तकों में वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, विवरणात्मक तथा कथनात्मक निबंधों का स्थान होता है। इस प्रकार के निबंधों के द्वारा विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में अपने विचारों की अभिव्यक्ति की तालीम देने का आशय होता है। ऐसे पाठों को सिखाते समय ज्ञानार्जन के उ`श की अपेक्षा भाषा के तत्त्व सिखाने की ओर हमें अधिक ध्यान देना चाहिए। इसका मतलब यह नहीं है कि नये विचार पढ़ाये ही न जाय। परंतु पहले विद्यार्थी भाषा में अपनी योग्यता बढ़ा ले और एक बात को भिन्न-भिन्न ढंग से कहने की क्षमता प्राप्त कर ले इसके बाद विचार की शिक्षा हम दे सकते हैं। निबंधों के द्वारा विद्यार्थियों को गद्य की विभिन्न शैलियों का भी परिचय दिया जा सकता है। विद्यार्थियों को नये शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करने का अधिक अवसर दिया जाना चाहिए। विशिष्ठ वाक्यप्रयोग तथा सरल वाक्यरचनाओं के उपयोग के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करना चाहिए। ऐसे निबंधों का विद्यार्थी जितनी अधिक सूक्ष्मता से अध्ययन करेंगे उतना ही उन्हें फायदा होगा ।

उपरोक्त सभी प्रकार के गद्यपाठों को सिखाते समय निम्नलिखित पद्धति के अनुसार शिक्षा दी जा सकती है। आवश्यकता, पाठ की वस्तु, विद्यार्थियों की कक्षा तथा अपनी शक्ति के अनुसार आवश्यक परिवर्तन शिक्षक करे वह इच्छनीय हैं ।

(1) गद्यखंडों के अनुरूप बातचीत, प्रश्न, काव्यपंक्ति, वाक्य या प्रसंग के वर्णन के द्वारा विद्यार्थियों को पाठ सिखाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए ।

(2) शिक्षक जो गद्यपाठ सिखाना चाहता है उसका शीर्षक, आगे बतायी गयी बातचीत से संबंध जोडते हुए कहे तथा उसे श्यामपट्ट पर लिखे ।

(3) शिक्षक गद्यपाठ का सस्वर भाववाही आदर्श वाचन करे । विद्यार्थी अपनी पुस्तक से मौन वाचन करते हुए पाठ का अर्थग्रहण करें ।

(4) विद्यार्थी पाठ का भाव तथा अर्थ समझने के लिए मौन वाचन करें । मौन वाचन करते समय पाठ का मुख्य विचार, प्रसंग या भाषाकीय कोई तत्त्व जिसकी ओर विद्यार्थियों का ध्यान केन्द्रित हो और विद्यार्थियों को

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

हेतुपूर्वक वाचन करना पड़े ऐसे कोई हेतु प्रश्न या मु ा या भाषाकीय कोई बात को श्यामपट्ट पर लिख देना चाहिए। विद्यार्थी जब शांत वाचन करते हों उस समय शिक्षक वर्ग में घूमता रहे और विद्यार्थियों की व्यक्तिगत समस्याओं का स्पष्टीकरण करता रहें । जो समस्याएँ वर्ग के अधिकांश विद्यार्थियों की हों उनका ख्याल रखकर, पाठ की विस्तृत व्याख्या करने समय उनका स्पष्टीकरण करें। शिक्षक को खुद को मौन वाचन करते समय जितना समय लगता हो इससे डेढ़गुना समय विद्यार्थियों को देना चाहिए । निम्न कक्षाओं में मौन वाचन के स्थान पर समूह वाचन का अभ्यास कराया जा सकता है ।

(5) हेतुप्रश्नों के उत्तर विद्यार्थी दें इसके बाद शिक्षक समग्र पाठ की विस्तृत व्याख्या शुरू कर सकता है। अगर पाठ अधिक लंबा हो तो उसे एक से अधिक अन्वितियों में विभाजित कर लेना चाहिए और पाठ की हर एक अन्विती को अलग-अलग लेकर चर्चा करनी चाहिए । विस्तृत व्याख्या करते समय पाठ के उ`श, विद्यार्थी की मानसिक कक्षा, पाठ से संबंधित विद्यार्थियों का पूर्व ज्ञान, उनका शब्दभंडार और समयमर्यादा को ख्याल में रखना चाहिए । विस्तृत व्याख्या करते समय विद्यार्थी खुद किया करें ऐसी शैक्षणिक परिस्थिति पैदा करनी चाहिए। वर्ग के अधिक से अधिक विद्यार्थी प्रवृत्ति में भाग लें ऐसी परिस्थिति का निर्माण करना चाहिए । शिक्षक सिर्फ प्रश्न पूछे यह काफी नहीं है। भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रवृत्तियों का आयोजन पहले से कर लेना चाहिए ।

(6) उच्च कक्षाओं में अर्थग्रहण तथा भावों की स्पष्टता के साथ हो साथ लेखक की शैली, विशिष्ट वाक्यरचनाएँ, मुहावरें आदि की चर्चा की जा सकती है। यह चर्चा इस ढंग से की जाय कि विद्यार्थी लेखक की अन्य कृतियाँ पढ़ने के लिए लालायित हों।

(7) पाठ का पुनरावर्तन, संकलन या मूल्यांकन कर लेने के बाद विद्यार्थियों को आदर्श सस्वर वाचन भी करवाया जा सकता है। विद्यार्थियों ने पाठ को समझा है या नहीं इसका मूल्यांकन विद्यार्थियों के वाचन से किया जा सकता है ।

(8) गद्यपाठ की समाप्ति के बाद विद्यार्थी स्वप्रयत्न से पाठ से संबंधित कोई कार्य करें इसलिए स्वाध्याय दिया जाना चाहिए। स्वाध्याय में पाठ से अन्य विषयों का अनुबंध भी किया जा सकता है। स्वाध्याय के परिणाम स्वरूप कोई फलदायी प्रवृत्ति करें तभी वह सार्थक होगा ।

1.4 अर्थबोध तथा विस्तृत व्याख्या :

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

शिक्षक के आदर्श वाचन के बाद तथा विद्यार्थी के मौन वाचन के बाद शिक्षक पाठ की विस्तृत व्याख्या करते हैं। कठिन शब्दों, मुहावरें, कहावतें, काव्यखंड, वाक्य, कठिन स्थल, या विचार, अन्य संदर्भ आदि की विस्तृत व्याख्या इस पद पर जाती है। हम जिस पाठ को विद्यार्थियों को भलीभांति समझाना चाहते है उसका विद्यार्थी पूरा पूरा लाभ उठा सकें इसलिए इनकी चर्चा जरूरी है। हर एक पाठ में सभी बातों की चर्चा की आवश्यकता नहीं है। उ`श के अनुसार चर्चा में परिवर्तन होता रहेगा। निम्नलिखित बातों को विस्तृत व्याख्या की जाती हैं :

(1) शब्दों की व्याख्या या अर्थबोध

(2) मुहावरें, लोकोक्तियों की व्याख्या

(3) वाक्यों को व्याख्या ।

*** अर्थबोध :**

व्याकरण अनुवाद प्रणाली को अपनाकर पढ़ाने वाले अध्यापक आमतौर पर विद्यार्थियों के सामने हिन्दी भाषा के शब्दों का अर्थ प्रादेशिक भाषा में देते हैं। विद्यार्थी उन्हें रटते हैं और जबानी याद करने का प्रयत्न करते हैं। यह कार्य को कटु से कटु आलोचना करते हैं। नयी प्रणाली के निर्माताओं ने इस प्रणाली का यह दोष बताया है कि विचार और अभिव्यक्ति में यहाँ प्रादेशिक भाषा माध्यम होती है, उनमें सीधा संबंध स्थापित नहीं होता है। प्रत्यक्ष विधि से नवीन शब्द सिखाने से ऐसी परिस्थिति पैदा नहीं होती है। नये शब्द जो विद्यार्थियों को सिखाये जाय उनके दो प्रकार होते हैं (1) सक्रिय शब्दावली (Active Vocabulary), (2) निष्क्रिय शब्दावली (Passive Vocabulary) । जिन शब्दों का विद्यार्थी बातचीत में तथा लेखन में बार बार उपयोग करते हैं वे शब्द सक्रिय शब्दावली के अंग बन जाते हैं। ऐसे शब्द विद्यार्थियों के प्रयोगक्षेत्र के भीतर आते हैं इसलिए ऐसे शब्द को भली भाँति समझाना चाहिए, उनका वाक्यों में प्रयोग करवाना चाहिए और विद्यार्थियों से उनको याद रखवाना चाहिए। इन शब्दों को रटने से काम नहीं चलेगा। अवसर मिलने पर इन शब्दों का बार बार अभ्यास कराना चाहिए ।

निष्क्रिय शब्दावली में वे शब्द आते हैं जिनका अर्थ विद्यार्थी समझ पाते हैं, परंतु सक्रिय रूप से उनका उपयोग अपनी स्वतंत्र रचनाओं में नहीं कर पाते हैं। ऐसे शब्द वाचन में ही काम आते हैं। उच्चस्तर के ऐसे कठिन शब्दों का विद्यार्थी अर्थ समझ लें (comprehension) यह काफी है। अहिन्दी भाषी प्रदेश के विद्यार्थियों के शब्दभंडार में इन शब्दों की वृद्धि होती रहनी चाहिए ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

नये शब्दों के अर्थ सिखाने के निम्नलिखित विभिन्न तरीके हैं। संस्कृत भाषा में नये शब्दों को सिखाने के लिए सिद्धांत मुक्तावली में इस प्रकार का श्लोक है ।

शक्तिग्रहं व्याकरणोपमान
कोशाप्तवाक्याद व्यवहारतश्च ।
वाक्यस्य शेषाद विवृतेर्व
सान्निध्यतः सिद्धपदस्य वृद्धांः ॥

(1) तत्सम् शब्दों के पर्याय देकर

(2) तद्भव शब्दों के पर्याय देकर

(3) विरुद्ध शब्द देकर

(4) पूर्वापर संबंध का निर्देश करके

(5) वाक्य में प्रयुक्त करके

(6) अभिनय चेष्टा या हावभाव के द्वारा

(7) शब्दों का पृथक्करण करके

(8) आकृति या चित्र के द्वारा

(9) शब्दकोश के उपयोग के द्वारा ।

(1) शब्दों के अर्थ पाठ के परिच्छेद में रहे हुए संदर्भ के प्रकाश में ही समझाना चाहिए। जहाँ तक हो सके शब्द का अर्थ भिन्न भिन्न वाक्य में प्रयोग करके समझाने का आग्रह रखना चाहिए। उदाहरण के तौर पर पाठ के एक वाक्य में इस प्रकार की पंक्ति हैं : 'माँझी पाल उड़ाता हुआ अपना बेड़ा पतवारों के जोर से खे रहा है।' 'यहाँ पर 'पाल', 'बेडा ' और 'पतवार' तीन शब्द नये हैं और साथ ही साथ विद्यार्थियों के अनुभव के बाहर के हैं। कुशल अध्यापक पाठ के विचारों

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

के सामान्य तंतु को काटे बिना चित्र, आकृति या मोडेल के द्वारा अर्थ समझा देता है और निम्नलिखित जैसे कमबद्ध वाक्यों में उनका उपयोग करवाता है।

(1) माँझो नाव चलाता है ।

(2) माँझो पाल उड़ाता हुआ नाव चलाता है।

(3) माँझो का बेड़ा पतवारों से चलता है।

ऐसे मौके पर ऐसा सीधा प्रश्न कभी भी नहीं पूछना चाहिए कि 'बेड़ा' का क्या अर्थ है ?

(2) भाववाचकों और क्लिष्ट शब्दों के अर्थ समझाने के लिए उदाहरणों से काम लेना चाहिए । ऐसा करते समय जो उदाहरण प्रस्तुत किया जाय उस पर घोड़े प्रश्नोत्तर करके उदाहरण के भाव को स्पष्ट कर लेना चाहिए और बाद में जो कठिन शब्द हैं उनको उसमें रख देना चाहिए। इस पद्धति में विद्यार्थी की कल्पना या सामान्य अनुभव ज्ञान का लाभ उठाकर कठिन शब्द का अर्थ समझाया जाता है।

उदाहरण के तौर पर 'असमंजस' (यह अवस्था जिसमें मनुष्य निश्चित न कर सकें) शब्द का अर्थ ऐसे उदाहरणों से स्पष्ट होगा। "देखते देखते पवन जोरों से चलने लगा। चारों ओर धूल उड़ने लगी । आंखे खुली रखना भी कठिन हो गया। हम इस समय बड़े असमंजस में पड़ गये ।

ऐसे ही भाववाचक और क्लिष्ट-अमूर्त विचारों को समझाने के लिए पौराणिक बातें, घटनाएँ और उदाहरणों के द्वारा सफलता से काम लिया जा सकता है ।

(3) कई शब्द ऐसे होते हैं जिनको ठोस जानकारी देकर समझाना पड़ता है। जैसेः ममी, पिरामिड़, अचार, काँजीहौस, लालटेन, आदि। ऐसे शब्दों को समझाने के लिए शब्दों के उपयोग, स्थान, कार्य आदि के बारे में माहिती देनी चाहिए ।

(4) मुहावरों और कहावतों को समझाने के लिए उन्हें वाक्य में प्रयोग करके ही समझाना चाहिए । जैसे मरम्मत करना-चोर पकडा गया और लोगों ने मिलकर उसकी ठीक-ठीक मरम्मत की । कानाफूसी करना-समझाने के लिए लोग रमेश के बारे में कानाफूसी करते थे पर उसके पिता से कहने के लिए डर रहे थे।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(5) कई शब्द ऐसे होते हैं जिनका अर्थ शिक्षक के द्वारा अभिनय करने से शीघ्र ही स्पष्ट हो जाता है। जैसे (चुटकी बजाकर) चुटकी बजाना, भौंहे तानना (भौंहे तान कर) आदि ।

(6) प्रत्यक्ष वस्तु दिखाकर भी उस वस्तु का नाम बताने वाला शब्द सिखाया जा सकता है।

(7) विरुद्ध अर्थ देकर के भी अर्थ स्पष्ट किया जा सकता है। विरुद्ध अर्थ वाले शब्द परिचित होने चाहिए । उदाहरण के तौर पर 'बासी' सिखाने के लिये 'ताजा' शब्द दिया जाय ।

(8) व्युत्पत्ति के द्वारा भी नये शब्द सिखाये जा सकते हैं। उदाहरण के तौर पर 'श्रमजीवी' श्रम पर जीने वाला, 'विद्यार्थी' विद्या चाहने वाला ।

(9) शब्दों का खंड करके भी नये शब्द सिखाये जा सकते हैं : (अ) सामासिक शब्दों के समासों का विच्छेद करके; (आ) सन्धि का विच्छेद करके ।

(10) परिभाषा द्वारा नये शब्दों के अर्थ सिखाये जा सकते हैं। शब्द या मुहावरे का अर्थ आसान हिन्दी भाषा में देकर ।

(11) प्रसंग या प्रयोग के द्वारा नये शब्दों के अर्थ स्पष्ट किये जा सकते हैं ।

(12) कुछ कठिन शब्दों का पर्यायवाची (Synonym) शब्द देकर अर्थ देना । जैसे चारू सुंदर, मेंढक (मातृभाषा का शब्द 'हेऽओ' आदि, उल्लु - धु१३ आदि ।)

(13) अर्थ का विस्तार करके कुछ शब्दों के अर्थ स्पष्ट किये जाते हैं। जैसे : गमान का कुत्ता वह कुत्ता जो गमान में बैठा है। यह सामान्य अर्थ है पर इसका लक्ष्य अर्थ वही कुत्ता जो गमान में बैठा रहता है, न स्वयं खाता है न किसी को खाने देता है ।

(14) तुलना द्वारा भी कठिन शब्दों के अर्थ स्पष्ट किये जाते हैं। जैसे : शस्त्र' हाथों के द्वारा जिसको चलाया जाता है ऐसा हथियार ।

(15) एक ही प्रकार के अर्थ वाले अलग अलग शब्दों का एक ही साथ उपयोग करके नये शब्द सिखाये जाते हैं। जैसे चक्षु, ईक्षु, नयन, नेत्र, आँखें, आदि ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(16) ऐसे शब्द जिनका उपयोग भिन्न भिन्न अर्थोंवाले वाक्यों में करने से भिन्न भिन्न अर्थ होते हैं। उनके सिखाना । जैसे 'विधि' ।

(1) पाठ पढ़ने की यह विधि उत्तम है ।

(2) विधि ने जो चाहा वह हुआ ।

(17) उपसर्ग और प्रत्यय से बने शब्दों को समझाने के लिए उपसर्ग और प्रत्यय अलग करके समझाया जाना चाहिए ।

(18) कठिन शब्द-पद या वाक्य में रहे हुए लाक्षणिक अर्थ को स्पष्ट करना । जैसे, 'एडी का पसीना चोटी तक लाना' इस वाक्य का लक्ष्य अर्थ सख्त परिश्रम करना है न कि एडी का पसीना शीर्षाशन के द्वारा चोटी तक पहुँचाना। ऐसे अनेक लाक्षणिक अर्थ साहित्य में प्रयुक्त होते हैं। पाठ में जहाँ कहीं आ जाय वहाँ ऐसे लाक्षणिक अर्थ को स्पष्ट कर देना चाहिए । रूढ़ोक्ति, लोकोक्ति, सूक्ति या शक्ति को इसी प्रकार समझना चाहिए ।

(19) लम्बे वाक्यविधान को जटिल विचार रखने वाले वाक्यों को सरल भाषा के द्वारा व्याख्यात्मक ढंग से समझाना चाहिए ।

1.5 पाठ आयोजन :

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

1.5 पाठ आयोजन :

गद्य पाठ आयोजन

प्रशिक्षणार्थी का नाम : .....
स्कूल का नाम : .....
दिनांक : ..... कक्षा : 9 तास : ..... समय : .....
विषय : हिन्दी विषयांग : 'बापू के संस्मरण'
पद्धति (1) ..... ☐ पद्धति (2) ..... ☐

सामान्य उद्देश्य

- छात्रों को पाठगत भावों एवम् चरित्रों द्वारा चरित्र निर्माण में सहायता करना।
- छात्रों में मानवप्रेम और सद्वृत्तियों का विकास करना ।
- छात्रों की मानसिक एवम् तार्किक शक्तियों का विकास करना ।
- छात्रों के नवीन शब्द, मुहावरें इत्यादि के ज्ञान में वृद्धि करना।
- छात्र गद्य का सस्वर उचित ढ़ंग से करना सीखें ।

विशिष्ट उद्देश्य

- छात्र 'बापू के संस्मरण' गद्य की जानकारी प्राप्त करें ।
- छात्र बापू की सीख को समझें ।
- छात्र 'बापू के संस्मरण' गद्य के मुहावरें और अपरिचित शब्दों को समझें।
- छात्र गद्य का सस्वर और आदर्श पठन करें ।

विषयवस्तु	उपकरण	अध्यापन पद्धतियाँ	संदर्भ
• बापू की बिहार यात्रा • मनुबहन द्वारा यात्रा-सहाय • हिंसा का अर्थ	• महापुरुषों की तस्वीरों वाला चार्ट • महात्माजी की तस्वीर • Tape-Recorder	• निदर्शन • कथन-चर्चा • प्रश्नोत्तर	• 'सत्य के प्रयोग' आत्मकथा - गांधीजी • साबरमती के संत • तूने.... (कैसेट Audio)

पाठ प्रवेश

शिक्षक व्यवस्था देखकर Tape Recorder पर साबरमती के संत "तूने कर दिया कमाल" कैसेट छात्रों को सुनाएगा बाद में नीचे दिए गये प्रश्न पूछकर पाठ प्रवेश करेगा ।

प्रश्न : (1) साबरमती नदी गुजरात के किस बडे शहर में है ?
(2) साबरमती आश्रम किसने बनवाया ?
(3) साबरमती के संत का अर्थ बताईए ।
(4) गांधीजी को राष्ट्रपिता क्यों कहते हैं ?

COLLEGE-RAJKOT

विषयवस्तु	शिक्षक की प्रवृत्ति	छात्र की प्रवृत्ति
• मार्च 1947 में बापू बिहार में ।	• शिक्षक छात्रों के सामने भारत के महापुरुषों का चार्ट रखेगा और उनकी पहचान छात्रों द्वारा करवाएगा ।	• छात्र चार्ट का निरीक्षण करके महापुरुषों के नाम बताएँगे ।
• बापू को वाईसराय द्वारा बुलवाना ।	• शिक्षक छात्रों के सामने बापू की तस्वीर दिखायेगा ।	• छात्र महात्मा गांधी की तस्वीर पहचान कर बताएँगे ।
• मनुबहन द्वारा बापू के लिए रेलयात्रा की व्यवस्था ।	• गद्य 'बापू के संस्मरण' का उचित ढंग से सस्वर पठन कक्षा के सामने करेगा ।	• छात्र शिक्षक का सस्वर वाचन सुनते हैं ।
• मनुबहन द्वारा दो भागवाला रेल डिब्बा बापू के लिए बुक करवाना ।	• शिक्षक छात्रों से गद्य का मौन वाचन करवाएगा ।	• छात्र गद्य का मौन वाचन करते हैं ।
• मनुबहन की व्यवस्था की बापू द्वारा निंदा ।	• महात्मा गांधीजी के बारे में कक्षा में चर्चा करेंगे ।	• छात्र चर्चा में योगदान करते हैं ।
	• शिक्षक नीचे दिए गए प्रश्नों को पूछकर छात्रों की मौखिक अभिव्यक्ति का विकास करता है ।	• छात्र शिक्षक के प्रश्नों के उत्तर देते हैं ।
• बापू की स्टेशन मास्टर के साथ चर्चा ।	• संस्मरण का अर्थ बताईए ।	
	• 1947 मार्च में बापू किस राज्य में काम करते थे ?	

COLLEGE-RAJKOT

विषयवस्तु	शिक्षक की प्रवृत्ति	छात्र की प्रवृत्ति
• मनुबहन द्वारा दूसरी केबिन खाली करा देना ।	• बापू को किसने बुलाया ? • बापूने हवाईजहाज से यात्रा क्यों नहीं की ? • बापू की रेलयात्रा की व्यवस्था किसने की ? • मनुबहन ने दो भाग वाला रेल डिब्बा क्यों पसंद किया ?	
• लोगों के प्रति बापू का प्रेम हिंसा के बारे में बापू के विचार	• बापू ने स्टेशन मास्टर से क्या कहा ? • मनुबहन ने बापू का सामान क्यों हटा दिया ?	• छात्र श्यामपट्ट कार्य अपनी कापी में लिखते हैं ।
• बापू द्वारा दी गई सीख ।	• बापू हिंसा किसे मानते हैं ? • इस गद्य से क्या सीख मिलती है । • शिक्षक श्यामपट्ट पर मुहावरों का अर्थ अपरिचित शब्द लिखते हैं । • शिक्षक गद्य के महत्त्वपूर्ण अंश भी श्यामपट्ट पर लिखते हैं । • शिक्षक छात्रों से गद्य का सस्वर पठन करवाता है ।	• छात्र गद्य का सस्वर पठन करते हैं । • छात्र मुहावरों के अर्थ बताते हैं ।

LLEGE-RAJKOT

मूल्यांकन
प्रश्न-1. नीचे दिए गए वाक्य कौन बोलता है ? बताईए । (1) "उधर खाना तैयार कर रही थी ।" (2) "यह लडकी मेरी पोती है ।" (3) "मैं उनके लिए दूसरा डिब्बा लगवाए देता हूँ ।" प्रश्न-2. नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर एक वाक्य में दो । (1) बापू किस चीज को हिंसा मानते हैं ? (2) मनुबहन कौन थी ? (3) बापू अंधा प्रेम किसे कहते हैं ?
स्वाध्याय
• राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी का जीवन परिचय लिखें ।

*** उपसंहार :**

आमतौर पर शिक्षक गद्य पढ़ाते समय वस्तु पर अत्यधिक जोर देते हैं। कई बार ऐतिहासिक विषय पर आधारित पाठ पढ़ाने वाले शिक्षक जब से उसे पढ़ाते हैं तब ऐसा लगता है वे इतिहास का पाठ पढ़ा रहे हैं । विज्ञानविषयक पाठ पढ़ाते समय ऐसा लगता है कि शिक्षक विज्ञान सिखा रहे हैं। हमें सदैव यह ख्याल रखना चाहिए कि कोई भी पाठ पसंद करते समय पाठ की जानकारी गौण होनी चाहिए और पाठ से उत्पन्न होने वाले भाषाविषयक तत्त्व प्रधान होने चाहिए । पाठ्यपुस्तकों में विभिन्न प्रकार के पाठों का चयन विभिन्न प्रकार की शब्दावली, शैली तथा वाक्यरचनाओं का परिचय देने के लिए किया जाता है। दूसरी तरफ कई शिक्षक पाठ प्रवाहमय ढंग से जब चलता होता है, विद्यार्थी विषय के प्रवाह में बहुत हैं उस धड़ाम से व्याकरणविषयक गहराइयों में चले जाते हैं और पाठ का सुरम्य ताँता एकदम से टूट जाता है। व्याकरण और भाषाकीय तत्त्वों की चर्चा करते समय पाठ के प्रवाह और रस को बनाये रखना चाहिए और इन बातों की चर्चा विस्तृत व्याख्या के दौरान स्वाभाविक ढंग से आनी चाहिए।

2. पद्य शिक्षा :

"Poetry teaching is like love makings each teacher must do in his own way xxx that teaching poetry is like life, that we can lay down a few main principles that ought to be followed, but the method of applying these principles varies with the class, the poem and the teacher."

– Hoddow

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

2.1 कविता की शिक्षा का महत्त्व :

भाषाशिक्षा में कविता की शिक्षा का स्थान अति महत्त्वपूर्ण है। कविता से विद्यार्थी के मनोभाव पुष्ट होते हैं और उसकी ऊर्मि-संवेदना को अभिव्यक्ति का फलदायी माध्यम मिलता है । कविता मानव की मानवता को सजग रखने का एक सुकुमार साधन है। हमारे भावों की सहज अभिव्यंजना का मार्ग कविता के द्वारा मिलता है। कविता के द्वारा मनुष्य का भावात्मक विकास होता है । कविता हमारी भावनाओं का भोजन है। कविता से हमारी आत्मिक भूख मिट सकती है। कविता से हमें लोकोत्तरानंद की प्राप्ति होती है। वाचक का हृयदय एक अलौकिक आनंद से भर जाता है। यह आनंद ब्रह्मानंद सहोदर है। सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् को हम कविता के भावमय जगत में देख सकते हैं । कविता क्षुद्र से क्षुद्र और कठोर से कठोर हृदय को द्रवीभूत करती है और अध्यात्मता के शिखर पर ले जाती है। रमणी के समान मधुर परंतु प्रभावोत्पादक शब्दों में कविता उपदेश देती है। क्षुद्रता, साम्प्रदायिकता, स्वार्थ, हिंसा, कोध, ईर्ष्या, अभिमान आदि दुर्वृत्तियों को हटाकर मानवमन को भावना के उच्च स्तर पर ले जाने के लिए तथा राष्ट्रीय एकता के लिए कविता एक सबल माध्यम है । तर्कशक्ति के द्वारा हम एक हद तक काम ले सकते हैं पर हमेशा के लिए केवल तर्क से काम नहीं चलता । मनुष्य के शरीर को जिस प्रकार परिश्रम के बाद विराम की जरूरत पड़ती है उसी प्रकार सतत बौद्धिक कार्यों के बाद मन को प्रफुल्लित करने के लिए कविता की जरूरत पडती है। कविता के द्वारा विद्यार्थी को सौन्दर्य दृष्टि खिलती है। उसकी कल्पनालता विकसित होती है। विद्यार्थी ताल और लय, छंद और गति का मजा लूटना सीखता है। विचार और भावनाप्रेरक कविताएँ विद्यार्थियों के मन पर ऐसा गहरा असर डालती है कि इनसे उसके चारित्र्यगठन की प्रक्रिया को भी वेग मिलता है। कविता पाठ में शिक्षक और विद्यार्थी सब मिलकर आनंद को प्राप्ति की खोज करते है और उस आनंद की प्राप्ति ही पाठ का ध्येय होता है। विद्यार्थी की रसवृत्ति को पोषण देने के लिए तथा उसमें सौन्दर्य दृष्टि का विकास करने के लिए कविता सिखायी जाती है। इसके पिरणाम स्वरूप विद्यार्थी में सुरुचि, संस्कारिता उत्पन्न होते हैं और उसका जीवन उन्नत और ऊर्ध्वगामी बनता है।

विद्वानों ने कविता की अनेक परिभाषाएँ दी हैं। **हडसन** ने कहा है : "**कविता कल्पना और मनोवेगों द्वारा जीवन की व्याख्या है ।** "**कविता उत्तमोत्तम शब्दों का उत्तमोत्तम क्रमविधान है।**" **कोलरिज** ने ऐसा कहा है। **आर्नोल्ड** के मतानुसार, "**कविता मूल में जीवन की आलोचना है ।**" **पं. विश्वनाथ** ने कहा है "**रसात्मक वाक्य को काव्य कहते हैं ।**" **आचार्य रामचंद्र शुक्लजी** कविता की व्याख्या करते समय बताते हैं: "**हृदय की मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्दविधान करती हैं उसे कविता कहते हैं ।**"

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE RAJKOT

उपरोक्त व्याख्याओं से कविता के कल्पनात्त्व, बुद्धितत्त्व, भावतत्त्व तथा भाषा सौन्दर्य, अलंकार, शब्दशक्तियाँ, गुण, रीति, छंद तथा संगीत आदि कविता के मुख्य तत्त्वों की स्पष्टता होती है। विद्यार्थियों के लिए जो पाठ्यपुस्तकें तैयार की जाती हैं उन सब में, कविता को ऊपर की बातों को ख्याल में रखते हुए स्थान दिया जाता है। पाँचवीं कक्षा की हिन्दी की पाठ्यपुस्तक में भी छोटी-छोटी कविताएँ रखी जाती हैं । अभ्यासक्रम के अनुसार 5वीं कक्षा में कविता की 80 पंक्तियाँ पढ़ाई जाती हैं, तो S. S. C. की परीक्षा के लिए बनी पाठयपुस्तक में करीब 500 से 600 काव्य पंक्तियाँ होती हैं ।

2.2 कविता सिखाने की विविध विधियाँ :

कविता की शिक्षा एक व्यक्तिगत कला है। विद्यार्थियों को सिखाई जाने वाली कविता तथा सिखानेवाले शिक्षक के अनुसार कविता शिक्षा की पद्धति में परिवर्तन अनिवार्य होता है। अध्याय के प्रारंभ में दिये गये 'हेडो' महाशय के उद्धरण को देखेंगे तो पता चलेगा कि आपने कविता शिक्षा की तुलना प्रेम करने के साथ की है। जिस तरह प्रेम करने की पद्धति सब के लिए समान नहीं होती है वैसे कविता शिक्षा के लिए भी कोई एक सामान्य पद्धति की हिमायत कोई नहीं कर सकता है। फिर भी कविता शिक्षा के लिए उपयोगी थोड़ी पद्धतियाँ हैं। उनकी चर्चा से शिक्षकों को अपनी पद्धति का निर्माण करने में कुछ सहायता होगी ऐसा मानकर उसकी चर्चा हम यहाँ करते हैं। तदुपरांत काव्य के प्रकार के अनुसार कविता शिक्षा की पद्धति में परिवर्तन जरूरी होगा। ऊर्मिगीत तथा काव्य, खंडकाव्य, पद, भजन, वीररस का काव्य आदि के प्रकार के अनुसार पद्धति में भिन्नता होगी। इस प्रकार कविता रानी की रुचि के अनुसार पद्धति वेश परिवर्तन करना पडता है। कविता को हम स्वतंत्र स्वैरविहारिणी कहते हैं, उसे बंधन नहीं है ऐसा मानते हैं। हर्बर्ट की पंचपदी में गगनगामिनी कविता को बाँधना कठिन है। फिर भी उसकी स्वतंत्रता को बनाए रखते हुए पंचपदी के सोपानों का किस तरह उपयोग हो सकता है उसे भी हमें देखना होगा ।

कविता शिक्षा की निम्नलिखित प्रणालियाँ हैं :

(1) गीत तथा अभियन प्रणाली (Song and Action Method)

(2) शब्दार्थ कथन प्रणाली (Meaning Method)

(3) खंडान्वय प्रणाली या प्रश्नोत्तर प्रणाली (Analysis Method)

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(4) व्याख्या प्रणाली (Exposition Method)

(5) व्यास प्रणाली (Discourse Method)

(6) तुलना प्रणाली (Comparison Method)

(7) समीक्षा प्रणाली (Appreciation Method)

(1) गीत तथा अभिनय प्रणाली (Song and Action method):

अहिन्दी भाषा प्रदेशों में हिन्दी का प्रारंभ चोर्थी कक्षा से किया जाता है। विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में अपने विचार भलीभाँति प्रकट कर सकते हैं। मातृभाषा के बालगीतों और छोटी-छोटी कविताओं को वे गाते हैं तथा कंठस्थ करते हैं। छोटी उम्रवाले विद्यार्थियों के लिए ध्वान्यात्मकता वाले बालगीत उपकारक होते हैं। इनसे बालक का हृदय झंकृत हो जाता है। सुमधुर स्वर और ताल के साथ गाने में बालक को आनंद आता है। अभिनय करते हुए और सुस्वर गाते हुए बालक गीतों से आनंद प्राप्त करते हैं। बालगीतों को सिखाने की सर्वोत्तम प्रणाली अभिनय प्रणाली है। ऐसे गीतों को बालक सामूहिक रूप से या व्यक्तिगत रूप से गाते हैं और खेल में बालक को गीत याद हो जाता है। कविता में रुचि उत्पन्न करने का यह सर्वोत्तम साधन है। 4थीं कक्षा में ऐसे बालगीत संगृहीत किये जाते हैं। प्रारंभिक मौखिक कार्य में भी ये गीत सहायक होते हैं।

(2) शब्दार्थकथन प्रणाली (Meaning Method):

यह प्रणाली आजकल स्कूलों में अधिकतया अपनायी जाती है। इस प्रणाली के अनुसार शिक्षक कविता की एक एक पंक्ति पढ़ता है और पंक्ति में आये हुए शब्दार्थ स्वयं कह देता है या कभी कभी विद्यार्थियों से अर्थ कहलवाता है। इस प्रकार कविता का भावार्थ समझा देता है। कई शिक्षक पंक्तियों का अनुवाद विद्यार्थियों की मातृभाषा में समझा देते हैं। इससे कविता का पाठ गद्यपाठ के समान नीरस और यंत्रवत् ही चलता है। कविता शिक्षण के एक भी उ`श की पूर्ति इस प्रणाली से नहीं हो सकती हैं बल्कि कविता की हत्या हो जाती है। यह दोषपूर्ण पद्धति सर्वथा त्याज्य है ।

(3) खण्डान्वय प्रणाली या प्रश्नोत्तर प्रणाली (Analysis Method):

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

गद्य पढ़ाने की यह प्रणाली कभी कभी कविता की शिक्षा में भी प्रयुक्त की जाती है। इस प्रणाली के अनुसार सारे पद्य का प्रश्नीचर द्वारा विश्लेषण किया जाता है और फिर हर एक खंड को जोड़ कर सारे काव्य का अर्थ-समझाया जाता है । कविता के हर एक भाव या विचार को स्पष्ट करने के लिए सारा पाठ गद्य की तरह प्रश्नोत्तर की एक लड़ी बन जाता है। जिन कविताओं में काव्यात्मकता कम हैं उनमें यह पद्धति अपनायी जा सकती हैं ।

(4) व्याख्या प्रणाली (Exposition Method):

प्राचीन काव्य को पढ़ाने के लिए यह प्रणाली सर्वोत्तम है। उच्च कक्षाओं में इस प्रणाली को अपनाया जा सकता है। इस प्रणाली में भाव स्पष्ट तथा सौन्दर्यानुभूति पर बल दिया जाता है। होशियार शिक्षक कविता के भाववाही वाचन के बाद प्रत्येक भाव की विस्तृत व्याख्या करते हुए कविता की सुंदरता के हर एक अंग की पहचान कराता है । प्रत्यक्ष अनुच्छेद का भावार्थ, शैली, प्रसंग, कवि के विचार, कल्पनाएँ और अनुभूतियों का अध्ययन विद्यार्थियों को कराता है। यह प्रणाली पूर्ण रूप से अपनाने योग्य नहीं है ।

(5) व्यास प्रणाली (Discourse Method):

एक सफल कथाकार की भाँति शिक्षक कविता की विस्तृत रसमय व्याख्या करता है। प्राचीन कविताओं की तथा उच्च स्वर की साहित्यिक, भावात्मक तथा प्रतीकात्मक कविताओं की शिक्षा इस प्रणाली के अनुसार अच्छी तरह हो सकती है ! जो शिक्षक बहुश्रुत, सफल वक्ता और अध्ययनशील होता है वह इस प्रणाली के अनुसार कविता के कलापक्ष तथा भावपक्ष का संतुलित स्पष्टीकरण कर सकता है ।

(6) तुलना प्रणाली (Comparison Method):

अहिन्दीभाषी प्रदेशों में इस प्रणाली का उपयोग अच्छी तरह किया जा सकता है । विद्यार्थियों की मातृभाषा में हिन्दी भाषा की कविताओं के समान भावोवाली अनेक कविताएँ पायी जाती हैं । कविता के भाव का विश्लेषण करते समय आंशिक रूप से समान पंक्तियों की तुलना की जा सकती है। इसका अतिरेक नुकसानकारक है। हिन्दी भाषा की समान भावोंवाली कविताओं की तुलना भी की जा सकती है।

(7) समीक्षा प्रणाली (Appreciation Method):

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE RAJKOT

अहिन्दी भाषी प्रदेशों में इस प्रणाली का उपयोग नहींवत् मात्रा में किया जा सकता है। लंबे काव्यों को सिखाते समय शिक्षक विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करता है। प्रत्येक कविता को भाषा, भाव, शब्दशक्ति, रस, अलंकार आदि के आधार पर मूल्यांकन को करने का प्रयत्न किया जाता है। हमारे स्कूलों में विद्यार्थियों का स्तर इस प्रणाली को अपनाने के लिए योग्य नहीं होता है।

2.3 कविता का शिक्षक :

काव्य के रसास्वादन के लिए काव्य सिखाने वाला शिक्षक भी अति महत्त्व का कार्य करता है। शिक्षक के काव्य शिक्षण पर भी विद्यार्थियों का काव्य शौक आधारित रहता है। प्रत्येक शिक्षक कविता का अच्छा शिक्षक नहीं हो सकता है। क्योंकि उत्तम काव्य शिक्षण के लिए शिक्षक में विशिष्ठ शक्तियों की आवश्यकता होती है जो हर एक शिक्षक में होना असंभवित है। वही शिक्षक कवि का संदेश विद्यार्थियों में पहुँचा सकता है, जो कि स्वयं कविता का रसास्वादन कर सकता है। कविता प्रेमी शिक्षक विद्यार्थियों के लिए अत्यंत जरूरी है। शुष्क हृदय शिक्षक अपने नीरस व्यक्तित्व की छाप विद्यार्थियों पर छोड़ते हैं जिससे विद्यार्थियों में कविता के प्रति उदासीनता और अरुचि जागृत होते हैं। काव्य शिक्षण का ज्ञान विस्तृत होना चाहिए। विद्वान शिक्षक प्रसंगानुकूल समांतर उदाहरण छाँट सकता है तथा काव्य सिखाते समय तुलनात्मक अध्ययन ही करा सकता है। जो शिक्षक काव्य का भावानुकूल वाचन कर सकता है वह कविता का कुशल तथा सफल शिक्षक बन सकता है । उचित आरोह- अवरोह के साथ स्वर, ताल और लय को साधते हुए भावानुकूल स्वर में वाचिक अभिनय करते हुए कविता का वाचन करने से कविता का बहुत कुछ भाव समझ में आ जाता है। कविता में बिखरे हुए भावों को श्रृंखलाबद्ध करने के लिए, भावों का स्पष्टीकरण करने के लिए तथा वर्ग में काव्यमय वातावरण पैदा करने के लिए शिक्षक में प्रभावशाली वक्तृत्व शक्ति अत्यंत आवश्यक है । शिक्षक को अपने विद्यार्थियों को मानसिक अवस्था को भी जान लेना चाहिए । विद्यार्थियों के मनोभावों के अनुकूल कविता सिखाने से शिक्षक को सफलता मिलती है। शिक्षक की आवाज़ मधुर होनी चाहिए । बेसूर आवाज़ से कविता गाने से कविता का मजा खतम हो जाता है और काव्य में आनंद प्राप्त होने के बजाय विद्यार्थियों में नीरसता पैदा होती है। कविता में चित्रित शब्दचित्रों को विद्यार्थियों की आंखों के सामने उपस्थित करने की ताकत शिक्षक में होनी चाहिए। शिक्षक में योग्य अभिनय की क्षमता भी होनी चाहिए। कविता का गानपूर्ण योग्य वाचन तथा आवश्यक अभिनय दोनों मिलकर कविता के अर्थ की स्पष्टता जल्दी से करा सकते हैं । शिक्षक को कविता का गान करना है परंतु वह संगीतकार या गायक नहीं है, उसे अभिनय भी करना है परन्तु वह नट नहीं है। इस बात का सदैव ख्याल रखना चाहिए गान और अभिनय दोनों काव्य शिक्षा के साधन मात्र है। काव्य सौन्दर्य स्वरूप होता है। उसे सिखाने वाले को भी ऐसा ही बनना पड़ता है । कविता पाठ करते समय हावभाव करते समय, या भाव प्रदर्शन के

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE RAJKOT

समय शिक्षक के चेहरे के स्नायुओं का आकुचन-प्रसरण भी सुंदरता पूर्वक होना चाहिए । संक्षेप में काव्य शिक्षक में निम्नलिखित जैसे गुण होने चाहिए :

(1) भाषा शक्ति तथा उत्कट भाषा प्रेम ।

(2) अत्यंत संवेदनशील हृदय । काव्य की रचना करते समय की कवि के मन की स्थिति की कल्पना करना, कवि के हृदय द्वारा अनुभवित भावों को समझाना, कवि द्वारा लिखित भाव और विचार आदि के साथ एकता का अनुभव करना और फिर विद्यार्थियों के हृदयों में भी उसी प्रकार के भाव पैदा करना शिक्षक का कार्य है ।

(3) काव्य का नादसौन्दर्य व्यक्त कर सकें ऐसी वाणी तथा सूरमिलावट की शक्ति की जरूरत है।

(4) काव्यछटा और मुक्त अभिनय शक्ति ।

(5) काव्य के शब्दों के रहस्य को समझने की शक्ति ।

(6) काव्य के रसदर्शन का मज़ा लूटने की शक्ति और विद्यार्थियों को वह मज़ा लूटने में मदद करने की शक्ति ।

(7) काव्य साहित्य का सम्यक् अध्ययन ।

(8) विद्यार्थियों के योग्य और उनके लिए उपयोगी काव्यों का संग्रह करने का शौक ।

2.4 कविता की विस्तृत व्याख्या :

कविता सिखाने की कोई एक निश्चित पद्धति नहीं है ऐसा आगे बताया है फिर भी हर एक शिक्षक को कविता सिखाते समय जो क्रियाएँ तथा प्रवृत्तियाँ करनी पड़ती है उनकी चर्चा यहाँ करना हम जरूरी समझते हैं। कविता के विषय की जानकारी (प्रस्तावना) विद्यार्थियों के पूर्वज्ञान के आधार पर दी जा सकती है। इस पद में शिक्षक का उ`श काव्य का शीर्षक मात्र विद्यार्थियों से निकलवाना नहीं होना चाहिए, परंतु काव्य में चित्रित भावों के स्पष्टीकरण से उपयोगी वातावरण पूर्वज्ञान के आधार पर पैदा करना जरूरी है। प्रश्नों के द्वारा किसी काव्यपंक्ति के द्वारा सामान्य बातचीत के द्वारा या विद्यार्थियों के द्वारा अनुभव किये गये किसी प्रसंग या स्थान के वर्णन द्वारा काव्य के आधार पर आदि उपायों के द्वारा शिक्षक विद्यार्थियों को नया काव्य सीखने के लिए प्रेरणा (Motivation) दे सकता

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

है। नये काव्य के नाम वगैरह की स्पष्टता करने के बाद उसे श्यामपट्ट पर लिख देना चाहिए और बाद में वाचन करना चाहिए । इस विस्तृत व्याख्या में कविता का वाचन, व्याख्या तथा भाव विश्लेषण तीन मुख्य अंग हैं।

*** काव्यवाचन या कविता का वाचन :**

कविता के लिए उपयोगी वातावरण पैदा करने में कविता का वाचन अत्यंत महत्त्वपूर्ण अंग है। कविता भावमय और छंदोबद्ध भाषा है इसलिए उसका सस्वर सुपाठ अत्यंत आवश्यक है। कविता का आनंद श्रवण द्वारा ही लिया जा सकता है। कविता का भाव अर्थ की अभिव्यक्ति के साथ साथ उसका नादसौंदर्य भी प्रकट हो जाय, परंतु उस में नाटक और संगीत का दुष्प्रभाव न आने पाये यह देखना चाहिए । कविता सुपाठ का अर्थ गाना नहीं है। भावपुष्टि और अर्थोद्घाटन के लिए जितनी संगीत की आवश्यकता है उतना ही सहयोग उससे लेना चाहिए और इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि संगीत अथवा नाटय से काव्य दब न जाय। किसी भी कवि के गीत या पद पक्के गानों की भाँति गाये न जाये और न तान भी खींची जाय । जरूरत पड़ने पर कविता को एक से अधिक बार भी गाया जा सकता है। सुरीले रसभरे संवेदनशील तथा भावमय काव्य गान के द्वारा कक्षा में ऐसे वातावरण का सर्जन होता है कि जिससे काव्य का अधिकतर भाव-अर्थ अपने आप विद्यार्थी पकड़ लेते हैं। काव्य के वातावरण में विद्यार्थी ऐसा मुग्ध हो जाता है कि काव्यभाव उसके हृदय को हर लेते हैं और जिसे बुद्धि वर्णन नहीं कर सकती हैं उसे हृदय मूक रूप से ग्रहण कर लेता है। श्री हेडो ने कहा है : **"Poetry is art of the ear, not of the eye in other words, poetry is sound, not sight."** अर्थात् कविता श्रवण की कला है, आँखों की नहीं-दूसरे शब्दों में, कविता ध्वनि है, दृष्टि नहीं । कविता का रसास्वादन केवल कानों के द्वारा अच्छी तरह हो सकता है। श्री हेडो के उपरोक्त कथन से कविता का वाचन कितना महत्त्व पूर्ण है यह भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है । विद्यार्थियों का मन नादमाधुर्य और तालबधता से जल्दी आकर्षित होता है। इसलिए शिक्षक को कविता वाचन निःसंकोच होकर खुली आवाज़ से तथा तन्मयता पूर्वक करना चाहिए । कविता का उत्तम वाचन करने के लिए खास परिश्रम करना पड़ता है और प्रयत्न करते हुए वह कला साध्य हो सकती है। मधुर आवाज़ वाला शिक्षक ही कविता का चित्रोपम वाचन कर सकता है ऐसी बात नहीं है, परंतु जिस तरह कवि अपनी कृति को तन्मयता से भावपूर्वक और लयानुसार वाचन करता है उसी तरह शिक्षक को भी वाचन करना चाहिए। अध्यापक समरस की प्राप्ति के लिए कवि की आत्मा के साथ एकरूप होकर वाचन करें। विरामचिह्नों का तथा छंदशास्त्र का ख्याल भी वाचन करते समय रखना अत्यंत जरूरी हो जाता है। कविता का वाचन भावानुकूल होना चाहिए तथा शिक्षक का अंग संचालन भी भावानुकूल होना चाहिए। निम्न कक्षाओं में कविता का गाकर वाचन किया जा सकता है। ऊर्मिप्रधान काव्य में मूक् वाचन की आवश्यकता नहीं होती है। थोड़े विचारप्रधान काव्यों की शिक्षा देते समय मूक वाचन को स्थान दिया जा सकता है ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE RAJKOT

*** शब्दार्थग्रहण :**

विद्यार्थियों को कविता सुना चुकने के उपरांत उसकी जाँच आवश्यक है। भाव परीक्षा के लिए दो-तीन छोटे छोटे प्रश्न यह जानने के लिए पूछने पड़ते हैं कि विद्यार्थियों की अनुभूति किस सीमा तक हुई और शिक्षक को किस दिशा में ओर कितना कार्य करना है। साधारण रूप में काव्य की मोटी मोटी बातों को जानकर उसके सूक्ष्म सौदर्य की ओर बढ़ना चाहिए। इस प्रवृत्ति से विद्यार्थी काव्य को समझने में कहाँ कठिनाई का अनुभव करते हैं इसका पता शिक्षक को शीघ्र हो जायेगा । यहाँ शिक्षक को कभी-कभी स्पष्टीकरण के लिए वक्तव्य देने की जरूरत पड़ती हैं। जो बातें विद्यार्थी न जानते हों, उन्हे उनसे निकलवाने की चेष्टा न करनी चाहिए और जो बातें शिक्षक को बतानी ही हैं, उन्हें बताने में उसे संकोच और देर भी नहीं करनी चाहिए । कविता से अज्ञात रूप से भाषा ज्ञान में वृद्धि होती है, परन्तु भाषा सीखना कविता का उ`श नहीं हो सकता । अतः शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कराने की न तो आवश्यकता है और न यह वांच्छनीय भी है। श्यामपट्ट पर शब्दार्थ लिखने से विद्यार्थियों का ध्यान इस ओर अनावश्यक रूप से आकृष्ट हो जाता है। शिक्षक को कविता सिखाते समय शब्दों के जाल में फँस नहीं जाना चाहिए। नहीं तो कविता के भाव प्रकाशन में बाया पैदा होगी और कविता का आनंद नष्ट हो जायेगा । कविता के अधिकतर शब्दों से विद्यार्थी परिचित होते हैं । परंतु यदि कोई कठिन शब्द हो तो उसका पर्याय देकर अर्थ स्पष्ट किया जा सकता है। प्राचीन काव्यों में शब्दों के खड़ी बोली के रूप बता देने चाहिए। अगर ऐसे अधिक शब्द हों तो श्यामपट्ट पर उन्हें पहले से लिखकर ले जाना चाहिए । पर्यायवाची शब्द बताने से शिक्षक का काम अधिक सरल हो सकता है । प्रतीकात्मक शब्द, लाक्षणिक शब्द अथवा आलंकारिक शब्द सिखाने के लिए विशद् व्याख्या करनी चाहिए। प्रत्येक कवि शब्दों के माध्यम से, उनके विशिष्ट क्रम से, शब्द चमत्कृति के द्वारा काव्य पैदा करता है । अतः कवि के द्वारा प्रयुक्त प्रत्येक शब्द महत्त्वपूर्ण है । अक्सर कवि एक भाव या विचार को व्यक्त करने के लिए भिन्न-भिन्न शब्दों के द्वारा प्रयत्न करता है। शिक्षक को काव्य के मर्मस्थान को जानकर उनकी विशदता से स्पष्टता करनी चाहिए। जिस तरह सुनार सोने के गहनों को भिन्न पदार्थों से घीसघीस कर उज्जवल करने का प्रयत्न करता है परंतु उनको तोडता मोड़ता नहीं है, न दबाता है, न खोलता है; उसी प्रकार शब्दों के सौंदर्य को शिक्षक कुशलतापूर्वक विद्यार्थियों को समझा दे, उनको न खोले और न तोड़े । *

•भावग्रहण तथा रसदर्शन :

आगे हमने विस्तृत व्याख्या के लिए भिन्न भिन्न प्रणालियाँ दी हैं। उनका यथायोग्य उपयोग इस सोपान में किया जा सकता है। व्यवहार में काव्यवाचन तथा शब्दार्थग्रहण के साथ काव्य के सूक्ष्म विश्लेषण का अविच्छिन्न संबंध

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED COLLEGE RAJKOT

रहेगा। और ये तीनों एक ही अन्विति के अंग होंगे। इसमें शिक्षक को ऐसे प्रश्नों की योजना करनी चाहिए कि जिनके द्वारा अस्पष्ट कविता सौंदर्य स्पष्ट होता रहे और यदि विद्यार्थियों के उत्तर शृंखलाबद्ध कर दिये जाय तो कविता की सुसंबद्ध व्याख्या भी बन जाय। काव्य की हर एक पंक्तिपर प्रश्न पूछने की अपेक्षा शिक्षक को काव्य में कवि द्वारा आलेखित शब्दचित्र, कल्पना, भाव, विचार, आदि को स्पष्ट करने के लिए सुयोजित तथा अल्प मात्रा में प्रश्नों की योजना करनी चाहिए । शिक्षक बीच बीच में महत्त्व की काव्यपंक्तियों को गा भी सकता है और उत्तर देने वाले विद्यार्थियों से भी उन्हें गाने के लिए कह सकता है। कवि के शब्दों की खूबी मनोरम शब्दचित्र, कवि की कल्पना, अलंकार, छंद, शैली आदि विशेषताओं का विद्यार्थी मज़ा लूट सके इस तरह प्रश्नों के द्वारा चर्चा को काव्य शिक्षा में स्थान है। कविता की रचना करते समय कवि के हृदय में जो भावनाएँ पैदा हुई थीं उन भावनाओं को शिक्षक विद्यार्थियों के हृदय में जागरित करता है तथा कविता क भाव सौंदर्य के पान द्वारा उन्हें आनंदविभोर बना देता है। कविता का रसास्वादन करना एक बड़ा शब्द है। विद्यार्थियों को कविता के पाठ से आस्वाद तभी मिलेगा जब कि वे खुद कवि के भाव, विचार, शैली, अलंकार, शब्दयोजना, लय, गति, ताल तथा कल्पना का आस्वाद वे कर सकें । विद्यार्थी की सभी कठिनाइयाँ जब खत्म हो जायेंगी तथा कवि के संपूर्ण भाव और विचार वे समझ जायेंगे तब काव्य कौशल का मूल्यांकन करते हुए हम कविता का रसास्वादन कर सकते हैं। कविता का शब्दार्थ करने से या सरल भाषा में अन्वय करके समझा देने से कविता का रसास्वादन नहीं हो सकता है, बल्कि कविता की हत्या होती है। संपूर्ण भावग्रहण के लिए काव्य की विस्तृत व्याख्या के उपरांत एक दो बार शिक्षक खुद कविता का वाचन करें और जरूरत पड़ने पर विद्यार्थियों के द्वारा कविता वाचन की आवृत्ति करवाई जाय । बार बार कविता पढ़ने से कविता के भाव स्पष्ट हो जाता है और कविता के सौन्दर्य की अधिकाधिक अनुभूति हो सकती है। विद्यार्थियों ने अगर कविता का संपूर्ण रसास्वादन किया होगा तो उसे कंठस्थ करने के लिए वे तत्पर हो जायेंगे और अवकाश के समय वे कविता को गुनगुनाएंगे। उच्च कक्षाओं में कवि का परिचय देन से विद्यार्थियों को प्रोत्साहन मिलता है ।

*

प्राचीन कविता :

अहिन्दी भाषी प्रदेशों में प्राचीन कविताएँ भी सिखायी जाती हैं। एक तो हमारे विद्यार्थियों के लिए हिन्दी नयी भाषा है और उस पर व्रज भाषा, अवध आदि प्राचीन भाषाओं में लिखित कविताएँ सीखना बड़ा मुश्किल है। मूल बात यह है कि प्राचीन कविताएँ सरल होनी चाहिए। शिक्षक प्राचीन भाषा के शब्दों को रटाने का आग्रह न रखें तो अच्छा है। इन भाषाओं के कारकों के प्रत्यय का ज्ञान विद्यार्थियों को करा देने से सरलता होती है। अभिनय से या बीच बीच में

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

तद्भव पर्यायवाची शब्द बता देने से विद्यार्थी काव्य के भाव को जल्दी से समझ जाते हैं। इन कविताओं का समग्र भाव विद्यार्थियों की समझ में आ जाय इतने से ही हमें संतोष मान लेना चाहिए ।

2.5 कविता सिखाने में ध्यान देने योग्य बातें :

ऊपर हमने कविता सिखाने के विषय में विविध प्रश्नों की चर्चा की है। यहाँ कविता सिखाते समय शिक्षक के लिए उपयोगी सूचनाएँ संक्षेप में दे रहें हैं।

(1) कविता का विचार सौंदर्य, कल्पना सौंदर्य, शैली सौंदर्य तथा भाव सौंदर्य शिक्षक की समझ में आ जाने चाहिए ।

(2) शिक्षक समूची कविता को एक कलाकृति माने, उसका खंड करके मूल्यांकन न करें ।

(3) कविता का रसास्वादन कर सकने की क्षमता प्रत्येक व्यक्ति में अलग अलग मात्रा में होती है, अतः प्रत्येक बालक से एक ही प्रकार की प्रतिक्रिया की आशा नहीं करनी चाहिए ।

(4) काव्यरसिक तथा पद्यप्रेमी शिक्षक ही अच्छे ढंग से कविता सिखा सकता है ।

(5) शिक्षण और अभ्यास के द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी की काव्य के रसास्वादन की योग्यता बढ़ाई जा सकती है।

(6) विद्यार्थियों के मन में कविता के प्रति इतना कुतूहल जाग्रत कर दिया जाय कि उसे सीखने के लिए विद्यार्थी उत्सुक हो जाय।

(7) शिक्षक को कवि में और अपने विद्यार्थियों में विश्वास रखकर सीधे कविता पर जाना चाहिए। "Have a faith in the poet and in your pupils and go straight to the poem"
- Haddow

(8) कविता का प्रथम परिचय प्रभावोत्पादक हो अर्थात् पहली बार का सुवाचन मार्मिक हो ।

(9) कठिन शब्द और दुरुह विचारों का स्पष्टीकरण तथा अत्यधिक विश्लेषण रसास्वादन में बाधा डालते हैं। "The words of the poem are not to be regarded objectively, not to be looked at and examined, with detachment. They should sink into the mind and be allowed to repose there as the focus of one's meditation until they yield fullness. Dr. P. Gurrey

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(10) उचित प्रकार के प्रश्न, व्याख्या, तुलना, विरोध, आदि से विचारों, भावों, कल्पनाओं और शब्दचित्रों को व्यवस्थित रूप से समझाया जाय ।

(11) कविता का आदर्श वाचन अच्छी तरह से किया जाय । बाद में दो तीन बार बीच-बीच में वाचन करने से विद्यार्थियों को फायदा होता है। श्री बेल्टन कहते हैं "In the first reading the general drift and the meaning of the passage are considered and the aim is to raise enthusiam and interest... In the second reading, consideration.. is to make clear every expression and to read to an appreciation of such things, as the exquisite choice of words, the harmony of sound and rhythm with idea and the beauty and appropriateness of simile, metaphor and descriptive epithet.

The third reading gathers up the results of the two former and should result in a fuller and deeper appreciation intellectual, emotional and aesthetic of the whole passage, which would find its natural exression in an intelligent and sympathetic. oral reading by pupils."

(12) कक्षा का वातावरण आनंदमय हो । बातचीत का ढंग अकृत्रिम और साहचर्यपूर्ण हो । संगीतपूर्ण पंक्तियों के आनंद का प्रवाह निर्बाध होना चाहिए । "Our main task as teachers of poetry is to create an atmosphere in which the meaning of the poem can be felt rather than understood intellectually, but none the less understood." - **श्री रायर्बन**

(13) सरस पंक्तियाँ विद्यार्थियों से दुहरवाई जाय । कविता की तुकांतयोजना, पंक्ति का मध्यवर्ती विचार, अंत्यानुप्रास, वर्णवृत्तों के गुरु-लघु कम के संगीत का रसास्वादन में बड़ा महत्त्वपूर्ण स्थान है ।

(14) अच्छी कविताएँ कण्ठस्थ करायी जाय और समय समय पर उनका

सुपाठ किया जाय । अंत्याक्षरी इसका एक अच्छा साधन है ।

(15) रसास्वादन की अभिव्यक्ति होने से रसानुभूति पुष्ट होती है । समालोचन, विचार, स्पष्टीकरण, सुपाठ, व्याख्या, चित्र बनाना, पद्यरचना करना, तुकान्त शब्द ढूँढ़ना, उपर्युक्त उपमान अथवा प्रयोग देना आदि अभिव्यक्ति के प्रमुख साधन है ।

(16) जहाँ तक हो सके कम से कम शैक्षणिक साधनों का उपयोग किया जाय । इस बारे में **श्री रायबर्न** ने कहा है: "If we really wish to teach appreciation and real understanding of this form of art, we have to avoid the devices which will reduce it to a formal-study."

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

2.6 कविता में अभिरुचि बढ़ाना :

कविता सिखाने का एक उ`श है कि विद्यार्थी में पाठशाला छोड़ने पर भी कविता के प्रति प्रेम बना रहे। कविता का अध्यापन ठीक ढंग से यदि हुआ है तो विद्यार्थी कविता में रूचि लेंगे ही। काव्य-सौंदर्यग्रहण की शक्ति का योग्य विकास होने पर कविता के प्रति स्वाभाविक प्रेम हो जाता है। जिस व्यक्ति का कविता के प्रति स्थायी प्रेम हो जाता है। वह अच्छी कविताओं के वाचन के द्वारा अपनी रुचियों का परिष्कार करता है और चरित्रगठन करता है। पाठशाला में अगर योग्य वातावरण पैदा किया जाय तो विद्यार्थियों में काव्य के प्रति अभिरुचि उत्पन्न हो सकती है। निम्नलिखित साधन अपनाकर पाठशाला के कार्यकलापों को कवितामय बना सकते हैं ।

(1) कविता लिखने का अभ्यास

(2) कविताओं को कण्ठस्थ करना

(3) सुभाषित प्रतियोगिता

(4) अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता

(5) समस्यापूर्ति

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(6) कवि संमेलन

(7) कवि दरबार

(8) काव्य संग्रह संकलन

(9) कविता प्रतियोगिता

(10) कवि सम्मान

(11) कवि जयंती मनाना ।

2.7 पाठ आयोजन :

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

2.7 पाठ आयोजन :

पद्य पाठ आयोजन नोंध

प्रशिक्षणार्थी का नाम : .....

स्कूल का नाम : .....

दिनांक : ..... कक्षा : 8 तास : ..... समय : .....

विषय : हिन्दी विषयांग : रहीम के दोहे (पद्य)

पद्धति (1) ..... ☐ पद्धति (2) ..... ☐

सामान्य उद्देश्य

- छात्रों में उचित भाँति स्वर, लय, आरोह, अवरोह, ताल के साथ काव्य गान करने की कुशलता का विकास करना ।
- छात्रों की कल्पना, निर्णयशक्ति का विकास करना ।
- कविता के कलापक्ष, रस, छंद तथा भाषा शैली के सौंदर्य से परिचित करना।
- छात्रों में काव्य की रसस्वाद करने की क्षमता उत्पन्न करना ।

विशिष्ट उद्देश्य

- छात्र रहीम के दोहों का अर्थ समझें ।
- छात्र रहीम के दोहों के गान का कौशल प्राप्त करें ।
- छात्र रहीम के दोहों के अपरिचित शब्दों का परिचय प्राप्त करें ।
- छात्र शिक्षक द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देंगे ।

विषयवस्तु	उपकरण	अध्यापन पद्धतियाँ	संदर्भ
• रहीम के दोहे 1, 2, 3, 4	• टेपरेकोर्डर • 'कबीर के दोहे' ओड़ियो कैसेट	• कथन-चर्चा • प्रश्नोत्तर	• रहीम ग्रंथावली • हिन्दी पा.पु. कक्षा : आठ

पाठ प्रवेश

शिक्षक कक्षा में प्रवेश कर अपना परिचय कक्षा को देता है । बाद में टेप रेकोर्डर पर कबीर के दोहे सुनाता है ।

दोहा : लूट सको तो ..... प्राण जाय जब छूट

प्रश्न : (1) यह दोहा किस कवि द्वारा रचा गया है ?

(2) राम नाम की लूट का मतलब क्या है ?

हेतु कथन :

आज हम ऐसे ही एक महान कवि रहीम के दोहों का अध्ययन करेंगे।

COLLEGE-RAJKOT

बिषयवस्तु	शिक्षक की प्रवृत्ति	छात्र की प्रवृत्ति
रहीम के दोहे :	• शिक्षक पाठ प्रवेश करने के बाद 'रहीम' ग्रंथावली कक्षा के सामने प्रस्तुत करता है और रहीम के जीवन कथन के बारे में जानकारी देता है ।	• छात्र रहीम के बारे में जानकारी प्राप्त करते हैं ।
	• शिक्षक रहीम के चार दोहों का गान करता है ।	• छात्र शिक्षक द्वारा गान किये हुए दोहों को सुनते हैं ।
	• शिक्षक प्रथम चार दोहों का मौन वाचन कक्षा से करवाता है ।	
	• जिन शब्दों के अर्थ समझ में नहीं आते उन शब्दों को लिखने देता है ।	• छात्र अपरिचित शब्दों को ढूंढते हैं ।
	• शिक्षक छात्रों से दोहों का समूह गान और व्यक्तिगत गान करवाता है ।	• छात्र दोहों का समूह गान करते हैं ।
	• शिक्षक प्रत्येक दोहे की चर्चा प्रश्नोत्तर से करता है और विषयवस्तु के बारे में श्यामपट कार्य करता है ।	• छात्र अपरिचित शब्दों का वाक्य प्रयोग करेंगे ।

OLLEGE-RAJKOT

विषयवस्तु	शिक्षक की प्रवृत्ति	छात्र की प्रवृत्ति
क्रम : 1 रहिमन यहि ..... नारायण मिल जाई ।	प्रश्न : • रहीम सबसे दौड़कर मिलने की सलाह क्यों देते हैं ? • नारायण किसे मिलते हैं ? • नारायण का अर्थ क्या है ?	• छात्र प्रश्नों के उत्तर देंगे । • छात्र चर्चा में शिक्षक को साथ देते हैं ।
क्रम : 2 टूटे सुजन ..... टूटे मुक्ता हार ।	• रहीम किसे सौ बार मनाने की सलाह देते हैं ? • मुक्ताहार का उदाहरण देकर कवि क्या सीख देते हैं ?	
क्रम : 3 रहिमन वे नर मर ..... मुख निकसत नाहि ।	• रहीम किसे मरा हुआ मानते हैं ? • दूसरे के पास माँगने से क्या होता है ? • 'ना' क्यों नहीं कहना चाहिए ?	• छात्र श्यामपट्ट कार्य अपनी कापी में लिखते हैं । • छात्र प्रत्येक दोहे का बोध कक्षा के सामने पेश करते हैं ।
क्रम - 4 जो गरीब पर हित ..... मिताई जाग ।	• सुदामा के मित्र कौन थे ? • कृष्ण ने सुदामा को क्या मदद की ? • किसे महान व्यक्ति माना जाता है ? • गरीब की मदद क्यों करनी चाहिए ?	

LEGE-RAJKOT

मूल्यांकन

प्रश्न-1. एक-एक वाक्य में उत्तर दें ।

(1) दौड़कर सबसे क्यों मिलना चाहिए ?

(2) रहीमजी किसे मरा हुआ मानते हैं ?

(3) बड़ा आदमी कौन बन सकता है ?

(4) कृष्ण के मित्र का नाम क्या था ?

प्रश्न-2. समानार्थी शब्द दीजिए ।

(1) संसार –

(2) गरीब –

(3) मित्र –

स्वाध्याय

- रहीम के दोहे (क्रम 1 से 4) मुखपाठ करके लाना ।
- कृष्ण – सुदामा प्रसंग का वर्णन लिखो ।

कृष्णफलक नोंध

कक्षा : 8 दिनांक : .....

विषय: हिन्दी विषयांग : 3, रहीम के दोहे

अपरिचित शब्द

- मुक्ताहार – मोती की माला
- सुजन – सज्जन
- संसार – जगत, विश्व
- धाई – दौडकर
- नारायण – भगवान
- नर – आदमी
- निकसत – निकलता है

दोहों के मर्म

(1) सबको प्रेम से मिलना चाहिए ।

(2) रूठे हुए सज्जन आदमी को मना लेना चाहिए ।

(3) दूसरों से कुछ माँगना चाहिए नहीं और कोई हमारे पास कुछ माँगता है तो उसे 'ना' नहीं कहना चाहिए ।

(4) गरीबों के प्रति आदर रखना चाहिए ।

LLEGE-RAJKOT

3. व्याकरण शिक्षा

"Grammar is the practical analysis of a language, its anatomy and it is taught to guide correct usage and Dr. Sweet eliminate error, "

3.1 व्याकरण की शिक्षा का महत्त्व :

व्याकरण भाषा की व्याख्या करता है। वह भाषा का सहचर है। अतः पाठशालाओं में व्याकरण शिक्षा का भाषा का शिक्षा में महत्त्वपूर्ण स्थान है। व्याकरण की शिक्षा दिये बिना शुद्ध भाषालेखन का ज्ञान विद्यार्थियों को नहीं हो सकता है। अन्य भाषा की शिक्षा में व्याकरण की शिक्षा के बिना भाषा शिक्षण का कार्य पूर्ण नहीं हो सकता है। भाषा के प्रयोग का सही ज्ञान प्राप्त करने के लिए व्याकरण को ज्ञान अत्यंत आवश्यक है । अहिन्दी भाषी विद्यार्थी व्याकरण को जाने बिना हिन्दी को पढ़कर या बोलकर सीख जायेगा ऐसा मानना एक भ्रम है।

हमारी पाठशालाओं में हिन्दी के व्याकरण की शिक्षा देने में बहुत ढील बरती जाती है। कई पाठशालाओं में तो व्याकरण पढ़ाया ही नहीं जाता है और पढ़ाया भी जाता है तो परीक्षा में जो प्रश्न पूछे जाते हैं उनको तैयार कराने के लिए ही और यह भी परीक्षा से कुछ समय पहले पढ़ाया जाता है। बाज़ार में ऐसी पुस्तकों का अभाव नहीं है जो परीक्षा से केवल एक दिन पहले पढ़ लेने पर विद्यार्थी को व्याकरण के प्रश्न में पूरे अंक दिलाने का दावा करती हो । इस प्रकार के व्यवहार से व्याकरण भाषा के शिक्षक का एक सर्वथा तुच्छ अंग बन गया है। अर्थात् भाषा के अध्ययन-अध्यापन का सबसे अधिक उपेक्षित अंग कोई है तो वह व्याकरण है । विद्यार्थियों को भी व्याकरण सीखना बोझ-सा लगता है। उसे वे नीरस तथा अनावश्यक समझते हैं और उसकी ओर ध्यान नहीं देते हैं। शिक्षकों को भी व्याकरण की पढ़ाई में उतना उत्साह नहीं होता ।

भाषा एक कला है और यह कला अभ्यास से ही प्राप्त हो सकती है। पर अभ्यास के भी कुछ नियम होते हैं। जो शिक्षक भाषा के नियम अर्थात् व्याकरण को जाने बिना हिन्दी को सिर्फ पढ़कर या बोलकर सिखाना चाहते हैं वे भारी भूल करते हैं। संभाषणात्मक प्रणाली की दृष्टि से हिन्दी भाषा का आदर्श वातावरण विद्यार्थियों के चारों ओर नहीं बन पाता है। उनको हिन्दी भाषा सुनने और बोलने के सीमित मौके मिलते हैं। इस कमी को पूरा करने के लिए व्याकरण की शिक्षा की आवश्यकता है । बहुत बार भाषा को अच्छी तरह लिखने और बोलने वाला व्यक्ति भी किसी नये प्रयोग के बारे में संशय में पड़ जाता है, क्योंकि उसको व्याकरण के नियमों का ज्ञान नहीं होता है। व्याकरण की शिक्षा भाषा

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE RAJKOT

के हर एक भाग को खोल कर सामने रख देती है और जब एक बार विद्यार्थी भाषा के व्याकरण के नियमों से परिचित हो जाता है तो फिर उसे जीवनभर उस भाषा के प्रयोग में किसी प्रकार के संकोच का सामना नहीं करना पड़ता है।

नयी भाषा सिखाने के लिए व्याकरण अत्यंत आवश्यक है। यह ठीक है कि व्याकरण के ज्ञान के बिना निरक्षर मनुष्य भी अपनी मातृभाषा सीख लेता है । अतः मातृभाषा का व्याकरण न जानने पर भी शुद्ध व्यावहारिक भाषा बोलना संभव है। परंतु व्याकरण के ज्ञान के बिना एक अन्य नवीन भाषा पर अधिकार प्राप्त करना कठिन है । व्याकरण के द्वारा विद्यार्थी को भाषारचना का ज्ञान मिलता है तथा भाषा के शुद्ध और अशुद्ध प्रयोग की परख व्याकरण के द्वारा ही होती है। नवीन शिक्षापद्धति में व्याकरण की शिक्षा को व्यावहारिक और प्रयोगात्मक बनाया है। व्याकरण का अनुबंध शुद्ध लेखन तथा शुद्ध भाषण से सिखा जाता है। पहले भाषा के शिक्षक यह मानते थे कि व्याकरण के पूर्ण अध्ययन के बिना भाषा को अपनाकर उसमें हम सफलता से व्यवहार करने में समर्थ नहीं हो सकेंगे। वे मानते थे कि भाषा के व्याकरण के नियमों को याद करने से उनके अनुसार विद्यार्थी बोलने और लिखने में सफल हो सकता है। उनकी दृष्टि से व्याकरण से व्याकरण के नियमों, उदाहरणों और शब्दों को कंठस्थ करना भाषा पर प्रभुत्व प्राप्त करने का एक तरीका था। साथ ही वे मानते थे कि व्याकरण मानसिक अनुशासन में वृद्धि करता है जिससे प्रशिक्षण के संक्रमण के सिद्धांत के द्वारा अन्य विषयों में भी फायदा होता है। इस दृष्टि से विद्यार्थी की भाषण और लेखन की शक्ति के विकास के पहले व्याकरण सिखाया जाता था । व्याकरण सिखाते समय सदा उसे साधन की अपेक्षा योग्य ही माना जाता था । व्याकरण की शिक्षा शुष्क तथा नीरस बन जाती थी और विद्यार्थियों की न केवल व्याकरण में परंतु स्वयं भाषा के प्रति अरुचि हो जाती थी और इस प्रकार लाभ के बजाय हानि ही अधिक होती थी ।

एक शिक्षक की दृष्टि से हमें यह देखना चाहिए कि किसी भी भाषा का व्याकरण एक साधन है, साध्य नहीं । साध्य तो भाषा का ज्ञान है और उस भाषाज्ञान की प्राप्ति में अन्य साधनों के समान व्याकरण भी एक साधन है। परंतु अन्य भाषा की शिक्षा में व्याकरण की शिक्षा अत्यंत आवश्यक है । अन्य भाषा के प्रयोगों के संबंध में भ्रम अथवा शंका उत्पन्न हो जाने पर इसका समाधान व्याकरण के द्वारा ही संभव हो सकता है। व्याकरण के नियम हटाने से शुद्ध भाषा विद्यार्थी बोलेगा या लिखेगा ऐसा मानना भ्रम है। व्याकरण की शिक्षा का आरंभ तभी करना चाहिए जब कि विद्यार्थी का भाषा पर भी कुछ कुछ अधिकार हो जाय । बालक जिन नियमों के अनुसार बोलते हैं, पढ़ते हैं, लिखते हैं उनकी जानकारी उन्हें भाषा जानने के बाद दी जाय । व्याकरण के नियमों का ज्ञान विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति में स्पष्टता ला सकता है और विद्यार्थी की अपनी भाषाशैली के निर्माण में सहायक हो सकता है ।
व्याकरण की शिक्षा से भाषा के ध्वनि-विचार, शब्द-विचार, अर्थ-विचार तथा वाक्य-विचार का ज्ञान विद्यार्थियों को होता है। तुलनात्मक विधि से मातृभाषा के शब्दों, कारकों क्रियापदों आदि के प्रयोग के साथ हिन्दी भाषा के शब्दों,

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

कारकों, क्रियापद आदि का ज्ञान भी दिया जा सकता है। मातृभाषा तथा अन्य भाषा में अन्तर हो वहाँ व्याकरण के नियमों के द्वारा शुद्ध ज्ञान कराया जा सकता है। व्याकरण के ज्ञान से भाषा व्यवस्था तथा नियमबद्धता आ जाती है।

3.2 व्याकरण सिखाने की पद्धतियाँ :

व्याकरण सिखाने की बहुत सी प्रद्धतियाँ पचलित हैं। इन पद्धतियों में से प्रमुख पद्धतियाँ निम्नलिखित हैं :

(1) भाषा संसर्ग पद्धति

(2) व्याख्या प्रणाली या आगमन पद्धति :

(अ) प्रयोग पद्धति या विश्लेषण पद्धति

(आ) सहयोग पद्धति

(3) सिद्धांत पद्धति या निगमन पद्धति :

(अ) पाठयपुस्तक पद्धति

(आ) सूत्र पद्धति

(1) भाषा संसर्ग पद्धति :

मातृभाषा सिखाने के लिए इस पद्धति का उपयोग किया जाता है। इस पद्धति के अनुसार व्याकरण की शिक्षा पुस्तक के आधार पर की जाती है। अलग से व्याकरण की शिक्षा पुस्तक के आधार पर की जाती है। अलग से व्याकरण की शिक्षा देना इस पद्धति के अनुसार ठीक नहीं समझा जाता है। तथा सिद्धांत और नियम अलग रूप हैं, सिखाये बिना ही रचना तथा अभ्यास के द्वारा व्याकरण का ज्ञान कराया जाता है। जिस पद्धति से प्रयोग के द्वारा हम मातृभाषा सीखते हैं उसी पद्धति से विद्यार्थी नयी भाषा सीखें यह जरूरी समझा जाता है। विद्यार्थियों का हिन्दी भाषा पर पूर्ण अधिकार हो इसलिए जिन लेखकों का गाथा पर पूरा अधिकार होता है उनकी रचनाएँ पढ़ने के लिए दी जाती है। इस प्रणाली की कमी यही है कि व्याकरण के सभी नियम भाषा संसर्ग द्वारा नहीं सीखे जा सकते हैं। किसी नयी भाषा को पूर्ण रूप से सीखने के लिए उस भाषा का व्याकरण व्यवस्थित रूप से सीखाया जाय यह जरूरी है। विद्यार्थियों को भी

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

भाषा की दृष्टि से शुद्ध क्या है या अशुद्ध क्या है, इसका पता व्याकरण की शिक्षा के बिना नहीं चल सकता है। पोतदार समिति की रिपोर्ट में 5वीं से 7वीं कक्षा तक व्याकरण इस पद्धति से सिखाया जाय ऐसी अकांक्षा रखी गयी है क्योंकि इन कक्षाओं के विद्यार्थी अन्य भाषा के रूप में हिन्दी का प्रारंभ 4 थीं कक्षा से ही करते हैं। अतः व्याकरण के सिद्धांत परिभाषा तथा नियमादि समझना इनके लिए मुश्किल है। इन कक्षाओं के विद्यार्थी भाषा का शुद्ध प्रयोग करते हुए रचना तथा पाठ्यपुस्तक के अभ्यास द्वारा हिन्दी भाषा का ज्ञान अच्छी तरह से प्राप्त कर सकते हैं। इन कक्षाओं के अध्यापकों को सतर्क रहकर यह देखना होता है कि विद्यार्थी शुद्ध बोलें तथा शुद्ध लिखें । विद्यार्थी समझ सकें और उनका अनुकरण कर सकें ऐसी पुस्तकें उनको देनी चाहिए ।

(2) व्याख्या प्रणाली :

नवीन शिक्षा पद्धति में व्याकरण की औपचारिक तथा तात्त्विक चर्चा की अपेक्षा उसके व्यावहारिक उपयोग पर अधिक महत्त्व दिया जाता है। व्याकरण की शिक्षा वाचन के पाठ और शुद्ध लेखन से अनुबंधित की जाती है। 4थीं से 7वीं कक्षाओं में व्याकरण के व्यावहारिक शिक्षण को ही पाठयक्रम में स्थान दिया गया है। इन कक्षाओं में व्याकरण की शिक्षा के लिए कोई अलग पुस्तक नहीं रखी जा सकती है, परन्तु व्यावहारिक उदाहरणों से विद्यार्थी व्याकरण के नियमों को सीख लेते हैं। पाठ के वाक्य व्याकरण शिक्षा के उदाहरण बनते हैं। इस पद्धति के दो भेद हैं जिनकी चर्चा प्रस्तुत की जाती है।

(अ) प्रयोग पद्धति या विश्लेषण पद्धति : इस पद्धति को

आगमन पद्धति भी कहते हैं। इस पद्धति में व्याकरण की परिभाषाएँ तथा नियम विद्यार्थियों से रटवाये नहीं जाते हैं। विधार्थियों के सामने व्याकरण के किसी नियम को स्पष्ट करने के लिए अधिक संख्या में उदाहरण रखें जाते हैं। फिर उदाहरणों के आधार पर विद्यार्थियों की सहायता से प्रश्नोत्तर, चर्चा तथा विवेचन के द्वारा व्यापक तथा विवेचन के द्वारा व्यापक नियम निश्चित किये जाते हैं और बाद में उन नियमों का प्रयोग करवाया जाता है ।

व्याकरण सिखाने के लिए यह पद्धति श्रेष्ठ है । विद्यार्थी स्वयं समझकर नियम निश्चित करते हैं। इससे उन्हें नियम तथा परिभाषाओं को रटना नहीं पड़ता है । व्याकरण की शिक्षा साधारण से विशेष, ज्ञात से अज्ञात, उदाहरण से नियम आदि सिद्धांतसूत्रों के आधार पर चलती हैं। अतः यह पद्धति मनोवैज्ञानिक और रोचक भी है।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(आ) सहयोग पद्धति : इस पद्धति के अनुसार स्वतंत्र रीति से व्याकरण की शिक्षा व्याकरण की किसी पाठ्यपुस्तक के द्वारा प्रदान करना योग्य नहीं समझा जाता है। मौखिक कार्य में, पाठ्यपुस्तक की शिक्षा के समय अथवा रचनाकार्य में व्याकरण के कुछ नियम बता दिये जाते हैं। विद्यार्थी वाचन, रचना तथा मौखिक कार्य के सहयोग से व्याकरण सीखता है और व्याकरण सम्मत भाषा का उपयोग करता है। यह पद्धति भाषा संसर्ग विधि का परिष्कृत रूप है और यह पद्धति प्रयोग विधि से भिन्न नहीं है। इन तीनों विधियों में उदाहरण से नियम की ओर जाना होता है। सहयोग पद्धति, प्रयोग तथा भाषा संसर्ग पद्धति की पूरक है। व्याकरण के विविध अभ्यास देने के लिए इस पद्धति का भलीभाँति उपयोग किया जा सकता है। प्रयोगात्मक या व्यावहारिक व्याकरण के लिए सहयोग पद्धति अत्यंत उपयोगी है ।

(3) सिद्धांत पद्धति या निगमन पद्धति :

व्याकरण की शिक्षा निगमन पद्धति के द्वारा पहले दी जाती थी। इस पद्धति के अनुसार शिक्षक व्याकरण के नियमों की व्याख्या शास्त्रीय दृष्टि से करता था । विद्यार्थी बिना समझ नियम, व्याख्या और उदाहरणों को कण्ठस्थ कर लेते थे । याद किये गये व्याकरण के ज्ञान के आधार पर विद्यार्थी व्याकरण के स्वाध्यायों का उत्तर देता था। विद्यार्थी बिना समझ परिभाषा तथा नियमों को रटकर याद किया करता था। व्याकरण का अधिकतर ज्ञान औपचारिक ही होता था जिससे विद्यार्थियों में वास्तविक अर्थ में भाषा का शौक उत्पन्न नहीं हो पाता था। भाषा का तास विद्यार्थी के लिए त्रास का समय बन जाता था और व्याकरण का शिक्षक उसे अप्रिय लगता था । इस पद्धति के दो उपभेद हैं जिनकी चर्चा यहाँ की जाती है।

(अ) पा यपुस्तक पद्धति: यह पद्धति अंग्रेजी भाषा की शिक्षा के लिए अधिकतया अपनायी जाती है। प्रत्येक भाषा की शिक्षा में व्याकरण का ज्ञान एक अलग पाठ्यपुस्तक के द्वारा दिया जाता है । व्याकरण की पाठ्यपुस्तक में पहले परिभाषा तथा नियम, अपवाद वगैरह दिए जाते हैं । विद्यार्थी इन नियमों को रटते हैं, बाद में उदाहरण दिये जाते हैं। विद्यार्थी इन उदाहरणों को भी रटते हैं। विद्यार्थी ज्ञात नियमों का प्रयोग बार बार कर सकें इसलिए विभिन्न परिस्थितियाँ पैदा की जाती है तथा अनेक अभ्यास दिये जाते हैं। विद्यार्थियों को नियम रटने पड़ते हैं, परंतु भाषा की दृष्टि से उनका वास्तविक फायदा नहीं होता है। अतः नियम व्यर्थ जाते हैं और विद्यार्थियों के मन पर व्यर्थ का बोझ रहता है। यह पद्धति अमनोवैज्ञानिक तथा शिक्षाशास्त्र के प्रतिकूल है। इससे विषय नीरस और अरोचक बनता है। आज भी व्याकरण अनुवाद प्रणाली के हिमायती इस पद्धति के अनुसार सिखाने के पक्ष में है ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(आ) सू पद्धति : संस्कृत भाषा की शिक्षा के लिए इस पद्धति का उपयोग पहले से ही हमारे भारत में हो रहा है। यह पद्धति पाठ्यपुस्तक प्रणाली का एक रूपान्तर है । इस पद्धति के अनुसार व्याकरण के विभिन्न नियम सूत्रों के रूप में विद्यार्थियों को कण्ठस्थ करा दिये जाते हैं। बाद में अनेक उदाहरण देकर सूत्र स्पष्टीकरण के द्वारा समझाये जाते हैं । विद्यार्थी सूत्र बिना समझे रट लेते हैं। सूत्र निरर्थक होते हैं। पाणिनि का व्याकरण सूत्रों में है। हिन्दी व्याकरण के सूत्र भी कई लोगों ने बनाये हैं । यह पद्धति अमनोवैज्ञानिक है और व्यावहारिक व्याकरण की शिक्षा के लिए अधिक उपयोगी नहीं है ।

3.3 व्याकरण के पाठ का क्रम :

ऊपर हमने व्याकरण सिखाने की विभिन्न पद्धतियों की चर्चा की है। किसी एक पद्धति को अपनाकर शिक्षक जड़ रूप से व्याकरण सिखाये तो वांच्छित सफलता प्राप्त नहीं हो सकती है । शिक्षक को व्यावहारिक बनना चाहिए । उसे अपने विद्यार्थियों के भले के लिए उपयोगी किसी पद्धति को या पद्धतियों के समुचित समन्वय को अपनाना चाहिए। विद्यार्थी व्याकरण सम्मत शुद्ध तथा सरल हिन्दी भाषा धारावाहिक रूप से बोल सके तथा लिख सकें यह उसका अंतिम लक्ष्य है । व्याकरण की जानकारी या व्याकरण सिखाने की पद्धति ये दोनों उस लक्ष्य की प्राप्ति के साधन मात्र है। व्याकरण का पाठ सिखाते समय सभी पद्धतियों का इस प्रकार उपयोग करते हुए विद्यार्थियों के लिए व्याकरण का विषय रोचक तथा रसप्रद बनाया जा सकता है ।

(1) भाषासंबंधी प्राप्त ज्ञान के आधार पर तथा व्याकरण- विषयक माहिती की पूर्वभूमिका की बुनियाद पर विद्यार्थियों को व्याकरण विषयक नया ज्ञान सीखने की प्रेरणा दी जा सकती है ।

(2) प्रस्तावना में नये ज्ञानसंबंधी प्रत्यक्ष उदाहरण दे कर विद्यार्थियों के अज्ञान जनित कुतूहल का उपयोग किया जा सकता है । ऐसा करने से पाठ रोचक बनता है ।

(3) प्रस्तावना में विभिन्न तरीके आजमाये जाय ।

(4) व्याकरण विषयक जो माहिती हम सिखाना चाहते हैं उसकी स्पष्टता प्रारंभ में ही की जाय तथा विद्यार्थियों को भलीभाँति समझा दिया जाय कि वे क्या सीखने जा रहे हैं ।

(5) व्याकरण के नये ज्ञान के अधिक उदाहरण विद्यार्थियों के सामने पेश किये जाय ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(6) अलग अलग उदाहरण देकर विद्यार्थियों को विषयसंबंध संपूर्ण माहिती दी जाय ।

(7) अगर कहीं अपवाद हो तो उनका स्पष्ट रूप से निरूपण किया जाय ।

(8) समान उदाहरणों के साधारण लक्षण बताते हुए विद्यार्थियों को सामान्यीकरण की ओर अग्रेसर किया जाय ।

(9) विद्यार्थियों की सहायता से साधारण लक्षणों से नियम, सिद्धांत या परिभाषा स्थिर की जाय ।

(10) नियम का प्रत्येक भेद विद्यार्थियों के सामने स्पष्ट किया जाय ।

(11) अन्य उदाहरण बताकर ज्ञात नियम की परीक्षा ली जाय।

(12) नियमों का दृढ़ीकरण करने के लिए विभिन्न प्रकार के अभ्यास दिये जाय तथा विद्यार्थियों से उदाहरण लिये जाय ।

(13) व्याकरण की अलग पाठ्यपुस्तक में से अभ्यास के लिए प्रश्न पूछे जाय ।

(14) पाठयपुस्तक में दिये गये स्वाध्याय लिखकर लाने के लिए दिये जाय ।

(15) रचना, लेखन, वाचन तथा मौखिक कार्य करते समय सीखे हुए ज्ञान का सहयोग लेकर उसका दृढ़ीकरण किया जाय ।

(16) पाठयपुस्तक के गद्यपाठ पढ़ाते समय योग्य स्थान पर प्रासंगिक रीति से (incidentally) व्याकरण के ज्ञान का अनुबंध (correlation) किया जाय ।

3.4 मातृभाषा तथा हिन्दी का व्याकरण :

हिन्दी भाषा और भारत की अन्य भाषाओं के व्याकरण में काफी समानताएँ हैं । संस्कृत भाषा की यह देन है । इसलिए अहिन्दी भाषी प्रदेशों की भाषाओं के व्याकरण के साथ हिन्दी भाषा के व्याकरण की सूत्रबद्धता स्थापित करने की बड़ी आवश्यकता है । शिक्षा विभाग द्वारा निश्चित मातृभाषा के अभ्यासकम से हमें पता चलता है कि उसमें कक्षा 4 से मातृभाषा के व्याकरण की शिक्षा देने का निर्देश किया गया है। अतः मातृभाषा के व्याकरण से

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

हिन्दी भाषा की शिक्षा में अवश्य सथी लाभ उठाया जाना चाहिए । मातृभाषा और हिन्दी भाषा के व्याकरण की समानताओं के कारण और हिन्दी भाषा की शिक्षा में उसके उपयोग के कारण विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा सीखना आसान प्रतीत होगा तथा समय और शक्ति बचेंगे । मातृभाषा के व्याकरण की तुलना हिन्दी भाषा के व्याकरण की शिक्षा देते समय की जाय तो अधिक फायदा होगा । दोनों भाषाओं के व्याकरण में ऐसे कई स्थल हैं जिनमें तुलनात्मक पद्धति से काम लेने पर आसानी से सिखाया जा सकेगा। मातृभाषा के व्याकरण से इस तरह शिक्षक काफी लाभ उठाता है ।

• कई विद्वानों का मत है कि मातृभाषा का हिन्दी शिक्षण में कोई स्थान नहीं है। हिन्दी भाषा डायरेक्टर पद्धति के द्वारा ही पढ़ायी जाय। उनका कहना है कि विद्यार्थी जो भाषा सीखें उसी भाषा में उन्हें सोचना, बोलना और लिखना चाहिए। ऐसा करने से उनमें उच्चारण और लेखन की आदतों का निर्माण होगा। हिन्दी की शिक्षा में मातृभाषा का उपयोग कहीं नहीं करना चाहिए ।

ऐसे भी विद्वान हैं जो मानते हैं कि मातृभाषा के उपयोग के बिना हिन्दी भाषा की शिक्षा नहीं देनी चाहिए। उनका मानना है कि मातृभाषा के व्याकरण की शिक्षा हिन्दी की शिक्षा के समय तुलनात्मक पद्धति से देने से बहुत ही जल्दी से विद्यार्थी व्याकरण के ज्ञान सीख सकते हैं । अनुवाद पद्धति से नयी भाषा का ज्ञान देने से उस भाषा के ऊपर शीघ्र ही अधिकार प्राप्त होता है। ये दोनों मत अंतिमवादी हैं। हिन्दीभाषा के शिक्षक को व्यावहारिक कबाबतों को सिखाने में तथा मातृभाषा के व्याकरण के ज्ञान के आधार दृष्टिकोण लेना चाहिए और हमारे मतानुसार हिन्दी व्याकरण की जटिल पर हिन्दी व्याकरण सिखाने में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए ।

गया है।

करण को

प्रयोग के

या समद

भाषा हे

3.5 व्याकरण की शिक्षा के लिए उपयोगी सूचन :

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(1) व्याकरण का प्रत्येक पाठ सिखाते समय 'व्याकरण के पाठ का कम' में दिये गये सूचनों का आवश्यकता अनुसार उपयोग किया जाय ।

(2) व्याकरण सिखाने की पद्धति विद्यार्थियों की आयु, ताकत और मानसिक विकास के अनुकूल होनी चाहिए ।

(3) पाठ्यपुस्तक में गद्य पाठों से व्याकरण के नियमों का समन्वय किया जाय ।

(4) व्याकरण का सिद्धांत या परिभाषा जब विद्यार्थियों की समझ में ठीक तौर पर आ जाय तब ही उसे याद करने को कहा जाय । पाठ को सिखाते समय बीच-बीच में व्याकरण विषयक ज्ञान की कसौटी हो सकें ऐसे सवाल पूछें जाय।

(5) व्याकरण सिखाते समय रटने की पद्धति का बिलकुल ही त्याग किया जाय ।

(6) विद्यार्थियों को भाषा का सम्यक ज्ञान हो जाय इसके बाद ही व्याकरण का प्रारंभ किया जाय ।

(7) व्याकरण की परिभाषाएँ, नियम तथा सिद्धांत प्रयोग तथा अभ्यास के द्वारा किये जाय ।

(8) पत्र, कहानी, संवाद, निबंध, अनुवाद आदि के लेखन में अधिक से अधिक मात्रा में व्याकरण के नये ज्ञान का उपयोग करवाया जाय ।

(9) बालकों के लिए व्याकरण बोझ-सा न हो जाय उतना ही

एक बैठक में पढ़ाया जाय ।

(10) सीखे हुए व्याकरण का दृढिकरण तुरंत ही करवाना चाहिए।

(11) मातृभाषा के व्याकरण से अन्य भाषा के व्याकरण के भाग विशेष की चर्चा करें तथा दोनों की तुलना द्वारा समानता और विभिन्नता का स्पष्टीकरण किया जाय ।

(12) जहाँ तक हो सके पाठ्यपुस्तक से भिन्न-भिन्न उदाहरण दिये जाय ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(13) विद्यार्थियों के ज्ञान की कसौटी के लिये जब विद्यार्थियों से उदाहरण लिये जाय तब पाठ्यपुस्तक के पठित पाठों से उदाहरण ढूँढ़ने को कहा जाय ।

(14) सभी अहिन्दी भाषी विद्यार्थी हिन्दी के व्याकरण की सर्वसाधारण भूलें करते हैं उनकी ओर विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित किया जाय । ऐसी सर्वसाधारण भूलों को दूर करने के लिए कक्षा में चार्ट बनाकर टांगे जाय ।

(15) विद्यार्थियों की सभी भूलें एक ही साथ सुधर जायेंगी ऐसा नहीं मानना चाहिए, न इसके लिए एकसाथ प्रयत्न करना चाहिए । एक के बाद एक अशुद्धि के प्रकार को ठीक करते हुए आगे बढ़ा जाय ।

(16) पाठ की शिक्षा में यथा अवसर प्रयत्न व्याकरण के सिद्धांत की ओर संकेत किया जाय तथा आवश्यकता अनुसार स्पष्टीकरण भी किया जाय ।

(17) विद्यार्थियों के व्याकरण के ज्ञान के लिए शिक्षक को कभी महत्त्वाकांक्षी नहीं बनाना चाहिए । बालक हैं वे भूल भी करेंगे। इन भूलों से तंग आकर शिक्षक को कोधित नहीं होना चाहिए ।

(18) जहाँ तक हो सके व्याकरण की शिक्षा में दृश्य और श्राव्य साधनों का उपयोग किया जाय। व्याकरण के शुष्क सिद्धांत को रोचक बनाने के लिए शिक्षक को भरसक प्रयत्न करने चाहिए । चार्ट, चित्र, तालिका आदि बनाकर वर्ग में टांगे जाय ।

(19) उच्च कक्षाओं में आवश्यकता अनुसार व्याकरण की पाठ्यपुस्तक का उपयोग भी किया जाय ।

(20) विद्यार्थियों के लेखन की अशुद्धियों की चर्चा करते समय सर्वसाधारण भूलों को सुधारने के लिए व्यक्तिगत रूप से या सामूहिक रूप से आवश्यकता अनुसार सिद्धांतो और नियमों की चर्चा और स्पष्टता की जाय ।

(21) परीक्षा के लिए तथा स्वाध्याय के लिए व्याकरण के विभिन्न प्रकार के स्वाध्याय पाठ तैयार किया जाय ।

(22) परीक्षा में व्याकरण को योग्य महत्त्व दिया जाय तथा व्याकरण शुद्ध भाषा को भी महत्त्व दिया जाय ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

ऊपर हमने अहिन्दी भाषी प्रदेशों में व्याकरण की शिक्षा के लिए उपयोगी सूचन करने का प्रयत्न किया है। उनके आधार पर शिक्षक अपनी परिस्थिति के अनुसार व्याकरण की शिक्षा को सरल बनाते हुए दृढिकरण के द्वारा व्याकरण को विद्यार्थियों के लिए उपयोगी बना सकता है ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

4)

3.6 पाठ आयोजन :

व्याकरण पाठ आयोजन नोंध

प्रशिक्षणार्थी का नाम : .....

स्कूल का नाम : .....

दिनांक : ..... कक्षा : 8 तास : ..... समय : .....

विषय : हिन्दी विषयांग : 'विशेषण बनाना' (व्याकरण)

पद्धति (1) ..... ☐ पद्धति (2) ..... ☐

सामान्य उद्देश्य

- छात्र शब्द रचनासंबंधी व्याकरण के नियम सीखें ।
- छात्र की तर्क और चिंतनक्षमता में वृद्धि करना ।
- छात्रों की व्याकरण अध्ययनशीलता का विकास करना ।
- छात्रों में भाषा के गुण एवं दोषों को समझने की क्षमता का विकास करना।

विशिष्ट उद्देश्य

- छात्र व्याकरण का ज्ञान प्राप्त करें ।
- छात्र विशेषण बनाने का कौशल हस्तगत करें ।
- छात्र विशेषण की संकल्पना समझें ।

विषयवस्तु	उपकरण	अध्यापन पद्धतियाँ	संदर्भ
• विशेषण • विशेषण बनाना आ, ई, इद, इक, दार प्रत्यय लगाकर	• Transperncies OHP • विशेषण और विशेषण के भेद चार्ट ।	• आगमन - निगमन • कथन-चर्चा	• हिन्दी व्याकरण • पाठ्यपुस्तक कक्षा : नव

पाठ प्रवेश

शिक्षक कक्षा में प्रवेश करके छात्रों का परिचय प्राप्त करता है और अपना परिचय कक्षा को देता है। कक्षा की व्यवस्था देख लेता है। विशेषण और उसके प्रकार का चार्ट रखकर निम्न प्रश्नों को पूछकर पाठ प्रवेश करता है।

प्रश्न : (1) विशेषण किसे कहते हैं ?
(2) विशेषण के भेद बताईए ।
(3) 'वर्ष' शब्द का विशेषण क्या बनता है ?

LLEGE-RAJKOT

विषयवस्तु	शिक्षक की प्रवृत्ति	छात्र की प्रवृत्ति
विशेषण : संज्ञा की विशेषता बतानेवाले शब्द को विशेषण कहते हैं ।	शिक्षक "विशेषण और उसके भेद" - चार्ट कक्षा के सामने रखते हैं । बाद में निम्न प्रश्न पूछते हैं ।	• छात्र 'विशेषण और प्रकार' के चार्ट का निरीक्षण करते हैं ।
	• विशेषण किसे कहते हैं ? • विशेषण के भेद कौन-कौन से हैं ?	• छात्र चार्ट के आधार पर प्रश्नों के उत्तर देते हैं ।
विशेषण बनाना :	शिक्षक विशेषण बनाने की प्रक्रिया कक्षा को बताते हैं ।	
'आ' प्रत्यय भूख – भूखा	• **'आ' प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाना :** उदा. प्यास – प्यासा मैल – मैला प्यार – प्यारा	• शिक्षक द्वारा पेश की गई ट्रान्सपरन्सी को देखकर पढ़कर छात्र 'आ' प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाते हैं ।
'ईक' प्रत्यय मर्म – मार्मिक	• **'ईक' प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाना :** उदा. धर्म – धार्मिक शरीर – शारीरिक मर्म – मार्मिक	• ट्रान्सपरन्सी पर के शब्दों को 'ईक' प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाते हैं ।
'ई' प्रत्यय खुश – खुशी	• **'ई' प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाना :** उदा. नकल – नकली संयम – संयमी देहात – देहाती	• छात्र ट्रान्सपरन्सी पर के शब्दों को 'ई' प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाते हैं ।

GE-RAJKOT

'ईय' प्रत्यय भारत – भारतीय	• 'ईय' प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाना : उदा. राष्ट्र – राष्ट्रीय आत्मा – आत्मीय स्मरण – स्मरणीय	• छात्र ट्रान्सपरन्सी पर के शब्दों को 'ईय' प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाते हैं ।
'दार' प्रत्यय जान – जानदार	• 'दार' प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाना : उदा. ईमान – ईमानदार शान – शानदार वफा – वफादार	• छात्र ट्रान्सपरन्सी पर के शब्दों को 'दार' प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाते हैं ।

मूल्यांकन

प्रश्न-1. निम्न शब्दों के विशेषण बनाईए ।

(1) स्वर्ग –
(2) प्रताप –
(3) मानस –
(4) दान –
(5) ठंड –
(6) पानी –

प्रश्न-2. निम्न विशेषण में शब्दों को कौन-सा प्रत्यय लगा है ?

(1) सतही
(2) समायिक
(3) प्यारा
(4) मजेदार
(5) स्थानीय

स्वाध्याय

प्रश्न : हिन्दी पाठ्यपुस्तक के गद्य क्रम : १० में से 'विशेषण' ढूँढकर सूचि बनाइए ।

...LLEGE-RAJKOT

श्यामपट्ट नोंध

कक्षा : 8 दिनांक : .....

विषय: हिन्दी विषयांग : विशेषण बनाना

विशेषण :

संज्ञा की विशेषता बतानेवाले शब्द को विशेषण कहते हैं ।

विशेषण के चार प्रकार हैं :

(१) गुणवाचक विशेषण

(२) संख्यावाचक विशेषण

(३) परिणामवाचक विशेषण

(४) सार्वनामिक विशेषण

विशेषण बनाना : प्रत्यय : आ, ईक, ई, ईय, दार, इत्यादि ।

(अन्य प्रत्यय : अनीय, आर, आलु, ईत, ईन, ईला, अ, ऐला, नाक, वर, इत्यादि)

पाठ निरीक्षण नोंध

मूल्यांकन के मुद्दें	विशिष्टताएँ	सूचनाएँ
आयोजन नोंध		
प्रस्तावना		
विषयसज्जता		
पेशकश		
शैक्षणिक सामग्री		
श्यामपट्ट नोंध		
मूल्यांकन		
वर्गव्यवस्थापन		
व्यक्तित्व		
समग्र छाप		

दिनांक : मार्गदर्शक के हस्ताक्षर

COLLEGE-RAJKOT

4. रचना शिक्षा :

"The ultimate aim of composition is to enable the pupil to arrange his own ideas in his own way, freely, to choose his own words, to express his own ideas freely.

-Champion

4.1 रचना की शिक्षा का महत्त्व :

रचना का अध्यापन पाठशाला की शिक्षा की पराकाष्टा है। रचना के द्वारा व्यक्ति अपने विचारों को दूसरों पर प्रकट करता है। भाषा की शिक्षा के द्वारा अध्यापक भाषा पर प्रभुत्व प्राप्त करने में विद्यार्थियों की मदद करता है। भाषाशिक्षा का उद्देश विद्यार्थी लिखित अभिव्यक्ति में कुशलता प्राप्त करें यह है । विचारों को क्रमबद्ध रखना, उनको शब्दों के द्वारा अभिव्यक्त करना, विचारों का परिष्कार करना तथा उनको सजाना आदि बातें रचना की शिक्षा के अंग है। विद्यार्थी व्यावहारिक जीवन में लिखकर अपने विचारों को सुचारु ढंग से पेश कर सकें इस बात का बत्त महत्त्व है। रचना के दो प्रमुख भेद हैं । (१) मौखिक रचना, तथा (२) लिखित रचना । मौखिक रचना के बारे में आगे चर्चा की जा चुकी है। लिखित रचना के आधार पर मौखिक रचना सिखाई जाती है। लिखित रचना का महत्त्व अधिक है, परंतु मौखिक रचना का आधार लेकर लिखित रचना सिखायी जा सकती है । लिखित रचना का उत्तरदायित्व मौखिक रचना की अपेक्षा अधिक है । जो लिखा जाता है वह पत्थर की लकीर बनकर रह जाता है। लिखित रचना के अभ्यास से विद्यार्थी विभिन्न प्रकार से अपने विचारों को व्यक्त करता है । रचना की विभिन्न शैलियों का परिचय उसे हो जाता है और हर व्यक्ति अपनी नयी शैली गढ़ता है। लिखित रचना में हर एक व्यक्ति को अपने विचारों को क्रमबद्ध रूप से पेश करने का अभ्यास मिलता है । लिखते समय हर एक व्यक्ति को पुनरावृत्ति न हो जाय, अप्रासंगिक बात न हो जाय, शब्दों का अशुद्ध उपयोग न हो जाय, ढीला और दुर्बल वाक्य न बन जाय आदि के लिए हमेशा सतर्क रहना पड़ता है । विचारों को सूत्रबद्ध रूप में रखना, उन में एक तरह का सिलसिला रखना, विचारों को कार्यकारण की दृष्टि में गूंथना आदि का अभ्यास रचना के द्वारा मिलता • है। रचना के द्वारा विद्यार्थी जल्दी ही भाषा पर अधिकार प्राप्त करते है क्योंकि भाषा के विविध ढंग से उपयोग करने के मौके उन्हें यहाँ मिलते हैं। रचना करते समय हर एक लिखने वाला सोचता है जिससे सोच-समझकर लिखने की आदत रचना के द्वारा डाली जा सकती हैं। आजकल शिक्षा के क्षेत्र में परीक्षा मुख्यतः लिखित हैं। विद्यार्थी को प्रश्नपत्रों के उत्तर लेख के रूप में देने होते हैं और उसके आधार पर ही विद्यार्थी अंक पाता है। विद्यार्थी अपने शब्दभण्डार का सफलतापूर्वक प्रयोग करने के मौके भी रचना के द्वारा प्राप्त करता है। इससे विद्यार्थियों की निरीक्षणशक्ति तथा विचारशक्ति दोनों का विकास होता है। विद्यार्थी बड़ी से बड़ी बात को संक्षिप्त रूप में लिख सकने की आदत रचना के द्वारा पाते हैं।

रचना शिक्षण का इतना महत्त्व होने पर भी हमारी शिक्षण संस्थाओं में रचना शिक्षण का यह महत्त्व पूर्ण अंग उपेक्षित रहा है। शिक्षक और विद्यार्थी दोनों निबंध के तासों से तंग आते देखे गये हैं। निबंध लेखन की ओर विद्यार्थी घृणा से देखते हैं। रचना के इस कार्य को विद्यार्थी एक बड़ा बोझ समझकर किसी भी तरह उसे उठा फैंकने के आदी बन जाते हैं। दूसरी ओर विद्यार्थियों की अशुद्ध रचनाओं की अशुद्धियों के डर से शिक्षक भी अपने काम से घबराकर

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

दूर भागते हैं। जन्माष्टमी, स्वतंत्रता दिवस, शहरी जीवन, ग्राम्य जीवन, किसी पशु- पक्षी या प्राणी पर निबंध, ब्रह्मचर्य, मेला, वर्षाऋतु, वसंतऋतु, कोई पर्याय परंपरागत विषय पर निबंध लिखाये जाते हैं। कक्षा में पहुँचते ही शिक्षक निबंध का शीर्षक विद्यार्थियों को बताकर उसी निबंध के विचारों का मोटा खाका उनके सामने रख देते हैं। मोटे तौर से शिक्षक भूमिका, हानि, लाभ, शिक्षा आदि । मु ों का होना आवश्यक समझते हैं और उन पर ही अधिक बल देते हैं। लेखन के तास में कुछ बालक पूरे पूरा निबंध लिखते हैं और दूसरे अधिकाँश विद्यार्थी घर पर लिखते हैं। आपस में एक दूसरे की कापी से, पुस्तक से अथवा किसी पुरानी कापी से नकल भी की जाती है। ऐसा होना एक सामान्य बात बन गयी है। स्वतंत्र सर्जन या मौलिक विचारों के प्रकाशन का अवसर विद्यार्थियों को नहीं मिलता है, न वे इस बात के महत्त्व के लिए जागरुक होते हैं। ऐसा होने से बालकों की रचनाओं में निजी अनुभव और स्वतंत्र विचार प्रकट करने की ताकत की कमी रहती है। सभी विद्यार्थियों की लिखित रचनाएँ प्रायः एक सी रहती हैं । विद्यार्थियों के विचारों की व्यवस्था विश्रृंखल बन जाती हैं और रचना के विविध अंगों के सापेक्षित विस्तारों का सामंजस्य नहीं हो पाता। आत्म अभिव्यक्ति के लिए विचार ही नहीं होते, न उनके पास सकिय शब्दावली का भंडार भी । अतः लिखने में उनकी गति भी मन्द रहती है। उनके द्वारा लिखे गये सुलेख भी असंतोषप्रद होते हैं। विद्यार्थी आजकल घसीटकर लिखना ही अपना चरम उ`श समझने लगे हैं। परीक्षा के इस युग में शिक्षक और विद्यार्थियों की सफलता को आधारशीला सत्रान्त परीक्षा के फलाफल पर ही निर्भर रहती हैं। अतः विद्यार्थी का लेखनकार्य स्पष्ट, सुचारु और सुसंबद्ध होना परमावश्यक है ।

4.2 रचना के विविध प्रकार :

प्राथमिक शालाओं में 4थीं कक्षा से हिन्दी भाषा की शिक्षा का प्रारंभ किया जाता है। प्रारंभिक दो महिनों तक मौखिक अभिव्यक्ति की कुशलता के लिए मौखिक कार्य दिया जाता है। बाद में पाठयपुस्तक की सहायता से लेखन की शिक्षा दी जाती है। प्रारंभिक कक्षाओं में छोटे सरल परिच्छेद लिखने से शुरू करके अंतिम कक्षा में विचारप्रधान निबंध लिखने का अभ्यास विद्यार्थियों को दिया जाता है। स्वतंत्र रचना के विभिन्न प्रकारों का अभ्यास विद्यार्थी की वयकक्षा के अनुरूप तथा भाषाकीय कुशलताओं के अनुसार दिये जाते हैं। निम्नलिखित रचनाओं का अभ्यास स्कूलों में करवाया जाता है ।

(1) संवाद

(2) बातचीत

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(3) चित्रवर्णन

(4) चित्र पर से कहानी

(5) पत्रलेखन

(6) ढाँचे पर से कहानी

(7) परिच्छेद लेखन

(8) निबंध लेखन

(9) अनुवाद

(10) संक्षेपीकरण

(11) परिशीलन

(12) विचार-विस्तार ।

अक्सर शिक्षक निबंध और कहानी लिखवाकर रचना शिक्षा के कार्य की इतिश्री मानते हैं। उन्हें ऊपर बतायी गयी विविध प्रकार की रचनाओं के सुदृढ अभ्यास विद्यार्थियों को देने चाहिए । हर महीने कम से कम तीन रचनाएँ विद्यार्थी लिखें तो वर्ष भर में पचीस रचनाएँ तैयार करवायी जा सकती हैं। सात वर्ष तक हम हिन्दी सिखाते हैं। सोचिए कि रचना के विविध प्रकारों के कितने अभ्यास हम विद्यार्थियों को दे सकते हैं ? अध्यापक को इसके लिए सतर्क रहकर आयोजित रचनालेखन करवाना चाहिए। अधिक लेखनकार्य किसी भी तरह दिया जाना ही चाहिए । हम यह जानते हैं कि अध्यापक मजबूर हैं। और वे समयाभाव के कारण कुछ विशेष नहीं कर सकते हैं। आज की ऐसी परिस्थिति में रचना की शिक्षा के सुधार की परमावश्यकता है और विद्यार्थियों को विविध प्रकार की रचनाओं का अधिक अभ्यास देने की जरूरत है। नीचे हम रचना शिक्षा की विभिन्न पद्धतियों की चर्चा करते हुए अध्यापको के लिए कुछ उपयोगी सूचन देने का प्रयत्न करेंगे ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

विद्यार्थियों को रचना सिखाने की कई विधियाँ प्रचलित है। रचना के प्रकार के अनुसार इनमें परिवर्तन होता रहेंगा। इन विधियों में शिक्षण के अनेक मनोवैज्ञानिक सिद्धांत भी आ जाते हैं। जैसे ज्ञानेन्द्रियों का शिक्षण (Sense training), क्रिया द्वारा शिक्षण (Learning by doing), अनुकरण द्वारा शिक्षण (Learning by imitation), स्वशिक्षण (Auto education) आदि। उच्च कक्षाओं में और निम्म कक्षाओं में विद्यार्थियों के मानसिक विकास के अनुसार रचना शिक्षण की पद्धति में शिक्षक आवश्यक परिवर्तन करता रहेगा।

(1) प्रश्नोतर पद्धति (Question and Answer Method)

(2) भाषाशिक्षण यंत्र पद्धति (Linguaphone Method)

(3) चित्रवर्णन पद्धति (Picture Composition Method)

(4) उद्बोधन पद्धति (Eliciting Method)

(5) प्रवचन पद्धति (Telling Method)

(6) वादविवाद पद्धति या तर्क पद्धति (Discussion Method)

(7) रूपरेखा पद्धति (Outline Method)

(8) समवाय पद्धति (Correlation Method)

(9) मन्त्रणा पद्धति (Guidance Method)

(10) आदर्श पद्धति (Ideal Method)

(11) अनुकरण पद्धति (Imitation Method)

(12) विचार प्रणाली (Study Method)

(13) प्रबोधन प्रणाली (Suggestion Method)

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(14) देखो और रचो प्रणाली (Play-Way Method)

(1) प्रश्नोत्तर पद्धति : इस पद्धति में शिक्षक प्रश्न करता है और विद्यार्थी उत्तर देते हैं। विद्यार्थी के दोषों को शिक्षक ठीक करता है या विद्यार्थी स्वयं उनका संशोधन करते हैं। विद्यार्थियों की अभिव्यक्ति तथा कल्पनाशक्ति विकसित होती हैं और उनको वाक्यों की शुद्ध रचना तथा शुद्ध गठन आ जाते हैं। प्रश्नोतर से विद्यार्थियों को विषय के ज्ञान का स्पष्टीकरण भी मिल जाता है। मौखिक रचना के बाद ही लिखित रचना की जाती है। प्रश्न प्रसंगानुकूल, जरूरी तथा योग्य संख्या में होने चाहिए। धीरे-धीरे प्रश्नों की संख्या विस्तृत हो सकती है ।

(2) भाषाशिक्षण यन् पद्धति: इस पद्धति के अनुसार अंग्रेजी भाषा सिखायी जाती है। अंग्रेजी भाषा सिखाने के लिए ग्रामोफोन रेकोर्ड तैयार किये गये हैं। ग्रामोफोन मशीन पर रेकोर्ड बजायी जाती है। रेकोर्ड में जो बातें मुद्रित होती हैं उनके आधार पर चित्र बना होता है। शिक्षक ग्रामोफोन के वर्णन के अनुसार चित्र पर सब बताता है। विद्यार्थी एक साथ कानों से सुनते हैं और आँखों से देखते हैं और इस प्रकार ज्ञान को परिपुष्ट करते हैं । शुद्ध उत्तरवाली सहायक पुस्तिका भी छपी हुई होती है। विद्यार्थी उसके आधार पर अपने उत्तरों को ठीक कर लेते हैं। मौखिक रचना की शिक्षा में इसका अधिक उपयोग किया जा सकता है। मौखिक रचना के बाद लिखित रचना भी लिखवायी जा सकती है। हिन्दी में इस प्रकार के रेकोर्ड अब बनने लगे हैं ।

(3) चि वर्णन पद्धति : शिक्षक वर्ग में एक चित्र रखता है और चित्र के विभिन्न अंगो के संबंध में प्रश्न करता है। चित्र की सभी बातें विद्यार्थियों के सामने स्पष्ट हो जाती है। किसी कहानी की चर्चा या किसी दृश्य का वर्णन अध्यापक प्रश्नों के सहारे करा सकते हैं। विद्यार्थी बाद में कहानी या वर्णन लिखते हैं । इस
पद्धति से बालकों की कल्पनाशक्ति उत्तेजित होती हैं और सारी कहानी को विद्यार्थी स्वयं लिखते हैं ।

(4)उद्बोधन पद्धति : हर एक मनुष्य अजागृत रूप से संसार की अनेक बातें सीखता है। इस पद्धति में विद्यार्थियों के अजागृत ज्ञान को जागृत किया जाता है और उनसे ज्ञातव्य बातें निकलवायी जाती हैं। विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति जागृत करके विषय के संबंध में नया ज्ञान प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों को प्रोत्साहित किया जाता है। जीवनचरित्र, आत्मकथा, किसी स्थान का वर्णन आदि को सिखाते समय इसका प्रयोग किया जा सकता है।

(5) प्रवचन पद्धति : शिक्षक रचना के विषय के बारे में सब कुछ बता देता है और बाद में प्रदत्त ज्ञान के आधार पर विद्यार्थियों से उसी की पुनर्रचना करवाता है । विद्यार्थी जब विषय के बारे में कुछ नहीं जानते हैं तब इस पद्धति का उपयोग किया जा सकता है। शिक्षक विद्यार्थियों को उपयोगी सहायक साधन का निर्देश कर देता है। किसी महापुरुष

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

का जीवनचरित्र, वैज्ञानिक विषय, त्यौहार का वर्णन, किसी दृश्य का वर्णन आदि विद्यार्थियों को इस पद्धति से सिखाये जा सकते हैं ।

(6) वादविवाद पद्धति : शिक्षक वर्ग के विद्यार्थियों को विवादास्पद विषयों की शिक्षा इस पद्धति के द्वारा देता है । सिनेमा से हानि-लाभ, ग्राम्य जीवन तथा शहरी जीवन, सहशिक्षा, सैनिक उपयोगी हैं या शिक्षक, आदि विषयों को समस्या के रूप में कक्षा के सामने पेश करता है। विद्यार्थियों को विषय के पक्ष में तथा विपक्ष में बोलने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है तथा अंत में निर्णय भी बाँधा जा सकता है, बाद में विद्यार्थी उसे लिखते हैं ।

(7) रूपरेखा पद्धति : शिक्षक किसी कहानी, जीवनचरित्र, वर्णन आदि की रूपरेखा श्यामपट्ट पर लिख देता है। बाद में संकेतों के आधार पर विद्यार्थी चर्चा करते हैं । विद्यार्थियों को मौलिक विचार प्रकाशन का अवसर मिलता है । इस पद्धति से विद्यार्थी की कल्पनाशक्ति को जागृत करते हुए पूरा लेख लिखवाया जा सकता है ।

(8)समवाय पद्धति : नयी तालीम के अनुसार सभा विषयों का समवाय करते हुए शिक्षा दी जा सकती है। शिक्षक इतिहास, भूगोल, व्याकरण आदि सभी विषयों का समवाय या अनुबंध भाषा से जोड़ता है और बाद में विद्यार्थी अपने विचारों को लिखित रूप देते हैं।

(9) मन ण पद्धति : डॉल्टन योजना में रचना सिखाने के लिए इस पद्धति का उपयोग किया जाता है। शिक्षक विद्यार्थियों को मार्गदर्शन देता है तथा विषय के संबंध में पुस्तकों की सूचि बना देता है। विद्यार्थी शिक्षक की मंत्रणा के अनुसार स्वाध्याय के द्वारा लिखित रूप में अपना कार्य करके लाते हैं ।

(10) आदर्श पद्धति: शिक्षक विद्यार्थियों के सामने आदर्श रचना पेश करता है और उनको वैसी ही रचना के लिए प्रोत्साहित करता है। शिक्षक एक से अधिक आदर्श रचनाएँ भी प्रस्तुत कर सकता है। विद्यार्थी अपनी रुचि के अनुसार किसी एक रचना को अपना लेते हैं और उसके अनुसार लिखने का प्रयत्न करते हैं ।

(11) अनुकरण पद्धति : आदर्श पद्धति के अनुसार दी गयी आदर्श रचना का अनुकरण करते हुए भिन्न विषय पर उसी शैली में अनुकरण करते हुए निबंध लिखने का प्रयत्न करते हैं ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(12) विचार पद्धति: शिक्षक मंत्रणा पद्धति का यह एक दूसरा स्वरूप है। किसी विचार की पुष्टि के लिए विद्यार्थी स्वाध्याय करता है और शिक्षक की सहायता से अपने विचार के लिए उपयोगी साहित्य को लिखित रूप देता है ।

(13) प्रबोधन पद्धति : जिन विषयों में छात्रों की कल्पना विषय के अज्ञान के कारण कार्य कर नहीं सकती है, वहाँ प्रबोधन प्रणाली की सहायता ली जाती है। अशात विषय जैसे 'टूंड्र प्रदेश', 'हवाई सफर', 'चाँदनी रात में नौकाविहार 'या' ताजमहल का वर्णन' आदि की रचना करते समय शिक्षक खुद सभी मुख्य बातों को बताकर रचना लिखवाता है। अब ऐसे विषयों के लिए चलचित्र (फिल्म) का उपयोग किया जा सकता है।

(14) देखो और रचो पद्धति : आचार्य सीताराम चतुर्वेदीजी ने इस विधि को प्रयोगात्मक रूप मोहन पिटारी के द्वारा दिया है। निम्न कक्षाओं में अक्षर मात्राएँ तथा अंक का वाचन तथा लेखन इस पद्धति के अनुसार अच्छी तरह सिखाया जा सकता है । खेल ही खेल में विद्यार्थी लिखना सीखता है मोन्टेसोरी की भाषाशिक्षा पद्धति भी कुछ ऐसी ही है।

ऊपर बतायी गयी विभिन्न पद्धतियों का उपयोग शिक्षक विद्यार्थियों की योग्यता तथा वर्ग की परिस्थिति के अनुसार करें। दृश्य और श्राव्य साधनों का उपयोग करते हुए विद्यार्थियों को बुद्धि और कल्पना का योग्य उपयोग भी करना चाहिए ।

निम्नलिखित जैसी बाते रचना लिखाते समय ध्यान में रखी जाय तो अ छा होगा ।

(1) विद्यार्थियों के द्वारा लिखित रचना की भाषा सरल, सीधी सादी तथा विषय के अनुरूप हो ।

(2) रचना सिखाने वाला शिक्षक स्वयं अच्छा रचनालेखक होना चाहिए तथा उसे रचना की विभिन्न शैलियों का ज्ञान होना चाहिए ।

(3) रचना में विद्यार्थी की सक्रिय शब्दावली का ही उपयोग किया जाय ।

(4) रचना सिखाते समय शात से अशात तथा सरल से जटिल सूत्र के अनुसार कार्य किया जाय ।

(5) रचना का स्तर विद्यार्थियों के द्वारा सीखी हुई भाषा के अनुरूप होना चाहिए ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(6) रचना के अंदर जिन भावों का वर्णन किया हो वे उचित हों तथा उनका कमबद्ध वर्ण किया जाय ।

(7) विचार बदलने पर नया परिच्छेद बनाने का ज्ञान विद्यार्थियों को दिया जाय ।

(8) विद्यार्थियों में स्वतंत्र रचना के प्रति रुचि पैदा होनी चाहिए।

(9) एक ही रचना में एक स्थान पर जिस बात का समर्थन किया गया हो दूसरे स्थान पर इसका विरोध करना योग्य नहीं है ।

(10) विद्यार्थी रचना में अप्रासंगिक बातों को न लिखें या विषय

से बाहर न चले जाय यह देखना चाहिए ।

(11) लिखित रचना आवश्यकता से अधिक लंबी नहीं होनी चाहिए, न अधिक छोटी ।

(12) रचना के अंदर निश्चित की गयी कोई बात छूट न जाय इस बात को म`नजर रखना चाहिए ।

(13) विद्यार्थियों का स्वाध्याय दिनोदिन बढ़ाना चाहिए और सरल रचनाओं से कठिन रचनाओं की ओर क्रमिक रूप से जाना चाहिए ।

(14) विद्यार्थी की कल्पनाशक्ति को जागृत करना चाहिए ।

(15) विद्यार्थी सुंदर तथा सुडौल-स्वच्छ अक्षरों में लिखें यह देखना चाहिए ।

(16) विद्यार्थी विरामचिह्नों का योग्य उपयोग करें यह देखना चाहिए ।

4.3 स्वतं रचना का अध्यापन :

रचना शिक्षा का मुख्य उ`श विद्यार्थी में ऐसी शक्ति पैदा कर देना है कि जिससे वह अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से क्रमबद्धता और एकसूत्रता से अपनी भाषा में अभिव्यक्त कर सकें । विद्यार्थी स्वेच्छा अनुसार योग्य शब्दों का चुनाव कर सकें और अपनी मौलिक अभिव्यक्तिः को सही मान कर स्वतंत्र सर्जन कर सकें ऐसी क्षमता उसमें

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

उत्पन्न करनी चाहिए । दूसरे शब्दों में विद्यार्थी सरल, शुद्ध और प्रवाही भाषा में अपने विचार, अनुभव, आघात प्रत्याघात, कल्पना आदि को उचित शब्दों के चुनाव द्वारा भावमय रीति से अभिव्यक्त कर सके यह रचना शिक्षा का उ`श है। इस उ`श की पूर्ति करने के लिए अभ्यासक्रम में स्वतंत्र रचना को स्थान दिया गया है। विद्यार्थी अपने विचारों को रचना के द्वारा स्पष्ट और निश्चित बना सकता है तथा अपनी ऊर्मियाँ, आवेग और भावनाओं को पूर्ण रूप से व्यक्त कर सकता है जिससे उसका मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रह सकता है। स्वतंत्र लेखन के द्वारा शब्दभण्डार की अभिवृद्धि स्वाभाविक बनती है। इतना ही नहीं, परंतु विद्यार्थी सरलता से और त्वरा से शब्दों का उपयोग करना सीखता है । स्वतंत्र रचना के द्वारा विद्यार्थी को अपने विचारों को तर्कबद्ध और व्यवस्थित रूप से लिखकर व्यक्त करने की प्रत्यक्ष तालीम मिलती है। नैसर्गिक भाषाशक्ति वाले विद्यार्थियों की खोज शिक्षक स्वतंत्र रचना के द्वारा कर सकता है और ऐसे विद्यार्थियों की रचनाशक्ति के विकास के लिए उनका मार्गदर्शन कर सकता है और उनको विविध मार्गों से प्रोत्साहित भी कर सकता है। कमनसीबी की बात यह है कि हमारी पाठशालाओं में स्वतंत्र रचना का योग्य उपयोग नहीं हो रहा है। आजकल पाठशालाओं में जो रचनाएँ लिखवायी जाती हैं उन्हें हम 'स्वतंत्र' विशेषण देंगे तो शायद उसका अपमान होगा । इसे तो सिर्फ बेगार शब्द के द्वारा ही पहचानना ठीक होगा । आजकल शिक्षक रचनात्मक की दृष्टि से लेखन की जाँच नहीं करते हैं। प्रत्येक रचना में व्याकरण की सिर्फ दो-चार भूलों को दिखाकर शिक्षक आत्मसंतोष का अनुभव करते हैं और यह जाँच भी इसलिए करते हैं कि वे मजबूर हैं और उन्हें ऐसा करना पड़ता है। शिक्षक अगर विद्यार्थियों में रचनाशक्ति का विकास करने के लिए रचना लिखवायें को विद्यार्थियों का अवश्य ही फायदा हो सकता है। नीचे हम स्वतंत्र रचना के विविध प्रकारों को सिखाने के ढंगों की चर्चा करेंगे। स्वतंत्र रचना के विविध प्रकारों को हम सभी कक्षाओं में एक साथ नहीं सिखा सकते हैं, न उच्च कक्षाओं में और निम्न कक्षाओ में रचना सिखाने की पद्धति भी समान हो सकती है। अतः शिक्षकों की सुविधा के लिए 4थीं कक्षा से 7वीं कक्षा तक जो रचना प्रकार लिखवाये जा सकते हैं, उनको सिखाने का तरीका तथा 8वीं से 11वीं कक्षाओं में सीखाने का तरीका उन दोनों की चर्चा हम अलग रूप से करेंगे ।

∆निम्न कक्षाओं में रचना :

5वीं कक्षा से 7वीं कक्षा तक निम्न प्रकार की रचनाएँ लिखवायी जाती हैं ।

(1) बातचीत

(2) छोटे संवाद

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(3) चित्रवर्णन

(4) चित्र पर से कहानी

(5) पत्रलेखन

(6) परिच्छेद लेखन

(7) छोटे निबंध

(8) अनुवाद ।

किसी भी रचना को लिखाने के पहले विद्यार्थियों को उस रचना के प्रति प्रेरित करना चाहिए । एक बार विद्यार्थियों को रचना में क्या लिखा जाय इस बात का पता हो जाएगा और वे रुचिपूर्वक उसे लिखेंगे तो रचना में कम दोष होंगे। इसलिए रचना के पहले प्रस्तावना और हेतुकथन के द्वारा विद्यार्थियों के सामने रचना की स्पष्टता कर लेनी चाहिए। रचना की पद्धति में जो परिवर्तन होगा वह विषय विवेचन के सोपान में भी होगा ।

(1) बातचीत : विद्यार्थी मौखिक अभिव्यक्ति के द्वारा अपने विचारों को व्यक्त करतें हैं और लिपि भी जानते हैं । शिक्षक सरल बातचीत के वाक्यों को क्रमबद्ध रूप से लिखवा सकता है। शिक्षक के प्रश्नों के उत्तर के रूप में दिये गये सरल वाक्य बातचीत के अंग बनेंगे ।

(2) छोटे संवाद : बातचीत में शिक्षक जो प्रश्न पूछता है उसके स्थान पर विद्यार्थी के प्रश्न तथा उनके द्वारा दिये गये उत्तर छोटे संवाद के रूप में लिखे जा सकते हैं ।

(3) चि वर्णन : 'देखो और रचो' विधि के अनुसार तथा ध्वनियंत्र पद्धति दोनों की मिलावट करके चित्रवर्णन के द्वारा सरल रचनाएँ लिखवायी जा सकती है ।

(4) चि पर से कहानी : एक से अधिक क्रमिक चित्रों में कोई एक क्रमबद्ध कहानी चित्रित की जाती है। शिक्षक बारी-बारी से चित्रों के संबंध में प्रश्न पूछकर उस कहानी को विद्यार्थियों के द्वारा मौखिक रूप से कहलवाता है। बाद में सारी कहानी को विद्यार्थी अपने शब्दों में सूत्रबद्ध रूप से लिखते हैं ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(5) प लेखन : पाठशालाओं में कृत्रिम या काल्पनिक विषयों पर पत्र लिखवाये जाते हैं। इससे विद्यार्थियों के पत्र सजीव नहीं होते हैं। विद्यार्थी के सामने ऐसी परिस्थिति पैदा की जाय जिसमें विद्यार्थी को पत्र लिखना पड़े । पत्र का खाका विद्यार्थियों का समझा दिया जाय । आदर्श पत्रों के नमूनें उनके सामने पेश किया जाय ।

(6)परिच्छेद लेखन : किसी एक विषय को लेकर प्रश्नोत्तर पद्धति से उसकी चर्चा की जाय । बाद में विद्यार्थी उसे क्रमबद्ध रूप में लिखकर लाये । शिक्षक जिन शब्दों का, विशिष्ट वाक्य प्रयोगों का और खास वाक्यरचनाओं का उपयोग परिच्छेद में करना चाहे उन्हें यह पहले दे सकता है। विद्यार्थी अपनी ही भाषा में लिखे इसके लिए आग्रह रखा जाय। एक ही विचार को व्यक्त करनेवाली विभिन्न वाक्यरचनाओं के उपयोग के द्वारा ऐसा करने को विद्यार्थियों को प्रेरणा दी जाय ।

(7) छोटे निबंध : निबंध का विषय विद्यार्थियों को 5-7 दिन पहले बता दिया जाय और उसके बारे में सोचने के लिए कहा जाय। साथ ही उपयोगी सामग्री तथा माहिती प्राप्ति के साधन बता दिये जाय। वर्ग में अलग अलग विद्यार्थियों को सारी माहिती की चर्चा करने के बाद लिखने के लिए विद्यार्थियों को दिया
जाय ।

(8) अनुबाद : अनुवाद एक कला है। शब्दों का रूपान्तर कर देना अनुवाद नहीं है या वाक्य का भाव अपने शब्दों में करना भी अनुवाद नहीं है। वाक्य का भाव बदले बिना योग्य रूप में भाषान्तर करना बड़े महत्त्व की बात है। विविध अभ्यासों के द्वारा इस की तालीम विद्यार्थी को दी जा सकती है। शब्दकोष का उपयोग करने की तालीम भी विद्यार्थियों को दी जा सकती है।

*** उ च कक्षाओं में रचना :**

8वीं कक्षा में दाखिल होने वाले विद्यार्थी का मानसिक विकास तथा उसकी भाषाशक्ति का विकास भी अच्छी तरह हो गया होता है। ऐसे विद्यार्थी को निम्न लिखित रचना प्रकार लिखने के लिए दिये जा सकते हैं।

(1) ढाँचे पर से कहानी

(2) सुनकर कहानी लिखना

3) निबंधलेखन

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(4) पत्रलेखन

(5) अनुवाद

(6) संक्षेपीकरण

(7) परिशीलन

(8) विचार-विस्तार

(1) ढाँचे पर से कहानी : विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति को उत्तेजित करने के लिए तथा निश्चित शब्द, मुहावरें, विशिष्ट वाक्यप्रयोग आदि का अभ्यास देने के लिए ढाँचे पर से कहानी लिखवायी जा सकती है। ढाँचे सोचकर दिये जाने चाहिए। जरूरी शब्द तथा वाक्यप्रयोग की सूचि पहले से ही दी जा सकती है। कहानी का सार तथा शीर्षक तैयार करवाने की तालीम भी साथ साथ देनी चाहिए ।

(2) सुनकर कहानी लिखना : शिक्षक कक्षा के विद्यार्थियों के सामने कहानी पढ़ सुनाता है या कहता है। विद्यार्थी ध्यानपूर्वक कहानी का श्रवण करते हैं। बाद में शिक्षक द्वारा प्रयुक्त भाषाशैली का अनुकरण करते हुए विद्यार्थी अपनी भाषा में कहानी लिखते हैं। कोई एक प्रसंग सूचित करनेवाला वाक्य देकर विद्यार्थियों की कल्पनाशक्ति को जागृत करते हुए काल्पनिक कहानी लिखवायी जा सकती है। विद्यार्थी अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर कल्पना के द्वारा नवीन विशिष्ट कहानी तैयार कर सकते हैं। कहानी पूरी हो जाने के बाद कक्षा के दो तीन विद्यार्थी सारी कहानी अपने शब्दों में मौखिक रूप से कहें तो कक्षा के सामान्य विद्यार्थियों का फायदा होगा ।

(4) प लेखन : इन कक्षाओं के विद्यार्थी प्रवास करते हैं, किसी स्थान की मुलाकात लेते हैं, पत्रमित्र बनाते हैं, चीजें मंगवाते हैं-ऐसे निजी अनुभव के विषय लेकर पत्रलेखन करवाया जाय। नमूने के पत्र भी विद्यार्थियों के सामने पेश किये जाय । पत्र की माहिती की चर्चा प्रश्नोंत्तर द्वारा की जा सकती है। पत्र का शुद्ध खाका विद्यार्थी जानें इसका ख्याल रखना चाहिए।

(5) अनुवाद : कठिन वाक्यरचनाएँ, विशिष्ट वाक्यप्रयोग, विशेष शब्दप्रयोग आदि का विद्यार्थी ज्ञान रखते हुए अनुवाद करें ऐसी क्षमता विद्यार्थियों में पैदा करनी चाहिए। मातृभाषा से हिन्दी में अनुवाद करने की ताकत का विकास करना चाहिए ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED COLLEGE-RAJKOT

(6) संक्षेपीकरण: 10वीं और 11वीं कक्षा में सरल परिच्छेदों का संक्षेप करने के लिए दिया जा सकता है। परिच्छेद के सभी प्रमुख विचारों को विद्यार्थी अपनी भाषा में लिख सकें ऐसी क्षमता विद्यार्थियों में पैदा करनी चाहिए ।

(7) परिशीलन : किसी एक परिच्छेद पर पूछे गये छोटे प्रश्नों का विद्यार्थी अपनी भाषा में सही उत्तर लिख सकें इसके लिए विविध अभ्यास देने चाहिए। परिच्छेद का योग्य शीर्षक निकालने की तालीम भी देनी चाहिए ।

(8) विचार-विस्तार : किसी एक विचार को अभिव्यक्त करनेवाला

वाक्य विद्यार्थियों को दिया जाता है। विद्यार्थी उस वाक्य में रहे हुए विचार का विभिन्न दृष्टियों से विश्लेषण कर के विचारपूर्वक अपनी भाषा में उसे लिखते हैं।

4.4 रचना लेखन का आयोजन :

*** निम्न कक्षाओं के लिए :**

जहाँ तक हमारे अभ्यासक्रम का संबंध है 4थीं से 7वीं कक्षा तक अभ्यासक्रम में स्वतंत्र लेखन के लिए कुछ नहीं कहा गया है । स्वतंत्र लेखन की हमारी अपेक्षा क्या है इसका भी निर्देश नहीं किया गया है, न उसके लिए विषय या विषय के क्षेत्र भी निश्चित किये गये

है। अतः हमें अपने आप विद्यार्थियों के भाषाज्ञान में स्तर की दृष्टि समक्ष रखकर आयोजन करना होगा ।

4थीं कक्षा के विद्यार्थियों के पास सीमित शब्द भण्डार होता है और साथ ही उनका भाषाज्ञान भी निम्न स्तर का होता है। अतः 4थीं कक्षा में रचना का विषय पाठ्यपुस्तक का कोई पाठ या उससे संबंधित कोई विषय हो सकता है और विद्यार्थियों को उस विषय में संबंधित विचारों को शुद्ध तथा सरल भाषा में व्यक्त करने का अभ्यास दिया जा सकता है। बाद में भिन्न भिन्न विषयों पर स्वतंत्र रचना लिखवायी जा सकती है। 4 थीं कक्षा में पशु या पक्षी का वर्णन, विद्यार्थी के चारों ओर के वातावरण का वर्णन अपने रिश्तेदारों के बारे में कुछ वाक्य लिखना या सामान्य प्रसंगो का वर्णन, कोई खेल, चित्रों का वर्णन, रेल्वे स्टेशन, मेला उत्सव आदि परिचित वस्तुओं का वर्णन करना, किसी महापुरुष का संक्षिप्त जीवनचरित्र पढ़कर लिखना, अनुभवों के आधार पर वर्णन लिखना, दिनचर्या लिखना,

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

इतिहास, भूगोलसंबंधी साधारण बातें लिखना, पढ़ी हुई कहानी अपने शब्दों में लिखना, दृश्य वर्णन, यात्रा वर्णन, अपने रिश्तेदारों को सामान्य पत्र लिखना मनीऑर्डर का फोर्म भरना, किसी खास दिवस या त्यौहार का वर्णन करना आदि लिखने के लिए दिया जा सकता है। छोटी-छोटी कहानियाँ और छोटे-छोटे रसप्रद संवाद तथा विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सामान्य वार्तालाप आदि का लेखन भी करवाया जा सकता है। हिन्दी से मातृभाषा में अनुवाद भी करवाया जा सकता है। चित्रों की सहायता से छोटी-छोटी कहानियाँ भी लिखवायी जा सकती हैं। सुंदर रचना के लिए श्यामपट्ट पर दिये गये सरल वाक्यों का अनुलेखन तथा पाठ्यपुस्तक के सुंदर वाक्यों का अनुलेखन भी दिया जा सकता है ।

6ठी कक्षा में आने पर विद्यार्थी की सक्रिय शब्दावली बढ़ जाती है और सामान्य वाक्य रचनाओं को तथा विशेष वाक्य प्रयोगों को वह आसानी से प्रयोग में ला सकता है। यह महापुरुषों को जोवनी लिख है। मेले और प्रवासों का वर्णन कर सकता है। घोटी-छोटी कहानियों को सुनकर या चित्रवर्णन के द्वारा लिख सकता है। पाठशाला ॐ भनाये गये उत्सव का या विशेष प्रसंगों का वर्णन वह अपनी भाषा में लिख सकता है। वह काल्पनिक संवाद भी बना सकता है।

7वीं कक्षा में व्यवहारोपयोगी पत्र तथा अजियों विद्यार्थी लिख सकते हैं। दिये गये बाँचो से वे कहानी भी लिख सकते हैं। छोटे बेटे निबंधों को तो वे आसानी से लिख सकते हैं।

लेखनकार्य के आयोजन में ऊपर बताये गये सूचनों का उपयोग करते हुए परिस्थिति, विद्यार्थियों की भाषाशति तथा उनका मानसिक स्तर आदि को दृष्टि समक्ष रखकर तीनों कक्षाओं का क्रमिक आयोजन हम कर सकते हैं। विषय दुहराये न जाय और विद्यार्थी लेखन के जिन तत्त्वों को सीखे हैं उनका बार बार अभ्यास मिले इसका सदैव ख्याल रखा जाय । इतना ख्याल रहे कि यह लेखनकार्य विद्यार्थियों के लिए बोझ नहीं बन जाना चाहिए। बने बनाये थोड़े से प्रिय विषयों को हर साल विद्यार्थियों को लिखने के लिए दिया जाता है और परीक्षा में भी उन्हें वे विषय दिये जाते हैं यह अच्छा नहीं है। रचना के विषय की पसंदगी विद्यार्थी की दृष्टि से की जानी चाहिए। विद्यार्थी ऐसे विषयों पर लेखन लिखना चाहता है जिनमें उसे रूचि तथा रस हो, जिनका उसे निजी अनुभव हो और जिनके बारे में वह कुछ व्यक्त करना चाहता हो । विषय के चुनाव का अधिकार विद्यार्थी को मिले इसलिए कभी कभी कक्षा में एक साथ दो या तीन विषय दिये जाने चाहिए और विद्यार्थी को अपनी पसंदगी का विषय चुनने के लिए कहना चाहिए। अपनी पसंदगी का विषय मिलने पर विद्यार्थी के लेखन में वैविध्य रहेगा और नयापन होगा, यांत्रिकता को छोड़ वास्तव में

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

उनकी रचना सजीव और मुक्त बनेगी । पत्रलेखन, कहानीलेखन और संवादलेखन में भी विषयों के लिए चुनाव को अवसर दिया जाना चाहिए ।

*** उ च कक्षाओं के लिए :**

कक्षा 8 से 11 तक के रचना लेखन पर हम यहाँ विचार करेंगे। इन कक्षाओं के विद्यार्थियों के पास अपना संचित शब्द भण्डार है, योड अनुभव हैं और उन अनुभवों को व्यक्त करने के लिए जरूरी सामान्य भाषाज्ञान भी है। वे अपने अनुभवों को व्यक्त करने की आकांक्षा भी रखते हैं। अतः शिक्षक को चाहिए कि ऐसे विषयों पर रचना लिखवायी जाय जिन विषयों में विद्यार्थियों को रुचि हो, जो उनके अनुभव की परिधि के अन्तरगत हों तथा योग्य भाषा में जिन्हें व्यक्त करने की विद्यार्थियों में क्षमता हो। कहानी, पत्र, संवाद, अनुवाद, संक्षेप आदि इस से ही पसंद किये जाय । सर्जनात्मक, रचनाकार्य के लिए हम नीचे योजना देने का प्रयत्न करते हैं। शिक्षक निम्न विषयों में से अपने छात्रों के अनुकूल विषयों पर रचना लिखवा सकता है।

(1) विद्यार्थी के शौक

(2) रूपरेखा के आधार पर कहानी

(3) कहानी को संवाद के रूप में लिखना

(4) विद्यार्थी के प्रिय पशुपक्षी की जीवनकथा और आत्मकथा

(5) प्राकृतिक दृश्यों के वर्णन

(6) साधारण उपयोग में आनेवाला पत्रव्यवहार

(7) विद्यार्थी की प्रवृत्ति, वातावरण और अनुभव का वर्णन

(8) भारत की संस्कृति से संबंधित कहानियाँ और दंतथाएँ

(9) ऋतुसंबंधी, राष्ट्रीय, धार्मिक, सामाजिक उत्सव

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE RAJKOT

(10) शहरीजीवन या ग्रामजीवन के दृश्य

(11) स्थानिक, ऐतिहासिक या धार्मिक स्थान का वर्णन

(12) ग्रामोत्सव या त्यौहार का वर्णन

(13) सामाजिक विषय पर साधारण विचारात्मक निबंध

(14) खेल समारंभ

(15) स्थानिक पेशे या उद्योग

(16) स्थानिक लोगों की दिनचर्या

(17) महापुरूषों के जीवनचरित्र

(18) विवादग्रस्त विषयों का सामान्य लेखन

(19) संक्षेपीकरण, समीक्षा और परिशीलन

(20) कल्पनाप्रधान लेख

(21) राष्ट्रप्रेम या विश्वप्रेम की कहानियाँ

(22) सरल एकांकी नाटक लिखना

(23) सरल परिच्छेदों का मातृभाषा से हिन्दी में तथा हिन्दी से मातृभाषा में अनुवाद ।

(24) तार, अभिनंदनपत्र, सूचना आदि लिखना ।

(25) साधारण विषय पर भाषण लिखना ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

4.5 भूलसुधार :

लेखन में कुशलता प्राप्त करने के लिए विद्यार्थी को पाठशाला में और कभी कभी घर पर स्वाध्याय के तौर पर थोड़ा बहुत लेखनकार्य करना होता है। विद्यार्थी के द्वारा लिखित रचना की जाँच शिक्षक को करनी पड़ती है। हर शिक्षक को प्रति सप्ताह सौ कापियाँ जाँचनी पड़ती है। विद्यार्थियों के लेखन कार्य में अनेक दोष पाये जाते हैं। विद्यार्थियों के लेखन में भाषासंबंधी, शैलीसंबंधी तथा विषय-संबंधी दोष पाये जाते हैं। अशुद्ध लेखनकार्य और इतनी अधिक कापियों की जाँच शिक्षक के लिए बोझ ही हैं। शिक्षक इस कार्य से घबराते हैं। शिक्षक को यह कार्य सबसे कठिन, शुष्क और अरोचक लगता है। शिक्षक बेचारे इस कार्य को बेगार समझकर बिना प्रेम के जाँच लेते हैं। अतः इससे विद्यार्थियों को कोई फायदा नहीं होता है। यह जाँचकार्य उतना कठिन नहीं है जितना माना जाता है। जाँचकार्य को सरल बना लेने के लिए कक्षा में मौखिक कार्य अधिक करना चाहिए, विद्यार्थियों को व्याकरण के नियमों का सम्यक् ज्ञान देना चाहिए तथा विषयों की रचनाओं का सामूहिक संशोधन करना चाहिए । ऐसा नहीं करने से 10वीं या 11वीं कक्षा के विद्यार्थी रचनाकार्य में ऐसी ही गलतियाँ करते हैं जो 5वीं या 6वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लेखनकार्य में पायी जाती हैं। हमें चाहिए कि प्रारंभिक कक्षाओं से ही विद्यार्थियों के दोषों का निवारण किया जाय और विद्यार्थियों में शुद्ध और सुंदर रचनालेखन के प्रति रुचि उत्पन्न की जाय । शुरू से ही विद्यार्थियों के लेखन के बारे में शिक्षकों को विशेष सतर्क रहना चाहिए और विद्यार्थियों को अशुद्ध लेखन को बुरी आदत में फँसने ही नहीं देना चाहिए । लापरवाही, आलस्य तथा शीघ्रता के कारण जो दोष होते हैं उनसे विद्यार्थियों को सावधान बना देना चाहिए । विद्यार्थी के दोषों का ख्याल उसे तुरंत देना चाहिए । कभी-कभी विद्यार्थी खुद अपने दोष निकाले या थोड़े होशियार विद्यार्थी अपने साथियों की कापियों से दोष निकाले तो शिक्षक का काम कुछ कम हो सकता है।

विद्यार्थियों की रचनाओं में निम्नलिखित प्रकार के दोष पाये जाते हैं :

(1) लिपिसंबंधी दोष (लिपि की शिक्षा के प्रकरण में इनके प्रकार तथा इनको शुद्ध करने के तरीके बताये गये हैं।)

(2) हिज्जे के दोष (लेखन की शिक्षा के प्रकरण में इनके प्रकार तथा ठीक करने के उपाय बताये गये हैं।)

(3) मुहावरों तथा शब्दों का अशुद्ध उपयोग

(4) व्याकरणसंबंधी दोष

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(5) विचारों की क्रमिकता का दोष

(6) परिच्छेदसंबंधी दोष

(7) अस्पष्ट अभिव्यक्ति दोष

(8) हकीकत दोप

(9) मातृभाषा के व्याकरण तथा शब्दभण्डार के कारण होने वाले दोप

(10) विरामचिह्नों के दोष

(11) वाक्यरचना संबंधी दोष

(12) हिन्दी के विशिष्ट प्रयोगों के कारण होती गलतियाँ ।

विद्यार्थियों के लेखनकार्य की जाँच करते वक्त निम्नलिखित सूचनों को ध्यान में रखने से शिक्षक का कार्य सरल हो सकता है।

(1) जाँच के लिए निम्नलिखित जैसे सांकेतिक चिह्न निश्चित किया जाय । अलबत ये चिह्न सभी विद्यार्थियों के साथ बहस करके ही निश्चित किया जाय। जैसे :-

X गलत विचार

परिच्छेद बनाओं

+ - अनावश्यक विस्तार

अक्षर या शब्द छूट गया

हि. हिज्जे की गलती

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

व्या. व्याकरण की गलती

ग. वा. गलत वाक्यरचना

शब्दों या अक्षरों को तोडकर लिखो

शब्दों या अक्षरों को मिलाकर लिखो

ऐसे संकेतचिह्नों से विद्यार्थी भलीभाँति परिचित हो जाय ऐसा करना चाहिए । विद्यार्थी इन्हें अपनी कोपी में लिख ले और उनको उपयोग से गलती सुधार का काम करें ।

2) नया लेखन प्रारंभ करने से पहले पिछले लेखन की सर्वसामान्य गलतियाँ श्यामपट्ट पर लिखकर उन्हें भलीभाँति समजायो जाय।

(3) लेखन लिखने के बाद विद्यार्थियों की फिरसे एक बार पढ़न की सूचना देनी चाहिए, जिससे वे अपने आपसे हुई गलतियों पर गौर से देख सकें और उन्हे सुधार सकें ।

(4) जिन विद्यार्थियों के द्वारा अपने लेखन में अत्यधिक गलतियों हुआ करती हो उनकी कापियों की जाँच उनकी उपस्थिति में ही की जाय और उन्हें भलीभाँति समझाया जाय ।

(5) व्याकरण के शिक्षण का शुद्ध लेखन के साथ अनुबंध किया जाय । ऐसे अनुबंध से व्याकरण शिक्षण भी साथ साथ होता है और व्यावहारिक रूप से होता है। ऐसा होने से सामासिक शब्दों को तोड़कर लिखने की, अनुस्वार और बिंदी की, हिज्जों की और कर्ता, क्रियापद के संबंधो की गलतियाँ कम हो जाएगी।

(6) विरामचिह्नों के दोषों को दूर करने के लिए उसका संबंध सस्वर वाचन से करें । सस्वर वाचन करते समय जो विद्यार्थी योग्य विराम स्थान पर जरूरी जगहों पर रुक कर पढ़ता है वह विरामचिह्नों का शुद्ध उपयोग भी कर सकता है ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(7) शिक्षक विद्यार्थियों के दोषों को स्वयं सुधार कर न लिखें । आगे के निश्चित किये हुए संकेतचिह्नों का ही उपयोग इसके लिए करें । साथ ही साथ विद्यार्थी अपनी भूल को समझकर सुधारकर दुबारा लिख ले यह देखना चाहिए। एक वाक्य में यदि अधिक गुलतियाँ हैं तो पूरा वाक्य अलग पन्ने पर सुधार करके लिखा जाना चाहिए ।

(8) हिज्जों की गलतियों को बिना समझे विद्यार्थी यंत्रवत् 5-10 दफा सुधारते रहते हैं। ऐसे औपचारिक कार्य से विद्यार्थी का कुछ भी फायदा नहीं होता । इसलिए भाषाशिक्षक को चाहिए कि न वह ऐसा कार्य स्वयं करे न विद्यार्थियों को करने दे। अपने लेखन के अंतिम दो-तीन पृष्ठों पर विद्यार्थी अपनी गलतियों की एक तालिका बना ले। ऐसा करने से स्वयं विद्यार्थी को पता चलेगा कि वह कौन-सी गलती बार बार कर रहा है ।

(9) इन बातों को म`नज़र रखते हुए शिक्षक निम्नलिखित बातों का भी ख्याल रखे ।

(1) दो शब्दों के बीच खाली जगह छोड़ना ।

(2) शब्द को अयोग्य स्थान पर नहीं तोड़ना चाहिए । जहाँ शब्द को तोड़ना पड़े वहाँ संधान चिह्न का अवश्य ही उपयोग किया जाय ।

(3) उचित शब्दों का उपयोग किया जाय ।

(4) विचार क्रमबद्ध रखा जाय ।

(5) विचारों के और मु ों के अनुसार परिच्छेद लेखन किया जाय ।

(6) परिच्छेद क्रमबद्ध बनाया जाय ।-

(7) थोड़ी जगह छोड़ कर परिच्छेद रचा जाय ।

(8) सर्वसाधारण अशुद्धियों का चार्ट बनाकर वर्ग में टाँगा जाय ।

(9) विद्यार्थी पर व्यक्तिगत ध्यान दिया जाय ।

(10) गलतियाँ बताते समय पूर्ण सहानुभूति बढ़ती जाय ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

4.6 पाठ आयोजन :

रचना पाठ आयोजन नोंध (निबंध)

प्रशिक्षणार्थी का नाम : .....

स्कूल का नाम : .....

दिनांक : ..... कक्षा : 9 तास : ..... समय : .....

विषय : हिन्दी विषयांग : आदर्श शिक्षक

पद्धति (1) ..... ☐ पद्धति (2) ..... ☐

सामान्य उद्देश्य

- विद्यार्थी विचार वहन के साधन के रूप में हिन्दी भाषा का ज्ञान प्राप्त करेगा ।
- विद्यार्थी सरल रूप में अपने विचारों को मौखिक रूप में अभिव्यक्त करेगा ।
- विद्यार्थी शुद्ध और सरल हिन्दी में अपने विचारों को लिखकर प्रगट करेगा ।
- विद्यार्थी की तर्कशक्ति और कल्पनाशक्ति का विकास होगा ।
- विद्यार्थी की शब्द समृद्धि में वृद्धि होगी ।

विशिष्ट उद्देश्य

- पूछे गये प्रश्नों के शुद्ध हिन्दी में उत्तर देगा ।
- अपरिचित शब्दों का परिचय प्राप्त करेगा ।
- अपनी भाषा में निबंधलेखन करेगा ।
- विद्यार्थी ध्यानपूर्वक श्रवण करेंगे ।

SHREE H.N. SHUKLA B.ED. COLLEGE-RAJKOT

विषयवस्तु	शिक्षक की प्रवृत्ति
गुरु के गुण : • धन हरने वाले नहीं लेकिन धन को हरने वाले, हृदय में स्थान प्राप्त करने वाले को गुरु कहते हैं ।	शिक्षक छात्र के समक्ष निम्न पंक्तियाँ प्रस्तुत करेगा । गुरवः बहवः सन्ति शिष्य वित्तापहारकाः । क्वचित् तु दृश्यते तत्र शिष्यचित्तापहारकाः ॥ अर्थात् धन या धन के हरने वाले गुरु बहुत से होते हैं, किन्तु चित या हृदय के हरने वाले गुरु क्वचित् प्राप्त होते हैं । शिक्षक इन पंक्तियों के आधार पर निम्नलिखित प्रश्न पूछेंगे । • प्रथम पंक्ति में गुरु का क्या लक्षण निर्देशित किया गया है ? • दूसरी पंक्ति में कौन सा गुण निर्देशि किया गया है ? • गुरु कैसा होना चाहिए ? आज हम आदर्श शिक्षक के बारे में पढेंगे ।
आदर्श शिक्षक **व्यक्तित्व :** वस्त्र परिधान, प्रभावोत्पादक व्यक्तित्व, आदर्श वक्ता.... सौंदर्य दृष्टि, सुघड़ता – (दृढ़ मनोबल) स्वस्थ शरीर	शिक्षक छात्रों से निम्नलिखित प्रश्नों को पूछेंगे । (1) आदर्श शिक्षक का वस्त्र परिधान कैसा होना चाहिए ? (2) आदर्श शिक्षक का व्यक्तित्व कैसा होना चाहिए ?

COLLEGE-RAJKOT

छात्र की प्रवृत्ति	मूल्यांकन
• छात्र पंक्तियों का श्रवण करेंगे और उनका भाषांतर करेंगे । • शिक्षक के पूछे हुए प्रश्नों के उत्तर देंगे ।	• छात्र ध्यानपूर्वक श्रवण करेंगे और प्रश्नों के उत्तरों से मूल्यांकन होगा ।
• छात्र आदर्श शिक्षक का वस्त्र परिधान - व्यक्तित्व आदि प्रश्नों के उत्तर देंगे ।	

COLLEGE-RAJKOT

विषयवस्तु	शिक्षक की प्रवृत्ति
गुरु के गुण : • वित्त हरने वाले नहीं लेकिन चित्त को हरने वाले, हृदय में स्थान प्राप्त करने वाले को गुरु कहते हैं ।	शिक्षक छात्र के समक्ष निम्न पंक्तियाँ प्रस्तुत करेगा । गुरुः बहवः सन्ति शिष्य वित्ताप हार का । क्वचित् तु दृश्य ते तत्र शिष्यचित्ताप हारका: ॥ अर्थात् वित्त या धन के हरने वाले गुरु बहुत से होते हैं, किन्तु चित्त या हृदय के हरने वाले गुरु क्वचित् प्राप्त होते हैं । शिक्षक इन पंक्तियों के आधार पर निम्नलिखित प्रश्न पूछेंगे । • प्रथम पंक्ति में गुरु का क्या लक्षण निर्देशित किया गया है ? • दूसरी पंक्ति में कौन सा गुण निर्देशि किया गया है ? • गुरु कैसा होना चाहिए ? आज हम आदर्श शिक्षक के बारे में पढ़ेंगे ।
आदर्श शिक्षक **व्यक्तित्व :** वस्त्र परिधान, प्रभावोत्पादक व्यक्तित्व, आदर्श वक्ता.... सौंदर्य दृष्टि, सुघड़ता – (दृढ़ मनोबल) स्वस्थ शरीर	शिक्षक छात्रों से निम्नलिखित प्रश्नों को पूछेंगे । (1) आदर्श शिक्षक का वस्त्र परिधान कैसा होना चाहिए ? (2) आदर्श शिक्षक का व्यक्तित्व कैसा होना चाहिए ?

SH... COLLEGE-RAJKOT

छात्र की प्रवृत्ति	मूल्यांकन
• विद्यार्थी शिक्षक के पूछे गये प्रश्न के उत्तर देंगे । • शिक्षक के लिखित गुणों का निर्देश करेंगे ।	• विद्यार्थी शिक्षक के गुण बताएँगे और पूछे हुए प्रश्नों के उत्तर देंगे ।

SHREE H.N.SHUKLA B.ED. COLLEGE-RAJKOT

हिन्दी भाषा के विभिन्न स्वरूपों की शिक्षा .....

विषयवस्तु	शिक्षक की प्रवृत्ति
• हिन्दी साहित्य का ज्ञान • हिन्दी साहित्य में अभिरुचि • सर्जनशक्ति • कुशल वक्ता • उदाहरण देने वाला • कृति का विवेचन करने वाला • विविध दृश्य-श्राव्यों उपकरणों का उपयोग करने वाला • मनोविज्ञान का अच्छा ज्ञान	• शिक्षक यहाँ कथन करके व्यावसायिक सज्जता के कई गुणों का निर्देश करेगा। जैसे – अध्ययन कार्य का अनुभव, हिन्दी साहित्य में अभिरुचि आदि। बाद में प्रश्न पूछेगा। • आप को कौन-सी पद्धति अच्छी लगती है ? कथन पद्धति या प्रश्नोत्तर ? • शिक्षक कौन से उपकरणों का उपयोग करते हैं ? • आप को क्या लाभ होते हैं ? • तुम्हें कैसा शिक्षक बनना पसंद है ? • आदर्श शिक्षक के अपने विचार बताइए। • आप कौन-सा व्यवसाय पसंद करेंगे ? क्यों ?

SHREE H.N.SHUKLA B.ED. COLLEGE-RAJKOT

छात्र की प्रवृत्ति	मूल्यांकन
• विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर देंगे । • विद्यार्थी श्रवण करेंगे । • विद्यार्थी आदर्श शिक्षक के व्यावसायिक सज्जता के लक्षण निर्देशित करेंगे । • कृष्णफलक पर लिखे हुए आदर्श शिक्षक के गुण विद्यार्थी अपनी नोंधपोथी में लिखेंगे ।	• विद्यार्थी आदर्श शिक्षक के व्यावसायिक सज्जता के लक्षण बताएँगे । • अपनी कल्पना के आदर्श शिक्षक का शब्दचित्र प्रस्तुत करेंगे । **मूल्यांकन :** शिक्षक मूल्यांकन प्रत में निम्न पंक्तियाँ रखेगा और उसका अर्थग्रहण करने को छात्रों से पूछेगा । (1) गुरु गोविंद दोनों खड़े काकौ लागू पाव । बलिहारी गुरु आप को गोविंद दियो बताय । (2) गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णु: गुरूर्देवो महेश्वर: । गुरू: साक्षात् परब्रह्म तस्मै "श्री गुरूवे नम:" ॥ (1) इन दोनों कणिकाओं में गुरू के बारे में क्या कहा है ? (2) गुरू को कैसा माना गया है ?
स्वाध्याय	
आपके परिचय वाले आदर्श शिक्षक पर निबंध लिखिए ।	

COLLEGE-RAJKOT

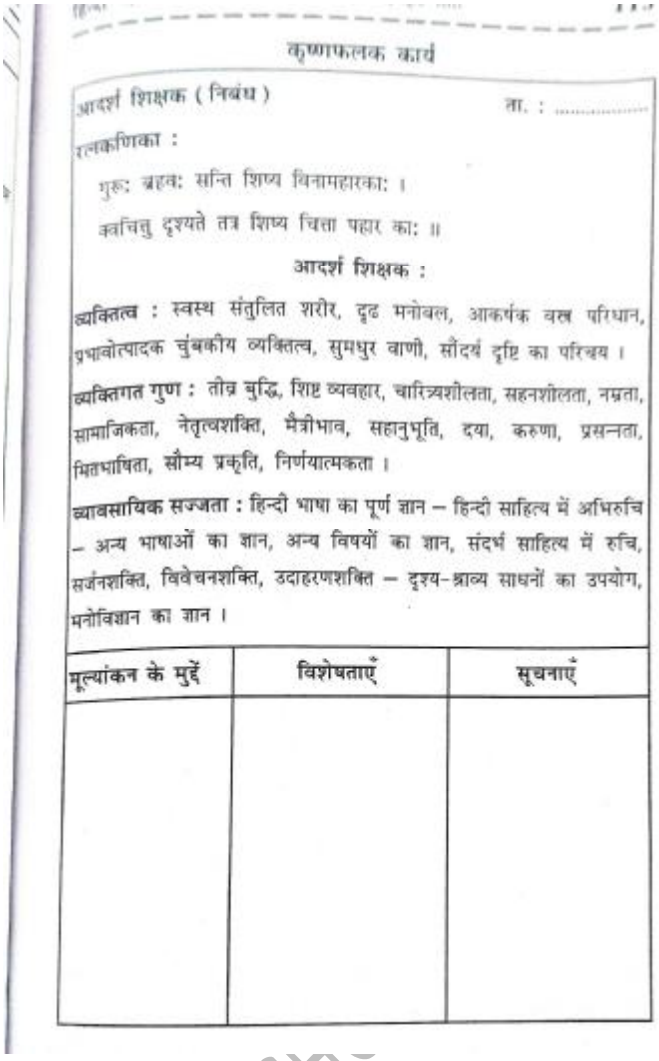

कृष्णफलक कार्य

आदर्श शिक्षक (निबंध) ता. : .....

रत्नकणिका :

गुरू: बहव: सन्ति शिष्य वित्तापहारका: ।
क्वचित्तु दृश्यते तत्र शिष्य चित्ता पहार का: ॥

आदर्श शिक्षक :

व्यक्तित्व : स्वस्थ संतुलित शरीर, दृढ मनोबल, आकर्षक वस्त्र परिधान, प्रभावोत्पादक चुंबकीय व्यक्तित्व, सुमधुर वाणी, सौंदर्य दृष्टि का परिचय ।

व्यक्तिगत गुण : तीव्र बुद्धि, शिष्ट व्यवहार, चारित्र्यशीलता, सहनशीलता, नम्रता, सामाजिकता, नेतृत्वशक्ति, मैत्रीभाव, सहानुभूति, दया, करुणा, प्रसन्नता, मितभाषिता, सौम्य प्रकृति, निर्णयात्मकता ।

व्यावसायिक सज्जता : हिन्दी भाषा का पूर्ण ज्ञान – हिन्दी साहित्य में अभिरुचि – अन्य भाषाओं का ज्ञान, अन्य विषयों का ज्ञान, संदर्भ साहित्य में रुचि, सर्जनशक्ति, विवेचनशक्ति, उदाहरणशक्ति – दृश्य-श्राव्य साधनों का उपयोग, मनोविज्ञान का ज्ञान ।

मूल्यांकन के मुद्दें	विशेषताएँ	सूचनाएँ

1.3 भाषायी कौशलों का अध्यापन

---

1. श्रवण कौशल

- **श्रवण की शिक्षा तथा मौखिक अभिव्यक्ति**

2.कथन कौशल

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

- **मौखिक अभिव्यक्ति के गुण**

3.वाचन कौशल

- **वाचन का महत्त्व**
- **वाचन शिक्षण की विधिया**
- **वाचन के प्रकार**

4.लेखन कौशल

- **लेखन का महत्त्व**
- **लिखना सिखाने की पद्धतियाँ**
- **अनुलेखन और श्रुतलेखन**

—----------

[1] श्रवण कौशल :

*** श्रवण की शिक्षा तथा मौखिक अभिव्यक्ति :**

अहिन्दीभाषी प्रान्तों में हिन्दी सीखने वाले विद्यार्थियों को हिन्दी भाषा का वातावरण नहीं मिलता है, परन्तु मातृभाषा का वातावरण हिन्दी सीखने में एक तरह से बाधक होता है। अतः हिन्दी भाषा के श्रवण की योग्य शिक्षा पर भार देना अत्यन्त आवश्यक हैं। हम सब जानते हैं कि भाषा सुनने से सीखी जाती हैं और किसी भी भाषा को सीखने का यह सबसे सरल तरीका भी है। प्रत्यक्ष विधि से किसी भी भाषा को सिखाने का जो प्रयत्न किया जाता है उसमें परोक्ष रूप से श्रवणशक्ति के विकास पर जोर दिया जाता है। सावधानपूर्वक सुनना या श्रवण करना भाषा शिक्षण का एक आवश्यक अंग है। सुनने की शिक्षा के विषय में हमारे स्कूलों में नहींवत् कार्य होता है। मौखिक कार्य तथा श्रवणशक्ति का विकास इन दोनों बातों की अवहेलना आजकल स्कूलों में की जा रही है। श्रवण की कुशलता का

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

जीवन में अत्यधिक महत्त्व है। हम यह भूल रहे हैं कि बालक की मौखिक अभिव्यक्ति, वाचन और लिखित अभिव्यक्ति की बुनियाद श्रवण की कुशलता पर आधारित होती है। प्रो. जे. जे. बेवर ने सिद्ध किया है हम जितना ज्ञान प्राप्त करते हैं उसकी 25% संकल्पनाएँ (concepts) श्रवण अनुभव (Audiotry Experience) पर आधार रखती हैं। श्रवण की कुशलता से बालक का उच्चारण, उसकी आवाज़, उच्चार शुद्धि और वाणीप्रवाह आदि पर सीधा असर होता है। साथ ही साथ शांत रहकर दूसरों की बातें सुनने की आदत का विकास होता है। लोकशाही में तथा आधुनिक वैज्ञानिक युग में अनेक स्थानों पर सुनने के प्रसंग उपस्थित होते हैं। जैसे कि रेड़ियो, सिनेमा, भाषण, संवाद, श्रुतलेखन, वादविवाद प्रतियोगिता आदि। इन सब में सफलतापूर्वक कार्य करने के लिए और सुनकर समझने के लिए सुश्रवण की तालीम स्कूल में पाना अत्यन्त जरूरी है।

उच्चारण शिक्षा के लिए पहली आवश्यकता यह है कि बालक शुद्ध उच्चरित भाषा सुने और प्रचुर मात्रा में सुने क्योंकि बालक अत्यंत ही अनुकरणकुशल होता है। वाणी की अपेक्षा श्रवणेन्द्रिय की तालीम जल्दी से दी जा सकती है। शुद्ध उच्चारणयुक्त भाषा सुनने से और विभिन्न नादों के अन्तर को समय समय पर स्पष्ट कर देने से बालकों के कान इस अन्तर का अनुभव करने के लिए अभ्यस्त हो जाते हैं। दूसरों के सुपाठ, भाषण अथवा अभिनय इत्यादि सुनने से, समझने की शक्ति भी उत्पन्न होती है और बढ़ती हैं। बालक भाषा का श्रवण करते समय निश्चेष्ठ रूप से भाषा के विभिन्न तत्त्वों को आत्मसात् करते रहते हैं। इसलिए व्याख्यान, नाटक, वादविवाद, कथनोपथकन, बातचीत आदि विभिन्न रूपों में अच्छी भाषा सुनने के बालक को प्रचुर मात्रा में अवसर देने चाहिए । वातावरण अनुकूलन होने से बालक बहुत-सी आवश्यक बातें अपने आप ग्रहण कर लेते हैं। पहले इस प्रकार का ज्ञान अस्पष्ट और धुंधला होता है, परंतु सुयोजित और व्यवस्थित अभ्यास पाठों के द्वारा वे सफलतापूर्वक विचारधारा को तथा शुद्ध उच्चारण और लहजे को भी ग्रहण कर सकते हैं ।

हमारी पाठशालाओं में 5वीं कक्षा से हिन्दी की शिक्षा का प्रारंभ किया जाता है। इस समय 5वीं कक्षा के बालकों की औसत उम्र 10- 11 वर्ष होती है। इस अवस्था वाले बालकों ने मातृभाषा को तो काफी मात्रा में अपना लिया होता है। उनकी ग्रहणशक्ति स्वतंत्र प्रयत्न द्वारा ज्ञानार्जनशक्ति, श्रवणशक्ति तथा भाषणशक्ति अधिकांश रूप में विकसित हो जाती है। मातृभाषा को अपनाते समय बालक को प्रारंभ में एक एक शब्द को अपनाते समय जितनी शक्ति का व्यय करना पड़ता है उतनी शक्ति का व्यय इस उम्र के बालक को अन्य भाषा सीखते समय नहीं करना पड़ता हैं। इस समय बालक इतनी योग्यता प्राप्त कर लेता है और उसका प्रयोग करने में समर्थ होता है। यह जरूरी है कि शिक्षक विद्यार्थियों को शब्द के शुद्ध उच्चार सुनाएँगे और सुनने के बाद विद्यार्थी शब्दों का उच्चारण करेंगें। अंग्रेजी में शुद्ध उच्चारण सिखाने के लिए लिंग्वाफोन की सहायता ली जाती है और अनेक रेकोर्ड बनाये गये हैं। हिन्दी में भी शुद्ध

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

उच्चारण की शिक्षा के लिए ऐसा प्रयत्न किया जाय यह अत्यंत जरूरी है। श्रवण के बाद ही भाषण आ सकता है। अतः श्रवणशक्ति का पूरा विकास हो यह जरूरी है।

*** श्रवण कौशल प्राप्ति की पद्धति :**

पोतदार समिति की रिपोर्ट में यह आशा रखी गयी है कि विद्यार्थी भारत के किसी भी प्रान्त के नागरिक की हिन्दी भाषा को सुनकर समझ सकेगा और आकाशवाणी द्वारा प्रसारित हिन्दी भाषा के कार्यक्रमों का मजा ले सकेगा। यह तभी संभव होगा जब हम विद्यार्थियों को इस के लिए घनिष्ठ और सुयोजित अनुभव दें। हमारी कक्षाओं में शिक्षक निम्नलिखित जैसे अनुभव श्रवणशक्ति की कुशलता के विकास के लिए बालकों को दे सकते हैं ।

(1) शिक्षक विद्यार्थियों को सूचना या आदेश हिन्दी भाषा में दें और यह देखें कि कौन इन्हें जल्दी से समझ सकता है ।

(2) महीने में एकाध तास श्रवण के लिए रखा जाय जिस में शिक्षक छोटा सा सरल काव्य का, सरल गद्यखण्ड का पठन करे और बालकों को मात्र श्रवण द्वारा उसके अर्थग्रहण या साराग्रहण का अभ्यास दै। (बालक आँखें मुंद कर सुनें तो और अच्छा होगा ।)

(3) अक्षरव्यक्ति (Aritculation), स्वराधात (Intonation), बल (Stress), शब्दवर्गीकरण, (Phrasing), गति (Speed), लहजा तथा स्पष्ट और शुद्ध उच्चारण को दृष्टि समक्ष रखकर टेपरेकोर्ड बनाकर विद्यार्थियों को सुनाया जाय ।

(4) कक्षा में शिक्षक किसी गद्यखंड या नाट्यखंड को उसके अर्थ को अनुसार, आवाज़ के आरोह-अवरोह के साथ भावपूर्ण रूप से आवाज़ की कोमलता, लय या वेग के साथ पढ़े और बालकों को अर्थ या भाव के अनुसार जो परिवर्तन होते हो उन्हें समझने का अभ्यास कराया जाय।

(5) विद्यार्थी ग्रामोफोन रेकोर्ड, टीवी, रेड़ियो या टेपरेकोर्ड सुनें और उसमें प्रास, शब्द-उच्चार, अर्थ आदि को समझें ।

(6) एक विद्यार्थी अपने अनुभवों को हिन्दी में बोलकर व्यक्त करे और अन्य विद्यार्थी उसे सुनते रहें ऐसा अभ्यास एकाध तास में दिया जा सकता है ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE RAJKOT

(7) गद्य शिक्षण या पद्य शिक्षण के समय शिक्षण के आदर्श वाचन या गान को अपनी पुस्तक बंद रखकर विद्यार्थी ध्यानपूर्वक सुनें ।

(8) अन्य विद्वानों के व्याख्यानों को सुनने के बाद विद्यार्थी उनका अनुकरण करें ।

(9) गीत या सरल गद्यखंडो का अभिनय पूर्वक वाचन सुनें और बाद में उनका अनुकरण करें ।

इस प्रकार के अनेक घनिष्ठ अनुभव शिक्षक बालकों की कक्षा और उनकी शक्ति को देखकर दे सकते हैं ।

—----------

[2] कथन कौशल :

—----------

*** मौखिक अभिव्यक्ति के गुण :**

अहिन्दीभाषी प्रदेशों में हिन्दी सिखाने वाले शिक्षकों को शुद्ध उच्चारण का महत्त्व समझना चाहिए। साथ ही हिन्दी बोलते समय वे स्वयं शुद्ध और स्पष्ट उच्चारणयुक्त भाषा बोलें यह अत्यंत जरूरी है। हिन्दी का व्यवहार आंतरप्रांतीय होगा तब उसमें प्रान्तीय भाषाओं के उच्चारण घुलमिल जायेंगे और हिन्दी भाषा के उच्चारण में अनेक दोष पैदा होगे। यह प्रवृत्ति एक दृष्टि से स्वाभाविक आवश्यक है, परंतु इसका अतिरेक हिन्दी भाषा के सामान्य कलेवर को खतरे में डालेगा। अतः हिन्दी भाषा के सर्वमान्य उच्चारणों को म`नज़र रखते हुए शिक्षक को बोलने का प्रयत्न करना चाहिए। अगर ऐसा नहीं होगा तो प्रान्तीय भाषाओं के साथ साथ प्रान्तीय हिन्दी पैदा हो जायेगी। हिन्दी भाषा भाषी खड़ी बोली का प्रयोग करने वाले नागरिक के उच्चार, लहजा तथा स्वरभार हमारे लिए आदर्श के रूप में रहने चाहिए। हिन्दी के उच्चारणों का ज्ञान शिक्षक को होना ही चाहिए ऐसा मानकर हम नीचे शुद्ध उच्चारण की शिक्षा के लिए उपयोगी सामग्री दे रहे हैं। हम सब जानते हैं कि कुदरत ने मनुष्य को वाणी के लिए कोई खास विशेष यंत्र नहीं दिया है । परंतु मनुष्य ने अपनी बुद्धि के उपयोग से वाणी का आविष्कार किया है। दाँत, जीभ, नासिका, ओंठ, गाल, तालु, आदि अंगों का मुख्य कार्य तो कुछ और है, परंतु मनुष्य ने इन सबके संबन्धित प्रयोग से स्वरयंत्र की सहायता लेकर वाणी का आविष्कार किया है।

अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी में मौखिक कार्य के लिए निम्नलिखित पद्धतियों का उपयोग किया जा सकता है ।

(1) प्रश्नोत्तर तथा वादविवाद

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(2) विद्यार्थी के सरल अनुभवों का वर्णन

(3) स्कूल की पढ़ाई से संबंधित प्रवृत्तियों का वर्णन

(4) विद्यार्थी के दैनिक जीवन से संबंधित स्थानों का वर्णन तथा व्यक्तिगत परिचय ।

(5) उत्सव तथा प्रदर्शिनी आदि का वर्णन

(6) खेल, मेले, त्यौहार आदि का वर्णन

(7) विद्यार्थी की निजी आवश्यकताओं के आधार पर बातचीत

(8) छोटे छोटे संवादो का अभिनय

(9) शब्दों के विविध खेल

(10) संभाषण

(11) सरल कहानी कथन

(12) पाठ्यपुस्तक के पाठों के आधार पर कथन

(13) कहानी के पात्रों में परिवर्तन करके परोक्ष कथन

(14) सरल गद्यखंडो का सारकथन

(15) रूपरेखा के आधार से कहानी कथन

(16) चित्रवाचन

(17) वक्तृत्व स्पर्धा

(18) समूह चर्चा

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(19) नाटकों का अभिनय

(20) सामूहिक कविता पाठ

(21) व्यक्तिगत बालगीत अभिनय

(22) टेलिफोन पर बातचीत

(23) अपरिचित व्यक्ति के साथ शिष्टाचारपूर्वक बातचीत

(24) आवृत्ति और पुनरावृत्ति

—----------

स्वाध्याय

—----------

1.निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तर उत्तर दीजिए ।

(1) भाषीय कौशल कौन-कौन से हैं? भाषा शिक्षण में श्रवण का महत्त्व स्पष्ट करके श्रवण कौशल विकसित करने के उपाय बताइए ।

(2) श्रवण कौशल के विकास के लिये आप कौन कौन सी प्रवृत्तियों का आयोजन करेंगे ?

(3) मौखिक अभिव्यक्ति की संकल्पना स्पष्ट करके मौखिक अभिव्यक्ति की शिक्षा के उ`श्य लिखिए ।

(4) हिन्दी भाषा शिक्षण में मौखिक अभिव्यक्ति की शिक्षा का क्या महत्त्व है ?

(5) मौखिक अभिव्यक्ति के गुण लक्षण क्या है ?

(6) मौखिक अभिव्यक्ति के विकास के लिये शिक्षक कौन- कौन सी प्रवृत्तियों का आयोजन करेगा ?

—----------

[3] वाचन कौशल :

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

वाचन एक ऐसा साधन है कि जिसके द्वारा विद्यार्थी मानव अर्जित ज्ञान की सम्पूर्ण विरासत में प्रवेश पा सकता है ।

– ल्यूइस

•वाचन का महत्त्व :

पढ़ना भाषा शिक्षण का मुख्य अंग है। यही नहीं, परंतु पाठशाला के मुख्य उ`शों में वाचन की शिक्षा देना कदाचित् सर्वप्रधान है। कारण यह है कि वाचन पर ही लिखने और बोलने आदि कलाओं का कौशल भी कुछ न कुछ निर्भर है। वाचन ज्ञानार्जन की कुंजी है। अच्छी वाचनशक्ति होने पर मनुष्य जटिल से जटिल विषय भी पढ़कर समझ सकता है तथा पठित अंश का सारांश बोलकर या लिखकर अभिव्यक्त कर सकता है। इसी कारण कदाचित संसार की सभी भाषाओं में 'पढ़ना' शिक्षा प्राप्त करने का पर्याय शब्द है। पढ़ने से ही मनुष्य का पूर्ण विकास संभव है। वाचन केवल पुस्तक को पढ़ना मात्र नहीं, परंतु पढ़कर उसे समझना, उसका अर्थग्रहण करना भी महत्त्वपूर्ण है। जब तक हम पठित अंश का अर्थ न समझते हों और सिर्फ लिपिवद्ध अक्षरों की ध्वनियों को व्यक्त करने का काम करते हों तब तक हम कह नहीं सकते हैं कि हम पढ़ते हैं। जितना शीघ्रतापूर्वक हम पढ़ने का कार्य करते हैं उतनी ही अधिक अर्थग्रहण करने की हमारी शक्ति में वृद्धि होती है। अतः शीघ्रतापूर्वक अर्थ समझते हुए अधिकाधिक मात्रा में पढ़ सकने की क्षमता बालकों में पैदा करना भाषा शिक्षक का प्रमुख कार्य है। इस दृष्टि से वाचन सिखाना साध्य भी हैं और साधन भी । वाचन के शुद्ध और यथोचित् अभ्यास पर बालक की समस्त मानसिक और भावात्मक उन्नति निर्भर हैं। शिक्षक का कार्य यह है कि वाचन की शिक्षा वह विद्यार्थियों को इस प्रकार दें कि जिससे वे पढ़ने में आनंद लेने लगें।

वाचन एक कला है। वाचन की कला सिखाना अत्यंत दूरूह है। वाचन की व्याख्या करते समय एक विद्वान ने इस प्रकार बताया है : "पूर्वश्रुत प्वनियों के प्रतीक लिपिबद्ध शब्दों को पढ़कर अर्थग्रहण करने की प्रक्रिया को वाचन कहते हैं ।" पढ़ने की शिक्षा के द्वारा ही हम अक्षरों, शब्दों अथवा वाक्यों को पहचान सकते हैं तथा उनमें अर्थ आरोपित कर सकते हैं और अंत में वाचन के प्रति रुचि उत्पन्न हो जाती है। अक्षरों अथवा वाक्यों की पहचान तो केवल एक अनिवार्य माध्यम हे जिसके द्वारा हम अपनी पढ़ने की इच्छा की पूर्ति करते हैं। आजकल वाचन का हमारे जीवन में बड़ा महत्त्व है। जीवन में ऐसे अनेक अवसर आते हैं जब हमें वाचन का आधार पल पल लेना पड़ता है। समाचारपत्रों का वर्तमान जीवन में एक प्रमुख स्थान बन गया है। शिक्षा के प्रसार के साथ साथ समाचारपत्रों का क्षेत्र तथा प्रसार और भी अधिक बढ़ेगा । वाचन का समुचित अभ्यास कराने से हमारे विद्यार्थी आगे जाकर समाचारपत्रों और

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED COLLEGE RAJKOT

पत्रिकाओं का प्रयोग करके उनसे लाभ उठा सकेंगे । सभा आदि में भाषण पढ़ने के लिए तथा घोषणा आदि के पठन के लिए वाचन का अत्यन्त महत्त्व है। सफल वाचक ही सफल वक्ता हो सकता है। एक दृष्टि से वाचन ज्ञानप्राप्ति के साथ साथ आनंदप्राप्ति का भी साधन है। अतः सुवाचन की शिक्षा विद्यार्थियों के भावि जीवन में सहायक सिद्ध होगी ।

*** वाचन शिक्षण की विधियाँ :**

वाचन शिक्षा की विधियों को जानने के पूर्व हमें वाचन की शिक्षा के उ`शों को समझ लेना चाहिए। हिन्दी भाषा की शिक्षा के उ`शों वाले अध्याय में हमने वाचन की शिक्षा के उ`शों की सूची दी है। इसके साथ एक पूरक सूची यहाँ देना हम उचित समझते हैं ।

(1) स्पष्ट और शुद्ध उच्चारण

(2) भावयुक्त वाणी का विकास

(3) भाषा के नादसौन्दर्य का विकास

(4) श्रवण की कुशलता का विकास

(5) ज्ञान की साधना

(6) मनोरंजन का साधन

(7) वाचन विवेक का विकास ।

इन बातों को म`नजर रखकर हमें वाचन की शिक्षा देने का प्रयत्न करना चाहिए ।

चार वर्ष तक हमारे विद्यार्थी अपनी मातृभाषा में वाचन करने की क्षमता प्राप्त करने के प्रयत्न करते हैं। 5वीं कक्षा में दाखिल होने पर वाचन की कुशलता के अनेक लक्षण हम उनमें पाते हैं । इसलिए प्रस्तुत अध्याय में वाचन की प्रारंभिक प्रक्रिया की चर्चा करना हम उचित नहीं समझते हैं, परंतु उस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप पैदा होने वाली

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE RAJKOT

वाचन शिक्षण की विभिन्न विधियों की चर्चा हम करेंगे जिससे हिन्दी भाषा के शिक्षकों को लाभ होगा। वाचन शिक्षण में निम्नलिखित विधियाँ प्रचलित हैं ।

(1) अक्षरबोध विधि (Alphabatic Method)

(2) ध्वनिसाम्य विधि (Phonetic method)

(3) देखो और कहो विधि (Look and Say Method), या शब्द विधि (Word Method)

(4) वाक्य विधि (Sentence Method)

(5) कहानी विधि (Story Method)

(6) सामूहिक पठन विधि (Group Reading Method)

(7) कविता विधि (Poetry Method)

(8) भाषा शिक्षणयंत्र विधि (Linguaphone Method)

(9) साहचर्य विधि (Correlated Teaching)

(10) अनुकरण विधि (Imitation Method)

*** वाचन (पठन) के प्रकार :**

वाचन-पठन की शिक्षा की चर्चा करते समय हमें वाचन के प्रकार देखने होंगे और बाद में उनकी भिन्नता के अनुरूप शिक्षण विधि की चर्चा होगी। वाचन के मुख्य दो प्रकार हैं (1) सस्वर वाचन, और (2) मौन वाचन ।

(1) सस्वर वाचन (Loud Reading):

सस्वर वाचन के दो भेद हैं। (1) व्यक्तिगत सस्वर वाचन, और

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(2) सामूहिक सस्वर वाचन । व्यक्तिगत सस्वर वाचन शिक्षक द्वारा तथा विद्यार्थियों के द्वारा भी हो सकता है। जोर-जोर से बोलकर शब्दात्मक वाचन को सस्वर वाचन कहते हैं। जब एक ही व्यक्ति सस्वर वाचन करता है तब हम उसे व्यक्तिगत सस्वर वाचन कहते हैं। एक से अधिक व्यक्ति जब साथ में या समुदाय में सस्वर वाचन करते हैं उसे सामूहिक वाचन कहते हैं। इसकी चर्चा इस प्रकरण में अन्यत्र की गयी है। वाचन की शिक्षा में विद्यार्थी के सस्वर वाचन का स्थान प्रमुख है । सस्वर वाचन का प्रभावोत्पादक होना अत्यंत जरूरी है। सस्वर वाचन को इस प्रकार संचालित करना चाहिए कि बालक साधारण गति से भावाभिव्यक्ति के साथ विरामादि का ध्यान रखते हुए, शुद्ध उच्चारण और आरोह-अवरोह के साथ इस प्रकार पढ़ सकें कि श्रोता उसके पाठ को बिना कठिनाई के सुनकर समझ सके । दोष पूर्ण सस्वर वाचन से श्रोता समुदाय प्रभावित न हो सकेगा और वाचन के प्रमुख उ`श की पूर्ति न हो सकेगी । सस्वर वाचन अपने आनंद के लिए और दूसरों के आनंद के लिए भी होता है । सस्वर वाचन का मतलब है स्वरों का उच्चारण करते हुए पढ़ना । वाचन की यह प्रथम अवस्था हैं । इस अवस्था में विद्यार्थी लिपिबद्ध अक्षरों को देखता है, पहचानता है, शब्दों को समझता है और अंत में उच्चारण भी करता है ।

पढ़ने की किया में आँखे बीच बीच में रुकती हुई आगे बढ़ती हैं। आँखों के इस रुकने के समय में पढ़ने का वास्तविक कार्य होता है। पढ़ने में ज्यों-ज्यों प्रौढ़ता आ जाती है त्यों त्यों इस चक्षुविश्रामों की संख्या कम होती हैं। सस्वर वाचन में मौन वाचन की अपेक्षा अधिक चक्षुविश्राम होते हैं और विश्राम का समय भी अधिक होता है। शिक्षकों को इस बात का सतत प्रयत्न करना चाहिए कि बालकों को ऐसा सप्रयास और मन्द चक्षुगति का अभ्यास न होने पाये जिस में आँख आगे बढ़कर फिर पीछे लौटती हैं। बालक सुन्दर रीति से अस्खलित रूप से अधिक चक्षुविश्राम किये बिना और रुके बिना पढ़ सके ऐसी परिस्थिति का निर्माण शिक्षक को करना चाहिए। वर्ग में शिक्षक वाचन की इन बातों के बारे में विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते है । विद्यार्थी वाचन की इस कला में योग्यता पायँ तथा दूसरों के लिपिबद्ध विचार ठीक तौर पर ग्रहण कर सकें ऐसी क्षमता विद्यार्थियों में उत्पन्न करना हमारा उ`श है ।

सस्वर वाचन की कसौटी के लिए शिक्षक और विद्यार्थियों को अपनी पुस्तकें बन्द करनी चाहिए और एक चित्त से पठन को सुनना चाहिए । वाचन की आवाज़ से सुनने वालों के चित्त पर कहाँ तक और कैसा असर उत्पन्न होता है उस पर ही पठन की सफलता का आधार है। ऐसा करने से सस्वर वाचन में दोष होंगे तो तुरंत ही पकड़े जा सकेंगे । तुतलापन, उच्चारण के दोष, अश्राव्य उच्चारण आदि अनेक त्रुटियाँ या दोष श्रवण करने वालों के ख्याल में तुरंत आ जायेंगे । सस्वर वाचन करते समय विद्यार्थी को वाचन मुद्रा (Posture and Gesture), अक्षर व्यक्ति (Articulation), शब्दोच्चारण (Pronunciation), सुध्वनि (Enunciation), बल (Emphasis), विराम (Pause), स्वरावरोह (Intonation), आदि का उदाहरणों द्वारा स्पष्ट ख्याल दिया जाना चाहिए ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

*** प्रवृत्ति :**

सस्वर वाचन की तालीम के लिए शिक्षक निम्नलिखित बार्ती पर ध्यान दें यह जरूरी हैं।

(1) विद्यार्थी चाचन करते समय व्यवस्थित ढंग से और सीधा खड़ा रहे और बिना किसी प्रकार की झिझक, संकोच या घबराहट के साथ पढ़े ।

(2) पुस्तक को हाथ में ढंग से पकडें ।

(3) पढ़ते समय विद्यार्थी अपनी नजर सिर्फ पुस्तक में ही न गाड दे, परंतु बार-बार यथा अवसर कक्षा पर भी नजर डालता रहे ।

(4) शब्दों या चाक्यों पर उंगली रखकर न पढ़ें ।

(5) वाचन करते समय विद्यार्थी ओंठो की निरर्थक फडफडाहट न करे ।

(6) पढ़ने और समझने की गति में तीव्रता लाये तथा पाठयविषय को विराम, गति, बल, लय तथा प्रवाहिता के साथ पढ़ें।

(7) पढ़ते समय बीच-बीच में वह रुक न जाय ।

(8) बिना अर्थ समझे गद्यखण्ड का भाव या जोम समझना कठिन है। इसलिए सस्वर वाचन के लिए जाने वाले अंश को पूर्ण रूप से समझा देने के बाद ही दिया जाय ।

(9) भाववाही वाचन के लिए आवाज़ के योग्य आरोह अवरोह के साथ विद्यार्थी पढ़ सक और वाणी को कोमल और जोमपूर्ण बनाये ।

(10) वाचन करते समय विद्यार्थी विरामचिह्नों के अनुसार योग्य स्थानों पर, योग्य मात्रा में रुक कर पढ़े ।

(11) विद्यार्थी योग्य गति के साथ पढ़े ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(12) विद्यार्थी ऐसी आवाज़ के साथ पढ़े कि कक्षा का हरएक विद्यार्थी भलीभाँति सुन सकें ।

(13) विद्यार्थी का वाचन स्वाभाविक हो ।

(14) विद्यार्थी के पढ़ने का ढंग भावानुकूल हो । विचारों की झलकवाचक के मुख पक भी दिखाई दें जिससे सुनने वालों पर भी इसका काफी प्रभाव हो । वाचन व्यवस्था को जल्दी से समझने के लिए एक चार्ट यहाँ देना हम जरूरी समझते हैं ।

(15) छपे हुए लेख साथ ही साथ वह हस्तलिखित लेख भी पढ़ सकें ।

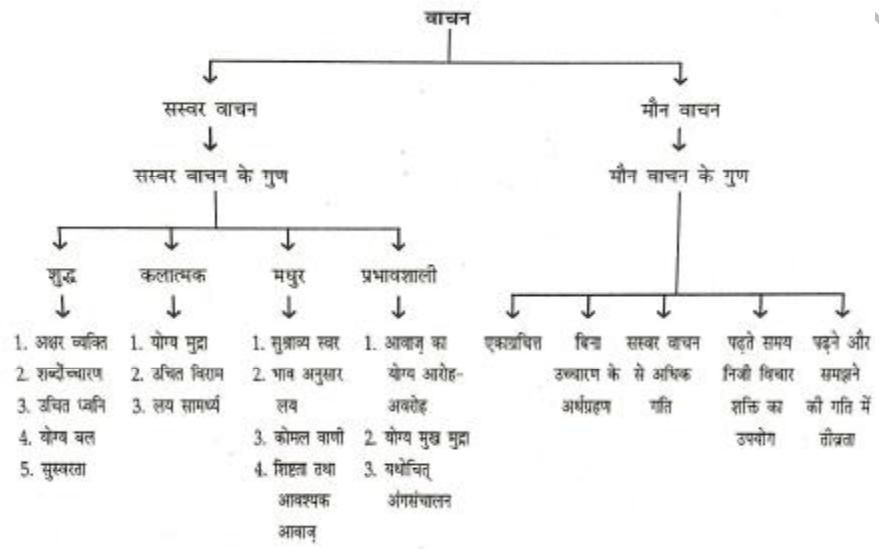

*** शिक्षक का आदर्श वाचन :**

विद्यार्थी का सस्वर वाचन शुद्ध, स्पष्ट, सुश्राव्य तथा भाववाही हो इसलिए उसके सामने शिक्षक को बार-बार आदर्श वाचन के नमूने पेश करना चाहिए । ऐसा करने से विद्यार्थियों की कई कठिनाइयाँ हल हो जाती हैं और उनके लिए वाचन सुगम बन जाता है । विद्यार्थी के द्वारा अगर आदर्श वाचन करवाया जाय तो वह कक्षा के सन्मुख खड़ा रहे ताकि अन्य विद्यार्थी उसका निरीक्षण कर सकें। आदर्श वाचन के समय सुनने वाले विद्यार्थियों की पुस्तकें बन्द करवायी जा सकती हैं। आदर्श वाचन में निम्नलिखित गुण होने चाहिए ।

(अ) वाचन सुस्पष्ट हो अर्थात् स्पष्ट अक्षरोंच्चारण, स्पष्ट शब्दोंच्चारण, सुध्वनि योग्य बल या विराम तथा योग्य स्वरावरोह के साथ पढ़ा जाय ।

(ब) आवश्यकता अनुसार रुक रुक कर पढ़ा जाय । विरामचिह्नों की ओर ध्यान दे कर पढ़ा जाय ।

(क) अध्यापक इतने जोर से पढ़ें कि वर्ग के सब विद्यार्थी उसकी आवाज़ को अच्छी तरह सुन सकें ।

(ड) वह भावानुकूल रीति से पढ़ें ।

(इ) वाचन की जिन कमियों से शिक्षक अपने विद्यार्थियों को दूर रखना चाहता हो उन कमियों से वह दूर रहे ।

(त) आवश्यकता अनुसार पाठ को दो बार भी पढ़ा जाय ।

(थ) जब शिक्षक वाचन करे उस समय विद्यार्थियों को सूचना दी जाय कि वे अर्थग्रहण करते रहे ।

(द) वाचन समाप्त हो जाने के बाद एक-दो प्रश्न पूछकर देखें कि विद्यार्थियों ने पाठ के विचारों को कहाँ तक ग्रहण किया है ।

(2) मौन वाचन :

भाषा की शिक्षा में जितना महत्त्व सस्वर वाचन का है उतना ही महत्त्व मौन वाचन या शांत वाचन का भी है। सस्वर वाचन में विद्यार्थियों को अभ्यास करने के बाद उनको मौन वाचन का अभ्यास देना चाहिए । वाचन के क्षेत्र में मौन वाचन का अधिक महत्त्व है। मौन वाचन ज्ञानार्जन की कुंजी है। वाचक खुद मौन वाचन खुद मौन रह कर पाठ के विषय का अध्ययन करता है। वाचक एकाग्रचित से पठित विषय का भावार्थ ग्रहण कर सकता है और अपनी समस्याओं का निराकरण कर सकता है। इसलिए मौन वाचन मनुष्यजीवन में अत्यंत उपयोगी है। विद्यार्थी को भावि जीवन में वाचन का अधिकांश कार्य मौन वाचन के द्वारा ही करना पड़ता है। पुस्तकालय में पढ़ने वालों का वाचन मौन होता है। मौन वाचन से ध्यान की एकाग्रता में वृद्धि होती है। इससे विद्यार्थी की आँखों को तालीम मिलती है। इससे वह शब्द को पढ़ने के बजाय शब्दसमूहों को पढ़ने लगता है। इस तरह मौन वाचन का प्रधान उ`श सारग्रहण और त्वरित अर्थग्रहण है। अध्यापक का यह कर्तव्य है कि अपने विद्यार्थियों का इस विषय में मार्गदर्शन करें और उनको मौन वाचन का तरीका दिखायें ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

*** मौन वाचन के गुण :**

(1) बिना उच्चारण किये पढ़ना तथा अर्थग्रहण करना ।

(2) पढ़ते पढ़ते विचारशक्ति का प्रयोग करना ।

(3) पुस्तक पढ़ने में मन लगाना तथा एकाग्रचित होकर पढ़ने का अभ्यास करना ।

(4) पाठ्य विषय को मन ही मन विराम, गति, लय तथा प्रवाह के साथ पढ़ना ।

सस्वर वाचन की शिक्षा देने के बाद मौन वाचन की शिक्षा देना चाहिए । मौन वाचन जब वास्तव में मौन हो तभी फलदायी बन सकता है। यह देखा गया है कि अधिकतर विद्यार्थी मौन वाचन करते समय ओंठों को फड़फड़ाते हैं। ओंठों की फड़फड़ाहट से अर्थग्रहण की गति मंद होती है। लेखक के साथ पाठक जब तादात्म्य का, एकातानता का समाधि रूप अनुभव कर सकता है तभी मौन वाचन सफल बनता है । विद्यार्थियों को पठन का उ`श मालूम होना चाहिए। इसलिए मौन वाचन शुरू होने के पहले उन्हें एक या दो हेतुप्रश्न, चर्चा के लिए कोई विषय या मु ा दिया जाना चाहिए । सो`श मौन वाचन का परिणाम अवश्य ही फायदा करता है, मौन वाचन देने से पहले ऐसे कठिन शब्द कि जिन का अर्थ विद्यार्थियों के ध्यान में नहीं आता हो उन शब्दों को समझा दिया जाय। अध्यापक को गद्यखंड का वाचन करते समय जितना समय लगे उससे डेढ़ा या दुगुना समय विद्यार्थियों को मौन वाचन के लिए दिया जाय । आवाज़ करनेवाले, गुनगुनाने वाले तथा ओंठ हिलाने वाले विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करते हुए उनको रोका जाय । सामान्तः मौन वाचन की बुनियाद 5वीं कक्षा से डाली जाती है। अहिन्दी भाषी प्रदेशों में हिन्दी भाषा के विद्यार्थियों को 5वीं कक्षा से अंत भाग से इसकी शिक्षा दी जा सकती है । मौन वाचन सूक्ष्म किंया है। अतः इस समय अध्यापक का यह फर्ज बनता है कि वे अपने विद्यार्थियों को इस विषय में पूरापूरा मार्गदर्शन दें । छोटे विद्यार्थियों को मौन वाचन का तरीका दिखायें और इस कला में उनका विकास करें। प्रारंभ में बालक मौन वाचन नहीं कर सकते हैं, क्योंकि वे सस्वर वाचन करने के आदि हो गये होते हैं। जिससे वे अपने ओंठो को निरर्थक हिलाते रहते हैं। इसलिए खास प्रयत्न द्वारा उनका मार्गदर्शन करना जरूरी है। मौन वाचन के समय विद्यार्थियों में आवश्यकता अनुसार शब्दकोष के प्रयोग की आदत डालना जरूरी है। मौन वाचन का अंतिम लक्ष्य गंभीर पठन या अध्ययन है । मौन अध्ययन ज्ञानोपार्जन का साधन है ।

—----------

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

स्वाध्याय

—----------

1. निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तर उत्तर दीजिए ।

(1) वाचन का अर्थ क्या है ? वाचन की संकल्पना स्पष्ट करते हुए वाचन कौशल का महत्त्व बताइए ।

(2) वाचन कौशल की संकल्पना स्पष्ट करते हुए वाचन शिक्षा के प्रमुख उ`श्य बताइए ।

(3) वाचन के प्रकार बताकर मौन वाचन की विशेषताएँ और महत्त्व बताइए ।

(4) सस्वर वाचन क्या है ? गद्य की शिक्षा में सस्वर वाचन का क्या महत्त्व है ?

(5) विद्यार्थियों की वाचन रुचि बढ़ाने के लिए शालाओं में कौन-सी प्रवृत्तियों का आयोजन करना चाहिए ?

—----------

[4] लेखन कौशल :

—----------

"Speaking maketh a ready man. But writing maketh an exact man."
– Bacon

***लेखन का महत्त्व :**

भाषा की प्रकृति मूलतः मौखिक है। मानव ने भाषण की कला बहुत वर्षों के प्रयत्नों के बाद प्राप्त की है। परंतु भाषण को देश और काल के बंधनो की रुकावट थी। इसलिए वह क्षणजीवी था। इन बंधनों से छुटकारा पाने के लिए मानव ने लिखने की कला का आविष्कार किया । लिखावट से मनुष्य ने ध्वनि का संबंध जोड़ा और ध्वनि के साथ किसी वस्तु, भाव या क्रिया का संबंध तो पहले से जोड़ा ही था। इस प्रकार लेखन मानव की अत्माभिव्यक्ति का एक नवीन सबल माध्यम तैयार हुआ।

विद्यालय की शिक्षा का चरम लक्ष्य लेखन है। लेखन द्वारा व्यक्ति अपने विचारों को दूसरों के सामने प्रगट करता है। भाषा की शिक्षा के द्वारा अध्यापक भाषा पर प्रभुत्व प्राप्त करने में बालकों की सहायता करता है। भाषा एक कला है। अतः इसको अपनाने में विशेष अभ्यास और अनुकरण की आवश्यकता पड़ती है। भाषाशिक्षा का उ`श विद्यार्थियों को लिखित अभिव्यक्ति में कुशलता प्राप्त करवाना है। हम चाहते हैं कि विद्यार्थी हिन्दी में लिखकर

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

अपने विचार सुचारु रूप में प्रकट कर सकें । भाषाशिक्षा में लिखने का भी महत्त्व है और उसकी हम उपेक्षा नहीं कर सकते हैं। कई शिक्षाशास्त्री बालकों को पहले पढ़ना सिखाना चाहिए ऐसा मानते हैं। मेड़म मोन्टेसोरी का मत है कि बालक को पढ़ने से पहले लिखना सिखाना चाहिए। शिक्षक की दृष्टि से दोनों बातें अपनी अपनी दृष्टि से अति महत्त्व की है। उसके लिए तो मध्यम मार्ग ही ठीक जान पड़ा है। लिखना और पढ़ना दोनों क्रियाएँ साथ-साथ चलनी चाहिए क्योंकि दोनों अन्यान्याश्रित हैं। इनका अभ्यास साथ-साथ देने से कर्मेन्द्रियों और ज्ञानेन्द्रियों में सामंजस्य स्थापित होता है ।

मुद्रण यंत्रों और टाईपराइटर का व्यवहार होने के पहले भारत में लेखन का बहुत महत्त्व था और पाठशालाओं में सुंदर लेखन पर विशेष ध्यान दिया जाता था । अक्षर मोती के दाने की तरह सुंदर हों, सुडौल हों तथा सुवाच्य हों इस पर खास भार दिया जाता था। सुंदर लेखन की (Caligraphy) कला में कई लोग पारंगत होते थे और सुंदर लेखन कड़ियों का पेशा था ।

*** लिखना - सिखाने की पद्धतियाँ :**

लिपि की शिक्षा के अध्याय में इस विषय पर थोड़ी चर्चा की गयी है। यहाँ लिखाना सिखाने का उ`श तथा उसकी विविध प्रचलित पद्धतियों के बारे में शिक्षकों के लिए उपयोगी सामग्री प्रस्तुत की गयी है। विद्यार्थियों को लिखना सिखाने से पहले उनमें लेखन के प्रति जिज्ञासा पैदा करनी चाहिए । लेखन के प्रति उनके मन में रुचि पैदा करनी चाहिए। विद्यार्थियों की रचनात्मक वृत्ति का उपयोग करते हुए सुंदर अक्षर लिखने के लिए उन्हें प्रवृत्त किया जा सकता है। लिखना सिखाने के हमारे निम्नलिखित उ`श हो सकते हैं ।

(1) देवनागरी लिपि की वर्णमाला के विभिन्न अक्षरों को लिखने में विद्यार्थी अस्त हो जाय ।

(2) अक्षरों का स्वरूप स्पष्ट, सुंदर तथा सुडौल हो ।

(3) अक्षर सुवाच्य होने के साथ साथ विद्यार्थियों कि लेखन गति में विकास हो और विद्यार्थी कम से कम समय में अधिक से अधिक लिख सके ऐसी क्षमता प्राप्त कर सकें ।

साथ ही निम्नलिखित जैसे महत्त्व के मु` शिक्षकों के लिए लेखन के आदर्श के रूप में रहने चाहिए ।

(1) सुवाच्य, सुडौल और सप्रमाण अक्षर ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(2) शुद्ध हिज्जे ।

(3) योग्य शब्दों की पसंदगी ।

(4) वाक्यों में पदों का योग्य उपयोग ।

(5) व्याकरण शुद्ध वाक्य रचना का प्रयोग ।

(6) भाववाही, वैविध्यपूर्ण तथा अर्थधन वाक्य का प्रयोग ।

(7) प्रत्येक पूर्ण विचार के लिए अलग-अलग परिच्छेद बनाना ।

(8) परिच्छेदों को क्रमबद्ध रूप से रखना ।

(9) पत्रलेखन कर सकना ।

(10) निमन्त्रण पत्र आदि का लेखन करना ।

(11) विरामचिह्नों का योग्य उपयोग करना ।

(12) लिखावट में स्पष्टता और गति लाना ।

(13) स्वतंत्र रूप से लिखना ।

इन उ`शों को ख्याल में रखकर अगर शिक्षक विद्यार्थियों को 5वीं कक्षा में लिखने की विविध पद्धतियों की सहायता से लिखना सिखाये तो सरलता से कार्य हो सकता है। अभ्यासक्रम के अनुसार 4 थीं कक्षा में ही विद्यार्थियों को नागरी लिपि की शिक्षा दी जाय ऐसी अपेक्षा रखी गयी हैं। इन कक्षाओं के शिक्षक लिपि शिक्षा की विविध पद्धति व सुचारु रूप से लिपि सिखाने में रुचि भी नहीं रखते हैं । अतः यह दशा हुई कि आजकल विद्यार्थियों के हस्ताक्षर अवाच्य और अस्पष्ट हो गये हैं। लिखना सिखाने में माँस पेशियों का संतुलन, अक्षरों की आकृति का निरीक्षण, लिखने में रुचि आदि पर जोर देना पड़ता है । लिखना सिखाने की मनोवैज्ञानिक पद्धतियों का हमें उपयोग करना

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

चाहिए। सामान्यतः स्कूलों में विद्यार्थियों को वर्णमाला के अक्षर सिखाये जाते हैं, बाद में शब्द और फिर वाक्य सिखाये जाते हैं। मनोविज्ञान की दृष्टि से यह प्रणाली दोषपूर्ण है। लिखना सिखाने की निम्नलिखित चार पद्धतियाँ प्रचलित हैं।

इसके अलावा लिखना सिखाने में ये बातें भी ध्यान देने योग्य हैं।

(1) शुरू से ही विद्यार्थियों के लेखन के बारे में अध्यापक सतर्क रहे तथा उनमें लिखाई की बुरी आदत ही न पड़ने दें। लिखाई के दोष को प्रारंभ में दुरस्त करा लें।

(2) माँ-बाप बालकों की सुंदर लिखावट के लिए सतर्क रहें तथा उनके सामने आदर्श लिखावट के नमूने पेश करें।

(3) अनुलेखन, सुंदरलेखन, श्रुतलेखन आदि लिखवाकर अच्छे अक्षर लिखने की आदत विद्यार्थियों में डालें।

(4) मातृभाषा की विशेष लिपि के ज्ञान के कारण विद्यार्थी नागरी लिपि लिखने में जो अशुद्धियाँ करते हैं उन्हें दुरस्त करने के प्रयत्न करें।

(5) विद्यार्थियों को लिखने के लिए कलम पकड़ने का सही ढंग सिखायें।

(6) लिखने के लिए बैठने का सही ढंग बताया जाय।

(7) लिखने का जो समय हो वह अधिक लंबा न हो।

(8) लिखने की सामग्री-काग़ज़, स्याही, तख्ती आदि अच्छे होने चाहिए।

(9) प्रारंभ में लिखने की गति रक ध्यान नहीं देना चाहिए।

(10) अक्षर टेढ़े-मेढ़े न होने पायें इसका ख्याल रखा जाय। अक्षर सीधे खड़े लिखे होने चाहिए।

(11) बच्चों की लिखाई की जाँच भलीभाँति करनी चाहिए। लिखाई के दोषों का निदान करके विद्यार्थियों की उचित सहायता करनी चाहिए।

(12) विद्यार्थी की लिखावट का अभ्यास चालु रहे इसलिए उसे प्रोत्साहित करना चाहिए।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(13) सुलेख विकास माप (Hand Writing Scale) के अनुसार विद्यार्थी के अक्षरों की जाँच करनी चाहिए ।

(14) विद्यार्थियों का घसीट करके लिखने की आदत को भूलाना चाहिए ।

*** अनुलेखन और श्रुतलेखन :**

प्रारंभिक कक्षाओं में विद्यार्थियों को लेखन के विविध अभ्यास देना चाहिए । आजकल लिखावट की दृष्टि से विद्यार्थियों में जो दोष पाए जाते हैं इनका कारण लेखनसंबंधी विविध अभ्यास विद्यार्थियों को नहीं कराया जाता है, यही है। ये अभ्यास अनुलेखन, सुंदर लेखन तथा श्रुतलेखन हैं। इन अभ्यासों के द्वारा भाषाकीय कुशलताओं पर काबू पाने में विद्यार्थियों की मदद की जा सकती है आजकल शिक्षकों ने इस अभ्यासों की ओर ध्यान देना छोड दिया है और इसीलिए भाषा की शिक्षा के क्षेत्र में काफी अंधाधूंधी मची है। इनका जितना महत्त्व शिक्षा में होगा, भाषाकीय कुशलताओं की प्राप्ति में विद्यार्थियों का उतना ही अधिक लाभ होगा। अब नीचे हम इनके बारे में शिक्षको की सहायता के लिए सूचन दे रहे हैं।

*** अनुलेखन (Transcription):**

विद्यार्थियों को किसी किताब के शब्द, वाक्य या परिच्छेद दिखाकर उनकी नकल करने के लिए कहा जाता हैं उसे अनुलेखन कहते हैं । अनुलेखन करना भी एक कला है और इसकी विशेष तालीम की जरूरत है। लिखने के पहले विद्यार्थी को शब्द या वाक्य पढ़ना पड़ता है, फिर उसकी आकृति को ध्यान में रखना पड़ता है। पहले सीखी हुई वर्णमाला से इसका संबंध जोड़ना पड़ता है और अंत में ध्यानपूर्वक लिखना पड़ता है। देखने में ये क्रियाएँ सरल लगती हैं, परंतु प्रारंभ करने वालों के लिए यह बड़ी पेचीदा किया हैं और बड़ी सतर्कता की इसमें जरूरत रहती है। बाद में विद्यार्थियों को किसी पुस्तक, समाचारपत्र अथवा किसी मासिक पत्रिका का एक अंश दिया जा सकता है । विद्यार्थी अनुकरण करते हुए उस अंश को लिखते हैं । छपे हुए अक्षरों का अनुकरण करने से इनके अक्षर अच्छे बनते हैं और वे सुंदर छपे हुए अक्षरों जैसा लेखन करते हैं । विद्यार्थियों की भाषा में शुद्धता आती है और उनके शब्द भंडार में वृद्धि होती है। शिक्षकों को समय बिताने की दृष्टि से इसका उपयोग नहीं करना चाहिए। परंतु विद्यार्थी में दिलचश्पी पैदा करते हुए शैक्षणिक दृष्टि से इसका उपयोग करना चाहिए ।

*** श्रुतलेखन (Dictation) :**

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

अनुलेखन के बाद श्रुतलेखन दिया जाना चाहिए । श्रुतलेखन शब्द ही इसका भाव स्पष्ट करता है सुनकर के लिखना । भाषा पर प्रभुत्व पाने की दृष्टि से यह अभ्यास अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण हैं। हमारे मतानुसार 5वीं, 6 वीं, और 7वीं कक्षाओं में श्रुतलेखन का अभ्यास दिया जाना चाहिए । इस अभ्यास में विद्यार्थी गद्यांश सुनते हैं, फिर याद रखते हैं बाद में लिपि संकेतों का स्मरण करते हैं और अंत में लिखते हैं तथा लिखने के बाद में ध्यानपूर्वक वाचन करते हैं। प्रथम दृष्टि से सरल दिखाई पड़नेवाला यह अभ्यास कितना पेचीदा हैं इसका ज्ञान हमें इन क्रियाओं का ध्यानपूर्वक पृथक्करण करने से होता है। श्रुतलेखन से विद्यार्थियों की श्रवण की किया में सावधानता आदी हैं और अध्यापक जो कुछ बोलता है उसे विद्यार्थी ध्यानपूर्वक सुनते हैं । विद्यार्थियों की लिखने की गति बढ़ती है। विद्यार्थी वाक्यों का योग्य विभाजन करना सीखता है। विद्यार्थियों के हिज्जे सुधरते हैं। उनकी श्रवणशक्ति की कसौटी होती है तथा उनके अक्षरों में सुंदरता तथा स्पष्टता आती है ।

विद्यार्थी पाठ्यपुस्तक के जिस अंश को सीख गये हैं उसमें से किसी एक अच्छे परिच्छेद को श्रुतलेखन के लिए पसंद करना चाहिए। जिस अंश को अध्यापक श्रुतलेखन में लिखवाना चाहता हो उसकी सूचना एक सप्ताह से पहले दें। परिच्छेद न तो अधिक कठिन होना चाहिए, न अत्यंत सरल । विद्यार्थियों को श्रुतलेखन लिखाने के पहले कक्षा के सामने एक बार सामान्य गति से यति और विराम का ध्यान रखते हुए पढ़ जाना चाहिए । विद्यार्थी उस समय शांत चित्त से परिच्छेद का श्रवण करें, बाद में शिक्षक परिच्छेद को स्पष्ट आवाज़ से धीरे-धीरे पढ़ते हुए विद्यार्थियों को लिखाए। यह ध्यान रखना चाहिए कि शिक्षक को स्पष्ट तथा शुद्ध उच्चारण करना चाहिए और वाक्य के अंशो को एक ही बार बोलना चाहिए । श्रुतलेखन लिखाते समय अगर अध्यापक वाक्यांश को दुहराएगा को विद्यार्थी इसके आदि हो जायेगे और उनको श्रुतलेखन से कोई फायदा नहीं होगा। श्रुतलेखन लिखा चुकने के बाद परिच्छेद का दुबारा सामान्य गति से वाचन करना चाहिए। इस समय विद्यार्थी लिखित अंश को ठीक करेंगे। बाद में एकबार विद्यार्थियों को अपने आप परिच्छेद का वाचन करने के लिए छोड़ दिया जाय ।

विद्यार्थियों के द्वारा लिखे गये परिच्छेद का संशोधन करने के विविध तरीके हैं। इनमें से सुविधा के अनुसार किसी एक तरीके को अपनाया जाय ।

(1) परिच्छेद को श्यामपट्ट पर सुवाच्य ढंग से लिखकर रख दिया जाय ।

(2) विद्यार्थी श्यामपट्ट से देखकर स्वयं अपनी भूलों के नीचे लकीर खींचे ।

(3) अध्यापक वर्ग के विद्यार्थियों को बारी-बारी से अपने पास

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

बुलाए और विद्यार्थी की भूलों को उनके सामने दिखाए।

(4) विद्यार्थियों से कहा जाय कि वे एक दूसरे की नोटबुक ले लें और भूलों के नीचे लकीर खीचें ।
(5) होशियार विद्यार्थी तीन चार विद्यार्थियों की भूलें निकालें ।

(6) भूलों का संशोधन करते समय भूलों के नीचे लकीर खींचीं जाय अन्यथा कई विद्यार्थी हेतुपूर्वक गलत स्थानों पर लकीर खींचेंगे ।

श्रुतलेखन का इस प्रकार संशोधन हो जाने के बाद विद्यार्थी को अपनी नोटबुक वापस देना चाहिए और उससे कहा जाय कि वह अपनी भूलों को ध्यानपूर्वक देख लें। भूलों को दो-चार बार ठीक ढंग से लिखवाया जाय । परिच्छेद के साथ साथ कठिन हिज्जे वाले शब्द भी लिखवाए जा सकते हैं। बाद में हिज्जे की दृष्टि से तथा वाक्यरचना की दृष्टि से विविध प्रकार के खेल खेले जा सकते हैं। लिपि संशोधन तथा हिज्जों को सुधारने में रुचि पैदा करने के लिए ऐसे खेल उपयोगी हो सकते हैं ।

—----------

स्वाध्याय

1 निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तर उत्तर दीजिए ।

(1) लेखन कौशल की संकल्पना स्पष्ट करते हुए लेखन कौशल का महत्त्व बताइए ।

(2) विद्यार्थियों के लेखन कौशल के विकास के लिए हिन्दी के शिक्षक के नाते किन किन विशेष प्रकार की प्रवृत्तियों का आयोजन करेंगे ?

2 निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त में उत्तर दीजिए ।

(1) शुद्ध लेखन या आदर्श लेखन के लक्षण सूचित करें ।

—----------

1.4 निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

—----------

1. निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षा का अर्थ

2. निदानात्मक शिक्षा का आधुनिक रूप

3. निदानात्मक शिक्षा की विधि

4. उपचारात्मक शिक्षा

5. कक्षा में पिछड़ेपन के कारण

6. उपचारात्मक शिक्षा द्वारा उपाय

7. हिन्दी भाषा में पिछड़ेपन के कारण

8. निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षा के लाभ

• स्वाध्याय

—----------

1. निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षा का अर्थ :

शिक्षा के क्षेत्र में मनोविज्ञान की एक विशेष देन है। मनोविज्ञान ने वैयक्तिक विभिन्नताओं को विशेष महत्त्व प्रदान किया है। सभी बच्चें समान रूप से नहीं सीखते हैं। बच्चे शीघ्र ग्रहण कर लेते हैं। शिक्षक द्वारा पढाई पाठ्यवस्तु को कुछ कुछ देर से तथा कुछ बिलकुल ग्रहण नहीं करते । आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान के इस युग में यह आवश्यक समझा जाता है कि बच्चें जो नहीं समझ पाते उसके स्पष्ट कारण जानने चाहिए और फिर उन कारणों को दूर करते हुए शिक्षण करना चाहिए । बच्चों की सीखने सम्बन्धी कठिनाइयों का ज्ञान प्राप्त करने की किया को निदानात्मक शिक्षण (Diagnosis Teaching) तथा इन कठिनाइयों को दूर करते हुए शिक्षण करने को उपचारात्मक शिक्षण (Remedial Teaching) कहते हैं । अतः यह कहा जा सकता है कि निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षण एक ही प्रक्रिया के दो पहलू हैं।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

2. निदानात्मक शिक्षा का आधुनिक रूप :

छात्रों की कठिनाइयों का निदान प्राचीन काल से होता आ रहा है। गुरु लोग छात्रों की परीक्षा लेकर उनकी अशुद्धि का पता "क्यों" व "कैसे" द्वारा लगाते थे तब उस अशुद्धि को दूर करते थे। यह तरीका निरीक्षण और प्रश्नोत्तर तक ही सीमित था। विज्ञान के इस युग में अशुद्धियों के कारणों का पता लगाने के लिए वैज्ञानिक विषयों का प्रयोग किया जाता है।

हिज्जे की अशुद्धियों में छात्र अनेक गलतियाँ करते हैं । प्राचीन काल में इन अशुद्धियों का सिर्फ एक ही कारण माना जाता था कि बच्चें ध्वनियाँ एवं उनकी लिपि का स्पष्ट ज्ञान नहीं रखते थे । इसी कारण को दूर करने का प्रयास किया जाता था। आज वैज्ञानिक विधियों के द्वारा अनेक कारण शिक्षकों ने खोज निकाले हैं। जैसे

- अध्यापक के अशुद्ध उच्चारण, उनके बोलने की गति तीव्र होना, निम्न स्वर में बोलना, उनके व्यवहार में सहानुभूति का अभाव होना।
- विषयसामग्री का बालकों के स्तर से ऊँचा होना, अपरिचित शब्दों की बहुलता, विषयसामग्री बच्चों की रुचि के अनुकूल न होना।
- छात्रों का अस्वस्थ होना, उनके श्रवणतन्त्र का खराब होना, ध्वनि तथा अक्षरों का स्पष्ट ज्ञान न होना, छात्रों के उच्चारण का अशुद्ध होना । छात्रों द्वारा जल्दबाजी करना ।
- इनके साथ ही बालक का घरेलू वातावरण, विद्यालयी वातावरण, बालक का सामाजिक वातावरण, राजनीतिक वातावरण आदि अनेक कारण भी हो सकते हैं ।

3. निदानात्मक शिक्षा की विधि :

निदानात्मक शिक्षा की विधियों में निरीक्षण, संचित अभिलेख तथा निदानात्मक परीक्षाएँ आदि आती हैं। बालकों की वर्तनी सम्बन्धी कठिनाईयों का पता लगाने के लिए अनेक प्रकार के यन्त्रों का प्रयोग किया जाता है। शिक्षक को पहले अपनी गलतियाँ तथा बाद में बालकों की गलतियाँ का पता लगाना चाहिए । शिक्षक पहले अपने द्वारा बोले हुए भापाखण्ड को टेप कर लेगा तथा यह देखेगा कि उसके बोलने की गति, स्वर तथा उच्चारण शुद्ध रूप में है तो

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE RAJKOT

अथवा नहीं। यदि गलतियाँ हैं को उनको दूर करना चाहिए । इसी प्रकार छात्रों की कठिनाईयों तथा गलतियों का पता लगाकर उन्हें दूर करने का प्रयास करना चाहिए ।

विषय सम्बन्धी कठिनाईयों का पता लगाने के लिए सामग्री एवं शब्दों से सम्बन्धित विभिन्न परीक्षाएँ कराई जाती है तथा छात्रों की कठिनाईयों का पता लगाया जाता है। बच्चों को अपनी कमियों का पता लगाने के लिए उनके हाव-भाव देखने चाहिए। बच्चों को सामने बैठाकर उनसे कुछ पूछा जा सकता है तथा उनकी कमियों का पता लगाया जा सकता है। भाषा प्रयोगशालाएँ (Linguistic Laboratories) तथा उपचार गृहों (clinics) का निर्माण इन दोषों का पता लगाने के लिए किया जाता है। इनसे छात्रों की श्रवण सम्बन्धी कठिनाइयों तथा भाषा की अन्य विभिन्न कठिनाइयों का पता लगाया जा सकता है।

निरीक्षण द्वारा बच्चों की लिखित कठिनाईयों तथा उच्चारण व हिज्जे की कठिनाईयों का पता लगाया जा सकता है। साथ ही बालकों के संचित अभिलेखों के द्वारा भी उनकी कमियों का पता लगाया जा सकता
है ।

यदि सीखने में बाधा उत्पन्न करनेवाले कारक नहीं हैं तो सामाजिक तथा राजनीतिक कारणों को देखना होगा ।

4. उपचारात्मक शिक्षा :

जिस प्रकार एक डॉक्टर या वैद्य शरीर में उत्पन्न विकारों को चिकित्सा द्वारा दूर करता है उसी प्रकार यदि शिक्षा अभिगम प्रक्रिया में उत्पन्न दोषों के कारण शिक्षासम्बन्धी विकार उत्पन्न हो जाते हैं। ये विकार उपचारात्मक अथवा चिकित्सात्मक अध्यापन द्वारा ही दूर किये जा सकते हैं । शिक्षक को इन विकारों को जन्म देनेवाले कारों की जानकारी होना अति आवश्यक है। कक्षा शिक्षण में सभी छात्र एक समान बुद्धिवाले तथा एक समान विषय को ग्रहण करनेवाले नहीं होते । अतः शिक्षक को छात्रों की सहायता हेतु चिकित्सात्मक अध्यापन करना चाहिए ।

"चिकित्सात्मक अध्यापन का प्रमुख कार्य है दोषपूर्ण अध्ययन एवं अध्यापन के प्रभाव को दूर करना। इसका मुख्य लक्ष्य हो इन दोषों और दोषों के कारणों को खोजना व कमोजोरियों का निराकरण करना व दुरध्यास को समाप्त करना ।"

– ब्लायर जी. एम.

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED COLLEGE RAJKOT

सामान्य अध्यापन के साथ-साथ चिकित्सात्मक अध्यापन भी कर दिया जाए । उपचारात्मक अध्यापन का क्षेत्र विस्तार क्षेत्र त्रुटियों के निराकरण तक सीमित नहीं है। यह एक संकुचित दृष्टिकोण है। उपचारात्मक शिक्षण का लक्ष्य छात्रों की भाषा क्षमता में वृद्धि करना भी है। अतः उपचारात्मक शिक्षण का अर्थ है त्रुटियों का निराकरण और साथ ही सफल अध्यापन द्वारा भाषा-क्षमता में वृद्धि, जिससे छात्र को शुद्ध भाषा लिखना, बोलना और पढ़ना आ सके ।

निदान का महत्त्व नगण्य है लेकिन उसके अनुसार बच्चों का उपचार नहीं किया जाता है। निदान (Diagnosis) की क्रिया में केवल बच्चों की कठिनाईयों का पता लगाया जाता है और उपचारात्मक शिक्षण में इन कठिनाईयों को दूर करते हुए शिक्षण किया जाता है । वर्तमान समय में निदान का रूप विस्तृत हो गया है। आज उपचारात्मक शिक्षण अनेक प्रकार से किया जाता है, जैसे अशुद्धियों का सामूहिक रूप से निराकरण करना, व्यक्तिगत रूप से निराकरण करना, उपचार गृहों में ले जाकर सामूहिक या व्यक्तिगत रूप से ।

यदि छात्रों को ध्वनियों एवं अक्षरों अथवा शब्दों का स्पष्ट ज्ञान नहीं है तो छात्रों को उपचार गृह में ले जाया जायेगा। वहाँ पर शिक्षक टेप रेकॉर्डर पर यथा ध्वनियों को चढ़ा देगा तथा बच्चों को आदेश देगा । शिक्षक अवलोकन करेगा तथा यह पता लगायेगा कि कौन छात्र किस ध्वनि को किस रूप में लिखता है। तब व्यक्तिगत शिक्षण द्वारा उन अशुद्धियों को दूर करेगा। इस प्रकार शिक्षक विभिन्न कठिनाईयों का ध्यान रखते हुए अपनी शिक्षण विधि से परिवर्तन करेगा।

5. कक्षा में पिछड़ेपन के कारण :

बर्ट के अनुसार एक बालक जिसकी शिक्षा लब्धि ८५ से कम है, पिछड़ा बालक कहलाता है। ऐसा बालक अपनी आयु के अनुसार सामान्य कार्य करने में असमर्थ रहता है। शिक्षक को इन पिछड़ेपन के कारणों का पता लगाकर इसे दूर करना चाहिए । पिछड़ेपन के निम्नलिखित कारण हैं ।

• मंद बुद्धि :

मंद बुद्धि बालक के पास प्रतिभाव व स्मरणशक्ति का अभाव होता है। मंद बुद्धि बालक सामान्य से सदैव पिछड़ा रहता है । ऐसे छात्रों को खोजना आवश्यक है। मंद बुद्धि बालकों की छोटी-छोटी टोली बनाकर उसकी शिक्षा की व्यवस्था की जाये तथा शिक्षण विधि रोचक बनाई जाए।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

• **अस्वस्थता :**

अस्वस्थता का प्रभाव बालक की स्मृति, अवधान एवं मेहनत पर पड़ता है । अस्वस्थ बालक कक्षा में पिछड़ जाते हैं ।

• **शारीरिक दोष :**

शारीरिक दोष भी बालक के पिछड़ेपन का महत्त्वपूर्ण कारण है। जैसे - कम सुनना, दृष्टि कम होना, हकलाना, तुतलाना, आदि । बर्ट के अनुसार 9 प्रतिशत बालकों के पिछड़ेपन का कारण उनका शारीरिक दोष होता है। शिक्षक को इस ओर ध्यान देना चाहिए ।

• **स्वभाव दोष :**

स्वभाव दोष के कारण भी पिछड़ापन होता है। जिन विद्यार्थियों का स्वभाव क्रोधी, चंचल, झेंपु, सुस्त आदि होता है, उन छात्रों का अन्य छात्रों के साथ उचित समायोजन नहीं हो पाता है।

• **ुटिपूर्ण अध्यापन :**

त्रुटिपूर्ण अध्यापन के कारण भी बालकों के मस्तिष्क पर त्रुटिपूर्ण संस्कार पड़ जाते हैं । यहि शिक्षक स्वाध्याय, आत्म-चिन्तन एवं परिश्रम करता है तो छात्रों की बहुत सी समस्याओं का निराकरण हो जायेगा। त्रुटिपूर्ण अध्ययन बालक के पिछड़ेपन का कारण बन जाता है। ब्लायर के अनुसार "चिकित्सात्मक / उपचारात्मक अध्यापन वास्तव में अच्छे शिक्षण को ही कहते हैं। यह छात्र को अपने स्तर व क्षमताओं के अनुसार कार्य करने की प्रेरणा प्रदान करता है। इसका लक्ष्य है त्रुटियों के कारणों को खोजना व बालक की रूचियों व आवश्यकता के अनुसार पढ़ना ।

• **दूषित वातावरण :**

बालक के पिछड़ेपन पर बालक के घर व विद्यालय के वातावरण का प्रभाव पड़ता है। बर्ट के एक अध्ययन अनुसार 12% बालक घर के दूषित वातावरण तथा 8% बालक विद्यालय के दूषित वातावरण के कारण पिछड़ गये थे ।

• **हीन भावना :**

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

यदि बालक हीन भावना से ग्रस्त है, जैसे माता-पिता का स्नेह न मिलना, इकलौते बालक को अधिक प्यार मिलना, शिक्षक का कठोर व्यवहार, बालक का उपहास करना, बुरी संगत आदि कारण भी बालक के पिछड़ेपन के कारण बनते हैं। अतः बालक ही हीनता की भावना को सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार द्वारा कम किया जा सकता है।

- **दुरभ्यास :**

कुछ बालकों में अवांछनीय आदतें पड़ जाती हैं। जैसे गा गा कर पढना, प्रत्येक कार्य को असावधानी से करना, पाठ में रुचि न लेना आदि के कारण बालक पिछड़ जाता है ।

हिन्दी-शिक्षण में उपचारात्मक शिक्षण लिखित कार्य, मौखिक अभिव्यक्ति, सस्वर पाठ, मौन पाठ, वर्तनी, उच्चारण आदि को देखकर किया जा सकता है। कभी कभी साधारण निरीक्षण से उपचारात्मक शिक्षण के स्थल स्पष्ट दिखाई देने लगते हैं। हिन्दी भाषा-शिक्षण में प्रारम्भ से ही लेखन वाचन आदि की शुद्धता पर बल देना चाहिए तथा इसके लिए उपचारात्मक शिक्षण करना चाहिए ।

6. कक्षा में पिछड़ेपन के कारणों का उपचारात्मक शिक्षा द्वारा निराकरण करना :

- उपचारात्मक शिक्षा बालकों की छोटी-छोटी टोली बनाकर करना चाहिए तथा बालकों की व्यक्तिगत सहायता भी करनी चाहिए ।
- बालकों को रोचक ढंग से पढाना चाहिए ।
- बालकों को निरन्तर अभ्यास कराना चाहिए ।
- बालकों के साथ सहानुभूति एवं प्रोत्साहित करने वाला व्यवहार करना चाहिए ।
- बालक की भावना ग्रंथियों को दूर करना चाहिए ।
- पारिवारिक व विद्यालय के दूषित वातावरण का पता लगाकर उसे उचित बनाने का प्रयास करना चाहिए ।
- बालकों को अधिक दण्ड नहीं देना चाहिए ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

- बालकों को उनकी सफलता में विश्वास दिलाना चाहिए ।
- बालकों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं का पता लगाना चाहिए। शिक्षक को इन विभिन्नताओं का पता लगाकर वैसा ही व्यवहार उनके साथ करना चाहिए ।

7. हिन्दी भाषा ज्ञान के क्षे में पिछड़ेपन के कारण :

भाषा एक कला है। इस कला को सीखने के लिए भी अन्य कलाओं के समान प्रयास करना पड़ता है। हिन्दी भाषा ज्ञान के क्षेत्र में उच्चार (Pronunciation), वर्तनी (Spelling), वाचन (Reading) सम्बन्धी त्रुटियाँ हो सकती है। जिनका निवारण करना अनिवार्य है । अनूकूल आदर्श परिस्थितियों के अभाव के हिन्दी भाषा शिक्षक विषयक विकार उत्पन्न हो जाया करते हैं और उन्हें उपचारात्मक शिक्षण द्वारा ही दूर किया जा सकता है ।

8. निदानात्मक एवं उपचारात्मक शिक्षा के लाभ :

- बालकों की सीखने सम्बन्धी कठिनाईयों का ज्ञान प्राप्त करना ।
- अध्यापक के उच्चारण, बोलने की गति तथा बोलने के स्वर का पता चल जाता है ।
- विषयसामग्री बालकों के अनुरूप है अथवा नहीं इसका पता चल जाता है ।
- छात्रों की रुचि, श्रवणतन्त्र, उनकी ध्वनि व अक्षरों का ज्ञान तथा उनके उच्चारणों का पता चल जाता है ।
- सीखने में बाधक तत्त्वों का ज्ञान ।
- बालक की कठिनाईयों का पता लगाकर दूर करना ।
- शिक्षण प्रक्रिया प्रभावशाली हो जाती है। बालकों को उनकी क्षमता व योग्यता के अनुसार उचित मार्गदर्शन दिया जाता है ।
- छात्रों को व्यक्तिगत मार्गदर्शन दिया जाता है तथा व्यक्तिगत कठिनाईयों को दूर किया जाता है ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

- छात्र कुसमायोजन से बचकर उचित मार्ग पर चलने लगते है।
- वालकों की शारीरिक, भावात्मक व सामाजिक क्षमताएँ विकसित होती हैं तथा एक अच्छे समाज का निर्माण होता है ।
- शिक्षक का कर्तव्य है कि वह देखे की शैक्षणिक निदान एवं उपचारात्क शिक्षा से बालकों का लाभ हो रहा है अथवा नहीं ।

—----------

स्वाध्याय

—----------

निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तर उत्तर दीजिए ।

(1) शैक्षणिक उपचार किसे कहते हैं ? "शैक्षणिक निदान एवं उपचार एक ही सिक्के के दो पहलू हैं ।" विधान को समझाईए ।

(2) शैक्षणिक निदान एवं उपचार की संकल्पना स्पष्ट करते हुए विद्यार्थियों की त्रुटियाँ कैसे दूर की जाती हैं ? इसके बारे में सुझाव दीजिए एवं किसी शैक्षणिक निदान की कसौटी को स्पष्ट कीजिए ।

2.

निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षिप्त में उत्तर दीजिए ।

(1) निदानात्मक परीक्षा के लाभ बताइए ।

(2) कक्षा में बालकों के पिछड़ेपन के कारण बताइए ।

(3) निदानात्मक और उपचारात्मक शिक्षा की परिभाषाएँ देकर संकल्पना स्पष्ट कीजिए ।

—----------

इकाई : 2

—----------

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

शैक्षणिक उपकरण : उपयोग एवं महत्त्व

—----------

इकाई : 2

2.1 प्रास्ताविक

2.2 दृश्य-श्राव्य उपकरणों का महत्त्व

2.3 विविध शैक्षणिक उपकरणों का उपयोग

(1) पा यपुस्तक

(2) श्यामफलक

(3) शब्दकोश

(4) चार्ट चि

(5) फिल्म

*** स्वाध्याय**

—----------

2.1 प्रास्ताविक :

"Good instruction is the foundation of any educational programme. Audio visual training aids are a component part of that foundation." **– Francis W. Noel**

2.2 दृश्य-श्राव्य उपकरणों का महत्त्व :

शिक्षा के क्षेत्र में जब से शैक्षिक तक्निकी ने प्रवेश किया तबसे वर्गखण्ड में विविध प्रकार के उपकरणों का प्रचलन होता रहा है। इससे पहले शिक्षक कक्षा में बोल बोलकर पढ़ाता था । शुष्क नीरस वातावरण में बच्चे पढ़ते थे ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

दृश्य श्राव्य साधनों के उपयोग से अध्ययन अधिक प्रमाण में होता है। श्रवण और कथन के बदले देखने और किया करने से 80% से 90% अध्ययन हो सकता है ऐसा संशोधनों के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ है। शिक्षा प्रक्रिया के लिए कहा गया है

I hear, I forget.

I see, I remember.

I do, I understand.

दृश्य श्राव्य साधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करने से लाभ होता है। दृश्य श्राव्य उपकरणों का महत्त्व निम्न जैसा है ।

- अमूर्त ख्यालो (Concept) को मूर्त रुप में बता सकते हैं।
- छात्रों को प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त होता है।
- चलचित्र, टेलिविज़न द्वारा विचारों का सातत्य बना रहता है।
- ज्ञान प्राप्ति में सहायक, अर्थघटन करने की क्षमता बढ़ती है।
- शिक्षाकार्य वैविध्यपूर्ण और सघन बनता है
- अध्ययन प्रक्रिया रसप्रद बनती है ।
- अध्ययन चिरंजीव बनता है।
- शिक्षण संक्रमण में उपयोगी रहता है।
- कक्षा में व्याख्यान या कथन में कमी आ जाती है ।
- सीखी गई वस्तु की धारणा (Retention) में उपयोगी बनता है ।
- अर्थपूर्ण शब्द भण्डार में वृद्धि होती है।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

- छात्रों के अनुभवों का विस्तार होता है।
- शिक्षा प्रक्रिया आनंदमय बनती है।
- शिक्षाकार्य की असरकारकता बढ़ती है। विद्यार्थियों का प्यान आकर्षित रहता है ।
- शिक्षक की क्षमता और कुशलता का विकास होता है । हमें याद रखना चाहिए कि सभी शैक्षणिक उपकरणों में उपर्युक्त सभी लाभ मिले ऐसी अपेक्षा नहीं रख सकते ।

आखिर अध्यापन एक कला है। शिक्षक शैक्षिक उपकरणों को सहायक सामग्री के रुप में उपयोग करे तो अवश्य लाभप्रद होगा । जीवन के सभी क्षेत्रो में तक्निकी आ गयी है तो भाषा शिक्षा में भी तक्निकों का उपयोग करना समय की मांग है। स्कूल बाहर छात्रों को अनेक आकर्षण प्राप्त है। अतः वर्गखण्ड शिक्षा को अधिक जीवंत, रसमय और सार्थक बनाने के लिए शैक्षिक उपकरणों का स्वाभाविक उपयोग करना अनिवार्य-सा बन गया है ।

2.3 विविध शैक्षणिक उपकरणों का उपयोग :

(1) पा यपुस्तक :

- पाठ्य पुस्तक वैज्ञानिक और मनोवैज्ञानिक सिद्धांतो के आधार पर तैयार की जाती है ।
- पाठ्यपुस्तक में पाठयक्रम अंतर्गत सभी विषयांगो को समाविष्ट किये जाते हैं। इसीसे अध्ययन-अध्यापन में सरलता होती है।
- विद्यार्थियों के जीवन निर्माण और चारित्र्य निर्माण में उपकारक सिद्ध होता है ।
- छात्रों के भाषाकीय कौशल्यों का विकास होता है ।
- विद्यार्थियों की साहित्यिक रुचि बढ़ा ने का पाठ्यपुस्तक एक सही साधन है।
- शिक्षक को पथप्रदर्शन प्रदान करता है।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(2) श्यामफलक :

भाषा की शिक्षा में श्यामपट्ट बहुत ही उपयोगी साधन हैं। यह विद्यार्थियों और शिक्षक के लिए सीखने और सिखाने का अनिवार्य माध्यम तथा मित्र हैं। हम कोई ऐसे वर्ग की कल्पना नहीं कर सकते हैं जिसमें श्यामपट्ट न हो। जो शिक्षक श्यामपट्ट का उपयोग करना नहीं जानते हैं वे विद्यार्थियों का नुकशान करते हैं। श्यामपट्ट का उपयोग निम्नलिखित बातों में अच्छी तरह किया जा सकता है ।

- पाठों के सारांश के लिए ।
- शब्दों को सिखाने के लिए ।
- शिक्षक तथा विद्यार्थियों के सहकारी कार्य के लिए ।
- हिज्जे सिखाने के लिए ।
- महत्त्व के नाम या शब्दों को लिखने के लिए ।
- निबन्ध, कहानी, संवाद, पत्रलेखन आदि के मु ों के लेखन के लिए ।
- व्याकरण की शिक्षा के लिए ।
- श्यामपट पर रेखाचित्र खींचने के लिए ।

•श्यामपट्ट पर लिखते समय निम्नलिखित बातें ध्यान में रखी जाय ।

- श्यामपट पर अक्षर सीधे, मोटे और सीधी पंक्ति में लिखें जाय ।
- अक्षर सुन्दर तथा सुडौल होने चाहिए । वर्ग के अंतिम छोर पर बैठा हुआ विद्यार्थी उसे सुगमता से पढ़ सके इतने बड़े अक्षर होने चाहिए । शिक्षक का लेखनकार्य स्वच्छ, सुवाच्य तथा स्पष्ट होना चाहिए । बालक अनुकरणशील होता है। अतः शिक्षक के लेखन का वह अनुकरण करते हुए लिखना सीखेगा। जैसा शिक्षक लिखेंगे वैसा बालक भी लिखेंगे ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

- श्यामपट पर कमानुसार लेखन करना चाहिए । ऐसा नहीं करने से विद्यार्थी गलती करेंगे । कच्चे काम के लिए श्यामपट्ट का कोना अलग रखा जाय ।

- श्यामपट को साफ करने के लिए झाडन (डस्टर) का उपयोग किया जाय । श्यामपट को ऊपर से नीचे साफ किया जाय ताकि कम से कम चोंक की धूल उड़े ।

- लिखते समय अध्यापक बोलते हैं तो विद्यार्थियों को सुनने का अवसर भी मिलता हैं और अनुशासन भंग होने का भय नहीं रहता हैं।

- श्यामपट्ट पर लिखते समय विद्यार्थियों की ओर बिलकुल पीठ नहीं करनी चाहिए। बीच बीच में उनकी ओर भी देख लेना चाहिए ।

- शिक्षक श्यामपट पर रेखाचित्र द्वारा अपना काम निकाल सकता है ।

- आवश्यकता के अनुसार रंगीन चोक का उपयोग भी किया जाना चाहिए ।

- श्यामपट्ट ऐसे स्थान पर रखना चाहिए जहाँ से कक्षा का प्रत्येक विद्यार्थी सुगमता से पढ़ सके ।

- विद्यार्थी शिक्षक के साथ साथ लिखते हो यह भी देखना चाहिए।

(3) शब्दकोश :

भाषा ज्ञान प्राप्त करनेवाले प्रत्येक के पास शब्द कोश होना चाहिए। हमारी भाषा समृद्धिका आधार शब्दभण्डार है। पाठ्यपुस्तक में कई शब्द ऐसे आते हैं जिनके अर्थ नही मिलने पर शिक्षक विद्यार्थी निःसहाय जैसे हो जाते हैं। कई मार्गदर्शिका में दिये गए शब्दार्थ का दावा करते हैं । सच्ची बात तो यह है कि मानक सही हो तो भी कई बार ऐसा भी होता है कि हम दूसरों से अर्थ पूछ लेते हैं, यह भी अच्छी बात नहीं हैं। स्कूलो में सभी भाषा के प्रचलित बृहत् शब्दकोष अपने ग्रंथालयमें रखने चाहिए। शब्दकोश से सही हिज्जा जान सकते है। पर्यायवाची शब्दों की पहचान होती है। मुहावरों के अर्थ प्राप्त होते हैं। व्यावहारिक जीवन में उपयोगी शब्द कोश में से मिल जाते हैं। अच्छा शिक्षक एक ही शब्द का बारबार उपयोग करे उसके बजाय उसी के अर्थ के और शब्दों को उपयोगमें लेकर भाषा समृद्धि का परिचय दे सकता है ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

शब्दकोश से शब्द कैसे ढूंढ़ निकाले उसका अभ्यास भी करवाने की आवश्यकता है। सही वर्तनी जानने के लिए या अर्थ जानने के पहले वर्णमाला में स्वर व्यंजन का ज्ञान छात्रों को होना चाहिए। बाराखड़ी जानने के कारण शब्द ढूंढने में सहाय मिलती है। क्लास में शब्दकोश का प्रत्यक्ष अनुभव करवाना चाहिए। उदाहरणतः 'आयोजन' शब्द ढूँढना हो तो सर्व प्रथम स्वर 'अ' शब्दकोश में प्राप्त करें, फिर 'आ' में देखे, क्रमशः दूसरा वर्ण 'य'को प्राप्त करें उसी में 'यो' ढूँढने के बाद शब्द मिल जाता है। अर्थ भी मिलता है लिंग परिचय भी हो जाता है। स्कूलों में छात्रों के पास नन्हाकोश खरीद लेना चाहिए । बारबार अभ्यास (Practice) करवाने से छात्र जल्दी से शब्दकोश में से शब्द खोज निकालेंगे ।

(4) चार्ट चि :

भाषा की शिक्षा में चित्रों का विवेकपूर्ण उपयोग करना चाहिए। निम्नलिखित बातों में चित्रों का उपयोग किया जा सकता है।

- बातचीत, कहानी कथन और उत्तम दृश्यों का वर्णन करते समय मौखिक कार्य में चित्र अच्छी तरह सहायक बनते हैं । मौखिक अभिव्यक्ति की बुनियाद चित्रों की सहायता से भली भाँति डाली जा सकती हैं ।
- कहानी लेखन का आरंभ चित्रों की सहायता से किया जा सकता है।
- परिच्छेद लेखन का कार्य चित्रों की सहायता से किया जा सकता हैं।
- पाठ की वस्तु का वातवरण कक्षागृह में तैयार करने के लिए चित्र अनिवार्य बनते हैं ।
- कई शब्दों को चित्रों की सहायता के बिना सिखाना मुश्किल हैं। उदा. स्तूप ।
- पाठ्यपुस्तक में दिये गये चित्रों का उपयोग पाठ की प्रस्तावना, विषयविवेचन या संकलन में किया जा सकता है।
- कई पाठ में वर्णित प्रसंग इतने वेधक और सचोट होते हैं कि उनका अलग चित्र देने से पाठ से एकमय हो जाते हैं ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

- विद्यार्थियों में साहित्य के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करने के लिए लेखक, कवि आदि के चित्रों का उपयोग पाठ या काव्य सिखाते समय किया जा सकता हैं। ऐसा करने से उनके बारे में विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों में उत्साह बढ़ता है ।

चित्रों का उपयोग करते समय यह ख्याल में रखना चाहिए कि चित्र पर्याप्त मात्रा में बड़े हों, स्पष्ट हो और पाठ्यविषय के लिए उपयोगी हो । शोभा के लिए चित्रों का उपयोग कभी नहीं करना चाहिए। उपयोगी चित्र सचमुच ही पाठ में जीवन डाल देते हैं।

(5) फिल्म :

फिल्म चलचित्र के द्वारा भाषा शिक्षण में चरित्रचित्रण, संवादकला आदि बातें सफलता के साथ सिखायी जा सकती हैं। बालकों के लिए उपयोगी कथा वाली फिल्में दिखाने से विषयवस्तु रोचक बनती है। आजकल ऐसे चलचित्र आसानी से प्राप्त होने लगे हैं यह एक आनंद की बात है।

—----------

स्वाध्याय :

—----------

1. दृश्य-श्राव्य उपकरणों का हिन्दी भाषा शिक्षा में महत्त्व क्या है ?

2. 'श्याम पट शिक्षक का उत्तम साथी है'। प्रस्तुत विधान के संदर्भ में वर्ग खंड शिक्षा में श्यामपद का महत्त्व समझाइये ।

3. दृश्य-श्राव्य उपकरणों के प्रकार बताइये ।

4. हिन्दी भाषा शिक्षा में शब्द कोश का उपयोग क्या है ?

5. दृश्य-श्राव्य साधनों का उपयोग करते समय किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?

6. हिन्दी भाषा शिक्षा में पाठ्यपुस्तक का महत्त्व बताइए ।

7. हिन्दी भाषा शिक्षा में चार्ट चित्र का उपयोग बताइए ।

8. हिन्दी भाषा शिक्षा में फिल्म कैसे उपयोगी हैं ?

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

—----------

इकाई : 3 परीक्षण एवं मूल्यांकन

—----------

3.1 परीक्षण का नवीन दृष्टिकोण

3.2 परीक्षण मूल्यांकन की विभिन्न विधियाँ

3.3 मूल्यांकन की विभिन्न कसौटियाँ

3.4 आदर्श प्रश्नप के लक्षण

3.5 आदर्श प्रश्नप की रचना ब्ल्यू प्रिन्ट (िपरीमाणदर्शक सारणी)

•स्वाध्याय

—----------

3.1 परीक्षण का नवीन दृष्टिकोण :

किसी भी शिक्षा पद्धति का अंतिम लक्ष्य परीक्षा माना जाता है तथा इन दोनों का निकटवर्ती संबंध है। परीक्षा से शिक्षा की कमियों को देखा तथा परखा जा सकता हैं और दोषों के निदान के द्वारा शिक्षण पद्धति में तथा वस्तु में परिवर्तन करना सरल बनता है। वर्तमान परीक्षा प्रणाली दोषपूर्ण हैं और वह सिखाने में सहायता करने के लिए उपयोगी नहीं होती है। इसमें सुधार करने की बहुत ही आवश्यकता है। हम क्यों सिखाते हैं, क्या सिखाते हैं, किस तरह सिखाते हैं, किन साधनों की सहायता से सिखाते हैं, तथा हमने जो सिखाया है उसे विद्यार्थियों ने वास्तव में सीखा है या नहीं इन सब बातों को जानने के लिए परीक्षण की शास्त्रीय पद्धति की बड़ी आवश्यकता है।

हिन्दी भाषा की शिक्षा के उ`श के प्रकरण में हमने विशदता से यह बताने का प्रयत्न किया है कि आजकल शिक्षा के क्षेत्र में एक नवीन विचारधारा रहीं है। इस नवीन विचार पद्धति के अनुसार (1) शिक्षा के उ`श (Objectives) निश्चित किये जाते हैं। (2) विशिष्ट उ`शों (Specific objectives) का पृथक्करण किया जाता है । (3) विद्यार्थी के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन (Behavioural changes) निश्चित किया जाता है । (4) अन्त में विद्यार्थी के व्यवहार में हुए परिवर्तन का मूल्यांकन किया जाता है। इस तरह शिक्षापद्धति में मूल्यांकन तथा परीक्षण का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

स्थान है और ये सभी अन्योन्याश्रित हैं। शिक्षण प्रक्रिया के ये अंग हैं तथा शिक्षण प्रक्रिया की त्रिवेणी में परीक्षा एक स्वाभाविक स्थिति है। इसको साथ में दिये गये त्रिकोण से भलीभाँति समझा जा सकता है ।

- **शिक्षा के उद्देश्य विद्यार्थी के व्यवहार में**

परिवर्तन :

परीक्षा के इस नये दृष्टिबिंदु को और उसकी कार्यपद्धति को शैक्षणिक मूल्यांकन पद्धति कहा जाता है। परीक्षण पद्धति के इन तीनों सोपानों का समान महत्त्व है। हिन्दी भाषाशिक्षा के उ`श तथा शिक्षण पद्धति की चर्चा हमने आगे के अध्यायों में की है। प्रस्तुत अध्याय में मूल्यांकन की स्पष्टता करने का हम प्रयत्न कर रहे हैं। मूल्यांकन करते समय हमें हिन्दी भाषा की शिक्षा के उ`श, विद्यार्थी के व्यवहार में अपेक्षित परिवर्तन तथा शिक्षक के द्वारा दिया गया प्रत्यक्ष शिक्षण इन तीनों बातों का ख्याल में रखना पड़ता है। मूल्यांकन की शास्त्रीय पद्धति यह है कि मूल्यांकन की प्रत्येक कसौटी (1) प्रमाणभूत (valid), (2) विश्वसनीय (reliable), (3) सानुकूल (usable) होनी चाहिए । परीक्षण का उ`श विद्यार्थी ने कितना प्राप्त किया है इसकी जाँच करना है, नहीं कि वह क्या नहीं जानता है इसकी जाँच करना । निश्चित उ`शों की प्राप्ति हिन्दी भाषा के शिक्षक का पवित्र फर्ज है। हमारी शिक्षण पद्धति भी निश्चित उ`शों को प्राप्त करने का एक साधन होगी तथा पाठ्यक्रम भी साध्य न होकर मात्र एक साधन होगा । उ`शों की प्राप्ति ही हमारा साध्य होगा और पाठ्यक्रम सिर्फ माध्यम हो जायेगा । इन उ`शों को म`नज़र रखकर अध्यापन करने के बाद यह जान लेना जरूरी होगा कि हमारे द्वारा निश्चित किये गये उ`श किस हद तक प्राप्त हो सके है। इसके लिए परीक्षा अनिवार्य हो जायेगी ।

•मूल्यांकन का महत्त्व :

सामान्यतया मूल्यांकन शब्द का प्रयोग अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में शैक्षिक मूल्यांकन के संदर्भ में ही किया जाता है जब कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मूल्यांकन का प्रयोग प्रत्यक्ष है । शैक्षिक दृष्टि से मूल्यांकन को स्पष्ट करते हुए दाण्डेकर ने कहा कि मूल्यांकन को एक क्रमबद्ध प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। जिसके माध्यम से यह ज्ञात करना सम्भव हो सकें कि छात्रों के द्वारा शैक्षिक उ`श्यों की प्राप्ति किस सीमा तक हो पाई है ।

•मूल्यांकन का महत्त्व :

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE RAJKOT

मूल्यांकन अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण एवं उपयोगी प्रक्रिया है । ज्ञानात्मक स्तर के बारें में जानकारी के साथ ही सफलता और विफलता, व्यूहरचना एवं प्रतिमान आदि के चयन आदि के बारे में यथार्थ का ज्ञान मूल्यांकन के माध्यम से ही प्राप्त कर पाना सम्भव हो पाता है ।

मूल्यांकन के अभाव में निर्देशन एवं परामर्श सेवाओं का व्यावहारिक उपयोग संभव नहीं हो सकता है ।

मूल्यांकन के आधार पर ही भावी योजना तैयार की जा सकती है ।

पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तक रचना के क्षेत्र में भी मूल्यांकन के परिणामों की सहायता ली जाती है ताकि उपयोगी ढंग से उनकी संरचना करना सम्भव हो सकें ।

विशेषकर अध्ययन सम्बन्धी सामान्य एवं विशिष्ट कौशलों के ग्रहण, अभ्यास और एकीकरण हेतु प्रयासों के अवसर पर निरंतर मूल्यांकन के महत्त्व को आज सर्वत्र स्वीकृत किया गया है।

3.2 परीक्षण मूल्यांकन की विविध विधियाँ :

सामान्य तौर पर परीक्षण मूल्यांकन की विधियों को दो मुख्य प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकती है: (1) अप्रमाणीकृत विधियाँ (2) प्रमाणीकृत विधियाँ । अप्रमाणीकृत विधियों में प्रश्नावली, मुक्त व्यक्ति अध्ययन आदि विधियों का समावेश हाता है। जब कि प्रमाणित विधियों के अंतर्गत वैध (Valid) प्रमाणभूत कसौटियों की आजमाइशवाली विधियों का समावेश होता है। इस प्रकार की विधियों में बुद्धिशक्ति की कसौटी, शैक्षिक सिद्धि कसौटी, अभिरुचि संशोधनी आदि प्रमाणभूत कसौटियों का उल्लेख किया जा सकता है ।

भाषा-शिक्षा में परीक्षण मूल्यांकन की मुख्य अप्रमाणीकृत विधियाँ जो प्रचलित हैं, निम्नानुसार हैं :

(क) लिखित प्रश्नपत्र विधि

(ख) बोलचाल विधि

(ग) सस्वर वाचन विधि

(घ) अवलोकन - निरीक्षण विधि

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(च) प्रश्नावली विधि

(छ) श्रवणजन्य अर्थग्रहणक्षमता विधि

(क) लिखित प्रश्नप विधि :

इसे पेपर पेन्सिल परीक्षण विधि भी कहते हैं, क्योंकि इसमें लेखन-सामग्री अनिवार्य आवश्यक होती हैं।

इस प्रकार के परीक्षण में सारी पाठ्यसामग्री सुविधापूर्वक समाविष्ट की जा सकती है। यह इस विधि की व्यापक उपयोगिता है, पर भाषा-शिक्षा के उ`श्यों की दृष्टि से केवल ज्ञान तथा भाषाकीय कौशलों में से वाचन कर अर्थग्रहण करने की और लिखकर अभिव्यक्ति करने की क्षमताएँ की जा सकती हैं।

अब तो शालाओं में प्रथम और द्वितीय सत्रान्त परीक्षाओं के उपरान्त कुछ और सामयिक कसौटियाँ भी ली जाती हैं। सतत सर्वग्राही मूल्यांकन के नूतनतम अभिगम के अनुसार लिखित रूप की सामयिक कसौटियों का चलन अब बढ़ने लगा है, जैसे कि साप्ताहिक, पाक्षिक और माहवर ली जानेवाली परीक्षाएँ या कसौटियाँ ।

(ख) बोलचाल विधि :

इसे मौखिक - अभिव्यक्ति विधि भी कहते हैं। प्रारंभिक कक्षाओं में श्रवण, बोलचाल, उच्चारण, शब्द-भण्डार आदि की जाँच के लिये यह विधि अधिक उपयोगी है ।

लिखित परीक्षण विधि के जरिए विद्यार्थी उपाधि तो प्राप्त कर लेते हैं पर इनमें से कई अपने विचारों की अभिव्यक्ति मौखिक रूप से भलीभाँति नहीं कर पाते। इस करुणाजनक परिस्थिति को निवारने का प्रबन्ध किया जाना चाहिए।

वर्तमान भाषा-शिक्षा परीक्षण में मौखिक अभिव्यक्ति की जाँच न के बराबर होती है या उपेक्षित ही रह जाती हैं।

बोलचाल विधि में निम्नलिखित साधनों व माध्यमों का उपयोग किया जाता है :

(1) प्रश्नोत्तर

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(2) बातचीत या वार्तालाप

(3) विचार-विमर्श

(4) वाद-विवाद

(5) सस्वर वातचन या लयानुसारी गान

(6) चित्र पर से कहानी-कथन आदि ।

(ग) सस्वर वाचन विधि :

यह बोलचाल विधि से मिलती-जुलती विधि है। बोलचाल विधि में सस्वर वाचन के अनेक घटकों में से एक साधन के रूप में व्यवहार होता है जब कि सस्वर वाचन विधि में उसको मुख्य उ`श्य बनाकर उसकी क्षमता की जाँच की जाती है। इस विधि के अंतर्गत सस्वर वाचन दोषों के उपचारात्मक उपाय भी किए जाते हैं।

सस्वर वाचन विधि में विद्यार्थियों को लिखित सामग्री दी जाती है जिसका उन्हें उचित बल, विराम, गति, भाव आदि को ध्यान में रखते हुए वाचन करना होता है ।

अब तो विद्यार्थियों की वाचनशक्ति और वाचन-गति की जाँच करने की प्रमाणीकृत कसौटियाँ भी प्रादेशिक भाषाओं में उपलब्ध हैं ।

(घ) अवलोकन - निरीक्षण विधि :

अवलोकन या निरीक्षण के जरिए विद्यार्थियों की बौद्धिक प्रौढ़ता के अलावा संवेदनशीलता, भाषाकीय प्रवृत्ति या कार्य की पेशगी का सो`श सूक्ष्म अवलोकन और निरीक्षण किया जा सकता है। विद्यार्थियों को क्षमताओं का प्रत्यक्ष या परोक्ष परिचय अवलोकन और निरीक्षण के जरिए पाया जा सकता है। अवलोकन निरीक्षण के परिणामों की नोंध विद्यार्थियों के संगृहित प्रगतिपत्रकों में की जा सकती है।

(च) प्रश्नावली विधि :

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

यह विधि बोलचाल या प्रत्यक्ष मुलाकात विधि में अधिक अच्छी है, क्योंकि बोलचाल विधि में समय व्यय करना पडता है। अतः मुलाकात के अभाव में प्रश्नावली अपेक्षाकृत सरल और उत्तम साधन है ।

अपेक्षित भाषा-कौशलों की जाँच के हेतु संकलित या निर्मित विधानों के पीछे सम्मति या असम्मति के लिए विद्यार्थियों से हाँ या ना लिखने को कहा जाता है अथवा सही (✓) का निशान या गलत (X) का निशान करने को कहा जाता है ।

भाषाकीय कौशलों या अपेक्षित वर्तन-परिवर्तनों के बारो में प्रतिभावक के विधेयात्मक या निषेधात्मक अभिप्राय प्रश्नावली विधि द्वारा जाने जा सकते हैं। जो कि इस विधि की भी कुछ मर्यादाएँ है जैसे कि, प्रतिभावक मुक्त मन से प्रतिचार प्रश्नावली में नहीं जानते ।

(छ) श्रवणजन्य अर्थग्रहणक्षमता विधि :

यह विधि वस्तुतः परीक्षण - मूल्यांकन की बोलचाल विधि का ही एक भाग है क्योंकि इस विधि में विद्यार्थी अध्यापक की कथा यथा बोलचाल का श्रवण करते हैं । इसमें विद्यार्थी श्रवणसामग्री को भलीभांति अर्थग्रहण करते हैं । यहाँ बोधपूर्ण श्रवण तथा अर्थग्रहणक्षमता अपेक्षित है। इस विधि के दो पहलू बताए गए हैं ।

(1) भौतिक या यांत्रिक

(2) मानसिक ।

इन दोनों पक्षों का परीक्षण संभव है।

3.3 मूल्यांकन की विभिन्न कसौटियाँ :

वर्गखण्ड शिक्षक अध्यापन करते वक्त आयोजन में तीन बातों का ध्यान रखता है। (1) हेतु (2) शैक्षिक अनुभव (3) मूल्यांकन । मूल्यांकन कसौटियाँ बनाने का कौशल शिक्षक से अपेक्षित है । मूल्यांकन कसौटी के प्रश्नों के तीन प्रकार अति प्रचलित हैं ।

(1) निबंध प्रकार (Essay type)

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(2) लघु उत्तर (Short answer)

(3) अनात्मलक्षी (Objective type)

(1) निबंध प्रकार की कसौटी :

परीक्षण में यह कसौटी अत्यंत प्रचलित है । लाक्षणिकता यह है कि इस प्रकार के प्रश्नों के उत्तर दीर्घ होते हैं । विषयवस्तु के महत्त्वपूर्ण मु ों का विश्लेषण करने के लिए यह कसौटी अधिक उपयोगी बनती है ।

परंतु छात्र निबंध प्रकार के प्रश्नों के उत्तर लिखने में कोई कसर नहीं छोड़ते । कई छात्र तो उत्तरवही के पृष्ठ पर पृष्ठ भरने लग जाते है। विषय से दूर, असंग मन में जो कुछ भी विचार आये लिख देते हैं। परीक्षक को उसमें उत्तर ढूंढना पड़ता है। अगर प्राश्निक निम्न जैसी बातें याद रखें तो भाषा अभिव्यक्ति के इस प्रश्न को छात्र न्याय दे सकें ।

(1)

जहाँ पर वस्तुनिष्ठ (Objective) और छोटे उत्तर प्रश्नों

का उपयोग संभव न हो तो निबंध प्रकार पर जाइए ।

(2) निबंधात्मक प्रश्न के पीछे निश्चित उ`श्य होना चाहिए ।

(3) इस प्रश्न की भाषा ऐसी सरल और दो-तीन मु ों में वितरित करके पूछिए। अस्पष्ट भाषा का उपयोग न करें ।

(4) उत्तर में माहिती के साथ बुनियादी सिद्धांतों का भी विश्लेषण हो ऐसा सवाल पूछो ।

(5) छात्रों को ज्यादा से ज्यादा कितनी पंक्तियों में उत्तर लिखना है उसका स्पष्ट निर्देश करें ।

(6) छात्र निश्चित समयावधि में उत्तर पूर्ण कर सकें इतनी प्रश्न के उत्तरों की लम्बाई होनी चाहिए ।

(2) लघु उत्तर कसौटी :

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

निबंध प्रकार में विद्यार्थी विस्तारपूर्वक लिखते हैं। लघु उत्तर कसौटी में संक्षेप में लिखते हैं। इतना ही नहीं पाठ के थोड़े ही मु ों की चर्चा चार से लेकर दस पंक्तियाँ में होती है। लघु उत्तर कसौटी रचना में निम्न जैसी बातें याद रखें :

(1) छात्र को इस उत्तर में विषयवस्तु का तलस्पर्शी ज्ञान होना चाहिए। भाषाशक्ति पर भी ध्यान दिया जाता है ।

(2) प्रश्नों की भाषा सरल और सचोट होनी चाहिए ताकि छात्र स्पष्टता से उत्तर दे सकें ।

(3) उत्तर दो तीन मिनटों में लिखे जा सकते हैं ।

(4) माहिती संक्षेप में देने की क्षमता उत्तरदाता में होनी चाहिए।

(5) आलंकारिक और आडंबरयुक्त भाषा का इसमें स्थान नहीं है।

(6) इसके उत्तर सामान्य स्तर के छात्र भी दे सके ऐसे है।

(3) अनात्मलक्षी कसौटी :

वर्तमान समय की माँग अनात्मलक्षी प्रश्नों की ओर अधिक है। ये कसौटियाँ अधिक प्रमाणभूत और विश्वसनीय होती हैं । निश्चित और सही मूल्यांकन के लिए उपयोगी हैं । निबंधात्मक कसौटियों के दोषों यह मुक्त और वस्तुनिष्ठ कसौटी है। परीक्षक के पूर्वग्रह और निजी धारणा से मुक्त है। इस कसौटी को वस्तुलक्षी भी कहते हैं । विशेषताएँ निम्म जैसी हैं :

(1) प्रश्नों की संख्या अधिक किंतु उत्तर अत्यंत सीमित शब्दों में ।

(2) इसकी जाँच में वैज्ञानिकता है ।

(3) वस्तुनिष्ठ के कारण अंकन करने में व्यक्तिगत प्रभाव नहीं पड़ता ।

(4) एक ही प्रश्न के उत्तर दो- तीन परीक्षक जाँचे तो भी अंकों में कोई फर्क नहीं होगा ।

(5) इस कसौटी में विश्वसनीयता है इसलिए छात्र समूह को दो बार प्रश्न दिये जाये तो भी अंकों में फर्क नहीं पड़ता।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(6) मंद और तेजस्वी दोनों प्रकार के छात्रों की कसौटी हो सकती है ।

अनात्मलक्षी कसौटी निम्न प्रकार की होती है :

(1) बहुविकल्प कसौटी (Multiple Choice Test)

(2) रिक्त स्थानपूर्ति कसौटी (Completion Test)

(3) युग्म कसौटी (Matching Test)

(4) वर्गीकरण कसौटी (Classification Test)

(5) कमनिर्णायक कसौटी (Arrangement Test)

(6) सामान्य प्रत्यास्मरण कसौटी (Simple Recall Test)

(7) सत्यासत्य कसौटी (True False Test)

(1) बहुविकल्प कसौटी :

इस कसौटी में प्रारंभिक कथन दिया जाता है उसके बाद में तीन विकल्प (Choice) दिये जाते हैं। उसमे एक ही उत्तर सही होता है, बाकी के दो गलत (सही जैसे लगने चाहिए) उत्तर होते हैं। छात्रों को सही उत्तर के सामने चिह्न करना होता है ।

जैसे कुंजड़ी ने फलियाँ के दाम और कम कर दिये क्योंकि.... फलियाँ अच्छी नहीं थी । (....)

बहुत रात बीत चुकी थी । (....)

कुंजड़ी जानती थी कि महेमान के कारण बिना भावताल किये जो दामदेगी वह ले लेंगे । (....)

(2) रिक्त स्थानपूर्ति कसौटी :

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

यह सामान्य प्रकार की अनात्मलक्षी कसौटी है। पाठ्यपुस्तक के आधार पर महत्त्वपूर्ण शब्दों को ध्यान में रखकर विधान के अन्तर्गत रिक्त स्थान रखा जाता है। छात्र अपनी स्मरणशक्ति के आधार पर पाठ में निहित शब्दों को याद करके रिक्त स्थानपूर्ति करता है। यह कसौटी तैयार करनी सरल होती है। इस कसौटी को बहुविकल्प कसौटी भी बना सकते हैं। रिक्त स्थानपूर्ति के लिए तीन विकल्प दिये जाते हैं।

उदाहरण :

(1) सरोजिनी देवी एक अत्यंत थी ।

(2) तीसों रोजों के बाद आज आयी है ।

(3) युग्म कसौटी :

इस कसौटी में 'अ' और 'ब' विभाग दिये जाते हैं । बीच में खड़ी रेखा खींची जाती है। 'अ' के साथ 'ब' में से उचित शब्द या वाक्य जोड़ना होता है ।

अ

ब

1 हामिद. 1. यह चिमटा क्यों लाया बुद्ध ?

2. शिवाजी. 2. मेरे संदूक की तलाशी ले गई ।

3. बिस्मिल. 3. माँ साहबा, गढ़ आला पण सिंह गेला।

4. तुम डरना नहीं अम्मा मैं सबसे . पहले आऊँगा ।

(4) वर्गीकरण कसौटी :

इस कसौटी में छात्रों को, हकीकतों, तथ्यों का क्रम निश्चित करने को दिया जाता है। यहाँ 'कठोर कृपा' पाठ के आधार पर कम निर्धारण करना है ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

उदाहरण : यहाँ 'कठोर कृपा' पाठ की वस्तु का क्रम सही नही है। इन्हें सही क्रम में रखकर फिर से वाक्य लिखिए ।

(1) मेहमान के फिर आने पर परिवार ने उसकी अच्छी खातिरदारी की ।

(2) एक धनिक ने बड़े भाई को नौकरी में रखा ।

(3) कुँजड़ी को सहीजन बेचकर परिवार गुजारा करता था ।

(4) पुरानी खानदानी इज्जत के कारण दोनों भाई नौकरी नहीं करते थे ।

(5) महेमान को दिन में परिवार की सही हालत का पता चल गया ।

(5) सामान्य प्रत्यास्मरण कसौटी :

इस कसौटी में छात्र अपनी स्मृति के आधार पर उत्तर देते हैं।
उदाहरण : निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर सामने रखे कोष्टक में लिखिए।

(1) रामायण की रचना किसने की ? (.....)

(2) अस्थिदान किस ऋषि ने दिया ? (.....)

(3) हामिद किस के साथ रहता था ? (.....)

(6) सत्यासत्य कसौटी :

इस कसौटी में वाक्य दिये जाते हैं। ये वाक्य सही भी होते हैं या गलत भी होते हैं। छात्रों को यह पहचानना होता है।

उदाहरण : निम्नलिखित वाक्यों में सही हो तो 'सत्य' और गलत हो तो 'असत्य' के उपर (...) चिह्न लगाइए ।

(1) कामायनी जयशंकर प्रसाद की रचना है। (सत्य / असत्य)

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(2) रामचरितमानस में श्रीकृष्ण के चरित्र का गान किया गया है।

(सत्य / असत्य)

(3) हमारे राष्ट्र कवि दिनकर कहे जाते हैं। (सत्य / असत्य)

(4) सुमित्रा नंदन पंत छायावादी कवि है । (सत्य / असत्य)

3.4 आदर्श प्रश्नप के लक्षण :

शिक्षक की भूमिका अनेक जगह पर है । केवल क्लास में अध्यापन करने से फर्ज की इतिश्री नहीं होती । एक अच्छा शिक्षक अच्छा प्राश्निक (Paper Setter) बने यह भी अत्यंत आवश्यक है। प्रश्नपत्र की कमियाँ को देखकर शिक्षा क्षेत्र में NCERT, CTE द्वारा प्रयत्न होते रहते हैं । स्कूल संकुल भी गुणवत्तालक्षी प्रश्नपत्र संरचना के लिए प्रयत्न करते हैं ।
आदर्श प्रश्नपत्र संरचना करते समय निम्न मु ों को ध्यान में रखने चाहिए ।

(1) प्रश्नपत्र रचना में पाठ्यक्रम की प्रत्येक इकाईओं का समावेश उसमें होना चाहिए ।

(2) प्रश्नपत्र जिन हेतुओं से लिये जाते हैं उसकी सिद्धि के लिए पर्याप्त है या नहीं यह देख लेना चाहिए ।

(3) प्रश्नपत्र उस ढंग से निकाला जाय जिसके उत्तर कोई भी लिखे तो वस्तु उसमें से समान ही मिले। इससे प्रश्न की विश्वसनीयता बढ़ेगी ।

(4) ज्ञान (Knowledge), समज (Understanding) और व्यावहारिक उपयोग (Application of Knowledge) जैसे महत्त्वपूर्ण हेतुओं को नजर समक्ष रखकर प्रश्नपत्र रचना करें ।

(5) एक परीक्षार्थी निश्चित समय पर उत्तर पूर्ण कर सके इस तरह प्रश्नपत्र की लम्बाई होनी चाहिए ।

(6) प्रश्नपत्र का कठिनतामूल्य खयाल में रखना होगा। अति सरल और अति कठिन प्रश्नपत्र नहीं होना चाहिए । तेजस्वी तथा मंद दोनों अपनी क्षमतानुसार लिख सकें ऐसा प्रश्नपत्र हो ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED COLLEGE-RAJKOT

(7) प्रश्नपत्र में वैज्ञानिकता होनी चाहिए । व्यवस्थित और सुआयोजित होना चाहिए ।

(8) प्रश्नपत्र में प्रश्नों की विविधता होनी चाहिए । निबंध प्रकार, लघु उत्तर प्रश्न, अनात्मलक्षी उत्तर तीनों का समावेश व्यवस्थित रूप में योग्य गुणभार देकर करना चाहिए ।

(9) भाषा के प्रश्नपत्र में गद्य पद्य व्याकरण तीनों को यथासंभव स्थान देकर संरचना करनी चाहिए ।

(10) प्रश्नों के गुणों का निर्देश दायी और होना चाहिए । कुल मिलाकर जितने अंकों की परीक्षा हो उससे मेल बैठना चाहिए ।

(11) प्रत्येक प्रश्न की सूचना स्पष्ट, सरल और संक्षेप में देनी चाहिए । छात्र दुविधा में पड़ न जाये इसका ध्यान रखें ।

(12) प्रश्नों की भाषा ऐसी हो जिससे छात्रों को क्या लिखना है, कितना लिखना है उसका खयाल आ जाय ।

(13) प्रश्न, क्लिष्ट, लम्बे और संदिग्धता उत्पन्न करे ऐसे न हो।

(14) प्रश्नपत्र के उपरी हिस्से में समय का निर्देश करें ।

(15) सुंदर अक्षर के उत्तरपत्रों के लिए अलग गुण भी रख सकते हैं ।

(16) प्रश्नपत्र की पाण्डुलिपि व्यवस्थित सुंदर अक्षरों में और हिज्जें की भूलों से रहित होनी चाहिए ।

3.5 आदर्श प्रश्नप की संरचना / ब्ल्यू प्रिन्ट :

प्रशिक्षण महाविद्यालय के प्रशिक्षणार्थियों को हिन्दी में इकाई योजना पद्धति के द्वारा दिए जानेवाले पाठों की परंपरा में एक मूल्यांकन कसौटी पाठ का देना अनिवार्य होता है। विद्यार्थियों ने इकाई योजना पाठों के जरिए जो ज्ञान, समझ, उपयोग (उपयोजन) और कौशल अर्जित किए है उनकी जाँच प्रशिक्षणार्थी स्वनिश्चित इकाई प्रश्नपत्र या मूल्यांकन कसौटी के द्वारा करते हैं। यह इकाई प्रश्नपत्र या मूल्यांकन कसौटी के द्वारा करते हैं । यह इकाई प्रश्नपत्र 25 अंक का होता

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

है और इसकी अवधि 30 मिनिट की होती है । वैसे सामान्य ती पर शालेय परीक्षाओं के प्रश्नपत्र 50 या 100 अंक इकाई प्रश्नपत्र अक्सर 29 अंकीय होता है । अतः यहां हम 25 के इकाई प्रश्नपत्र की एक आदर्श प्रश्नपत्र के रूप में चर्चा-विचारण करेंगे । के होते हैं, पर

इकाई प्रश्नपत्र बनाने के पूर्ण इसकी योजना तैयार की जात है। भाषा-शिक्षा के प्रश्नपत्र की ब्ल्यू-प्रिन्ट के निर्माण में निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण बातों को ध्यान के केन्द्र में रखा जाता है।

(1) शैक्षिक उ`श्यों के अंक भार

(2) विषयवस्तु के अंक भार

(3) प्रश्न प्रकारों के अंक - भार

(4) प्रश्नपत्र की गुणांकन चाबी

(1) शैक्षिक उद्देश्यों के भारांक :

प्रश्नपत्र संरचना करने से पहले प्राश्निक या मूल्यांकन कसौटी रचयिता को भाषा-शिक्षा (यहाँ हिन्दी-शिक्षा) के किन-किन उ`श्यों का मूल्यांकन करना है यह तय कर लेना चाहिए । माध्यमिक शाला स्तरीय लिखित स्वरूप के चार शैक्षिक उ`श्यों ज्ञान, समझ, उपयोग मु` (उप्नयोजन) और कौशल्य का परीक्षण, मूल्यांकन किया जाता है। भाषा-शिक्षा के उ`श्यों में उपर्युक्त प्रथम तीन उ`श्यों की जाँच की जाती को है । कौशल का उ`श्य किसी वस्तु या बाबत के सर्जन या निर्माण से सम्बन्धित है । जैसे कि मानचित्र, चार्ट, ग्राफ, रेखाचित्र, समयरेखा, प्रतिरूप (Model) आदि शैक्षिक उपकरण बनाना । अतः कौशल के शैक्षिक उ`श्य को टाला जाता है ।

उपर्युक्त तीन उ`श्यों का पाठ्यक्रम तथा कक्षा की सापेक्षता के संदर्भ में भार निर्धारित किया जा सकता है । भाषा-शिक्षा के सामान्य उ`श्य और विशिष्ट हेतु विद्यार्थियों के अपेक्षित वर्तन परिवर्तन में परिणित होने ही चाहिए ।

नमूने के तौर पर 25 अंक की इकाई के प्रश्नपत्र के शैक्षिक उ`श्यों के अंक-भार नीचे दी हुई सारणी क में बताए गए हैं :

सारणी - क

SHREE H.N SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

शैक्षिक उ`श्यों के अंक-भार

क्रम-संख्या	उ`श्य	अंक	
1. 2. 3. 4.	ज्ञान समझ उपयोग कौशल	10 9 6 –	40% 36% 24% –
	योग	25	100%

(2) विषयवस्तु के अंक भार :

प्राश्निक द्वारा पूछे जानेवाले प्रश्नों के अंक विषयवस्तु या शैक्षिक मु ों का भी सापेक्ष (Relative) खयाल प्रश्नपत्र की संरचना करते रखना चाहिए। विषयवस्तु उपइकाइयों में भी बड़ी हो सकती है। ग्राश्निक को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि विषयवस्तु पर अंको का बटवारा शैक्षणिक उ`श्यों के सापेक्ष में अनुकूल
हों।

25 अंक प्रश्नपत्र की विषयवस्तु के मु ों के अंकभार सारणी 'ख' में दिए हैं।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

सारणी - ख

विषयवस्तु के मुद्दों के अंक-भार

क्रम	विषयवस्तु का मुद्दा	अंक	प्रतिशत
1.	उप-ईकाइ - 1 गानेवाला मोची (गद्य-पद्य) परिच्छेद 1 से 4	7	28 %
2	उप-ईकाइ - 2 गानेवाला मोची परिच्छेद 5 से 8	6	24 %
3.	उप-ईकाइ - 3 3 हेर-फेर (गद्य-पद्य) खंड-1	7	28 %
4.	उप-इकाइ - 4 हेर-फेर खंड-2	5	20 %
		25	100 %

(3) प्रश्नः प्रकारों के अंक-भार :

प्रश्नपत्र में वस्तुनिष्ठ प्रश्न, लघु-उत्तर प्रश्न और निबन्धात्मक प्रश्न-इन तीनों प्रकार को प्रश्नों के समयक स्थान दिया जाना चाहिए ताकि शिक्षा के निश्चित उ`श्यों की सिद्धि तथा पाठ्य विषयवस्तु अधिकाधिक प्राप्ति हो सकें ।

SHREE H.N.SHUKLA COLLEGE-RAJKOT

क्रम संख्या	प्रश्न–प्रकार	प्रश्न–संख्या	अंक	प्रतिशत
1	वस्तुनिष्ठ प्रश्न	9	9	36 %
2	लघु–उत्तर प्रश्न	4	8	32 %
3	निबन्धात्मक प्रश्न	2	8	32 %
	योग	15	25	100 %

(4) प्रश्नपत्र की ब्लू-प्रिन्ट या त्रिपरिमाणदर्शक चार्ट :

शैक्षिक उ`श्य, विषयवस्तु और प्रश्न-प्रकारों के सापेक्ष सम्बन्धों को ध्यान के केन्द्र में रखते हुए इकाई प्रश्नपत्र की संरचना की जाती है।

25 अंक के इकाई प्रश्नपत्र की ब्लू-प्रिन्ट अर्थात् त्रिपरिमाणदर्शक वार्ट सारणी-घ में प्रस्तुत है और इसके पश्चात् ही इकाई प्रश्नपत्र एवं उसकी गुणांकन चाबी भी है।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

सारणी–घ

इकाई प्रश्नपत्र की ब्लू–प्रिन्ट या त्रिपरिमाणदर्शक चार्ट

कक्षा : 8 विषय : हिन्दी समय : 30 मिनट पूर्णांक : 25

क्रम संं.	उद्देश्य विषयवस्तु	ज्ञान			समझ			उपयोग			कौशल			योग
		व	ल	नि	व	ल	नि	व	ल	नि	व	ल	नि	
1.	उपइकाई – 1 गानेवाला मोची (गद्य–पद्य) परिच्छेद 1 से 4	$1_{(1)}$		$4_{(1)}$	$1_{(1)}$			$1_{(1)}$						$7_{(4)}$
2.	उपइकाई – 2 गानेवाला मोची (गद्य–पद्य) परिचय 5 से 8			$2_{(1)}$	$1_{(1)}$			$1_{(1)}$	$2_{(1)}$					$6_{(4)}$
3.	उपइकाई – 3 हेर–फेर (गद्य–पद्य) खण्ड – 4					$2_{(1)}$	$4_{(1)}$ $4_{(1)}$	$1_{(1)}$						$7_{(3)}$
4.	उपइकाई – 4 हेर–फेर (गद्य–पद्य) खण्ड – 2	$1_{(1)}$	$2_{(1)}$		$1_{(1)}$			$1_{(1)}$						$5_{(4)}$
	योग	$2_{(2)}$	$2_{(1)}$	$6_{(2)}$	$3_{(3)}$	$2_{(1)}$	$4_{(1)}$	$4_{(4)}$	$2_{(1)}$					
		$10_{(5)}$			$9_{(5)}$			$6_{(5)}$						$25_{(15)}$

विशेष : (1) कोष्टक में दी हुई संख्या प्रश्नों की है और बाहर अंको की।

(2) व.ल.नि. अनुक्रम से वस्तुनिष्ठ, लघु-उत्तर और निबन्धात्मक प्रश्न-प्रकार सूचित करते हैं।

इकाई प्रश्नप

कक्षा : 8. विषय : हिन्दी

समय: 30 मिनिट. अंक : 24

SHREE H.N.S... OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

—----------

1. (अ) निम्नलिखित प्रश्नों के एक-एक वाक्य में उत्तर लिखिए । **3**

(1) अमीर पड़ोसी क्यों परेशान था ?

(2) गरीब मजदूर की फटी पुरानी चादर में कितने पैसे बंधे थे ?

(3) बारात के आगे चलने वाले नौकरों ने उस गरीब मजदूर से क्या कहा ?

(ब) रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए : **2**

(1) झूठी और अधिक प्रशंसा बड़े बड़े कलाकारों को कर देती है।

(2) मजदूर के गई । की काव्य कल्पना मिट्टी में मिल

(क) सूचनानुसार कीजिए :

(1) कमाना, मुस्कुराना (भाववाचक संज्ञाएँ बनाइए)

(2) शरीर, राजा (विशेषण बनाइए)

(ड) निम्नलिखित मुहावरों के अर्थ देकर वाक्य-प्रयोग कीजिए ।

(1) माथा पकड़ कर बैठना. 8

(2) लहू-पसीना एक करना

2.निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दो-दो वाक्यों में लिखिए ।

(1) अमीर ने मोची की खूब प्रशंसा क्यों की ?

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(2) अमीर आदमी अपनी योजना पर क्यों हर्षित था ?

(3) 'हेर-फेर' कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

(4) मजदूर अमीर बन गया तब उसके पास क्या-क्या चीजें थीं ?

3. (अ) निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार-पाँच वाक्यों में लिखिए : 8

(1) अमीर ने मोची से प्रेमभाव रखना क्यों शुरू किया ?

(2) अमरी पड़ौसी अपनी योजना में कैसे असफल रहा ?

अथवा

(ब) (1) बारात के चले जाने के बाद मजदूर क्या सोचने लगा ?

(2) अमीर बन जाने के बाद उस पहलेवाले मजदूर ने उन अभागे मजदूरों से क्या कहा ?

—----------

इकाई प्रश्नपत्र की गुणांकन चावी

—----------

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

प्रश्न संख्या	उत्तर	सूचना
1.	अ	प्रत्येक का 1 अंक
(1)		
(2)		
(3)		
	ब	प्रत्येक का 1 अंक
(1) गुमराह		
(2) ब्याह		
	क	
(1) कमाई, मुस्कुराहट		प्रत्येक का 1/2 अंक
(2) शारीरिक, राजसी		प्रत्येक का 1/2 अंक
	ड	
(1) निराश होना पछताना		1/2 अंक अर्थ के लिए, 1/2 अंक वाक्य प्रयोग के लिए
(2) खूब परिश्रम करना		1/2 अंक अर्थ के लिए, 1/2 अंक वाक्य प्रयोग के लिए
2.		
(1) (टिप्पणी - बाकी प्रश्न वस्तुनिष्ठ, प्रत्येक के 2 अंक		
(2) लघु उत्तर और निबन्धात्मक है । अतः उत्तर देना आवश्यक नहीं		
(3) समझा गया ।)		
(4)		
3.	अ.	प्रत्येक के 4 अंक
(1)		
(2)		
	अथवा	
	ब	प्रत्येक के 4 अंक
(1)		
(2)		

COLLEGE-RAJKOT

स्वाध्याय

—----------

1.निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तर उत्तर दीजिए ।

(1) परीक्षा मूल्यांकन की संकल्पना स्पष्ट कीजिए ।

(2) परीक्षण मूल्यांकन की विविध विधियों का निर्देश कीजिए।

(3) वर्तमान परीक्षा पद्धति के दोष बताकर उनके सुधार के उपाय बताइए ।

(4) विविध प्रकार की कसौटियाँ बताकर उनकी विशेषताएँ बताइए ।

(5) ब्ल्यू-प्रिन्ट के आधार पर आदर्श प्रश्नपत्र की संरचना कीजिए ।

2. निम्नांकित प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर दीजिए ।

(1) आदर्श प्रश्नपत्र के लक्षण बताइए ।

(2) मूल्यांकन की संकल्पना स्पष्ट कीजिए ।

(3) आधुनिक शिक्षाप्रणाली में मूल्यांकन का महत्त्व क्या है ?

(4) वस्तुनिष्ठ कसौटी के निर्माण के लिये किन किन बातों को ध्यान में रखना चाहिए ?

(5) वस्तुनिष्ठ (अनात्मलक्षी) प्रश्नों की विशेषताएँ और मर्यादाएँ बताइए ।

(6) निबंधात्मक प्रश्नों के प्रकार बताइए । निबंधात्मक प्रश्नों की विशेषताएँ और मर्यादाएँ बताइए ।

—----------

इकाई : 4

—----------

भाषा शिक्षक

—----------

4.1 हिन्दी शिक्षक का महत्त्व

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

4.2 हिन्दी शिक्षक की शैक्षिक यो यताएँ

4.3 व्यावसायिक यो यताएँ

—----------

4.1 हिन्दी शिक्षक का महत्त्व :

शिक्षा एक कला है तथा कलाकार बनना आसान नहीं है। इसके लिए अभ्यास, अध्ययन तथा अध्ययनसामग्री की आवश्यकता है। शिक्षा के व्यवसाय में शिक्षक का स्थान सर्वोपरी है। शिक्षक कर्तव्यनिष्ठ एवं कर्मयोगी है। उसके पास अपने विचारों के साथ परिपक्वता, अनुभव एवं शुद्ध आचरण होता है । शिक्षक का प्रभावशाली निजी व्यक्तित्व है जिसके द्वारा वह अपने छात्रों पर, समाज पर अमिट प्रभाव छोड़ जाता है। समाज में वह पूजनीय माना जाता है एवं उसका व्यवसाय ही गौरवान्वित है ।

वर्तमान समय में हिन्दी शिक्षक का महत्त्व अधिक है, क्योंकि हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। उसके प्रचार एवं प्रसार के लिए हिन्दी शिक्षकों की जिम्मेदारी बढ़ जाती है और इस परिस्थिति में हिन्दी भाषा की महत्ता सिद्ध कर सकें ऐसे सिद्ध हिन्दी शिक्षकों की जरूरत है।

∆हिन्दी शिक्षक की योग्यताएँ :

किसी भी विषय के शिक्षक में अच्छे गुणों का होना आवश्यक है। जैसे छात्रों के प्रति सद्भाव, सहानुभूति, प्रेम तथा छात्रों के प्रति लगाव, उनके कार्यों में अभिरुचि लेना अति स्वाभाविक है । आग न केवल भाषा ज्ञान अपितु भाषा शिक्षा के उ`श्य, पद्धति, शिक्षा के उपकरणों का प्रयोग एवं क्रियात्मक संशोधनों की भी जानकारी होगा उतना ही अनिवार्य है। हिन्दी शिक्षक के लिए निम्नलिखित भापाकीय (शैक्षिक) योग्यताएँ आवश्यक मानी जाती हैं ।

4.2 हिन्दी शिक्षक की शैक्षिक यो यताएँ :

(1) हिन्दी भाषा का ठोस कौशल

(2) शुद्ध भाषाभिव्यक्ति का कौशल

(3) अध्यापन कार्य का ज्ञाता

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(4) हिन्दी साहित्य में अभिरुचि

(5) अन्य भाषाओं का ज्ञान

(6) साहित्य सृजन की शक्ति

(1) हिन्दी भाषा का ठोस ज्ञान :

राष्ट्रभाषा के रूप में शिक्षक के पास हिन्दी भाषा की पर्याप्त योग्यताएँ होना आवश्यक है, यह बुनियादी शर्त है। हिन्दी बोलना, पढ़ना यह हिन्दी का शिक्षण कार्य करने से भिन्न है। जिस शिक्षक के पास हिन्दी का ठोस ज्ञान है, प्रभुत्व है, क्षमता है वह अधिकार के साथ पढ़ा सकता है। हिन्दी शिक्षक के पास भाषा व्याकरण सम्मत, शुद्ध एवं परिनिष्ठित होनी चाहिए। शुद्ध उच्चारण, योग्य शब्दों का चयन, सुंदर हस्ताक्षर तथा प्रभावपूर्ण मौखिक अभिव्यक्ति आदि भाषा शिक्षक के आवश्यक गुण हैं।

(2) शुद्ध भाषाभिव्यक्ति का कौशल :

शिक्षक हमेशा हिन्दी भाषा के शुद्ध उच्चारणशाख का जाता होना चाहिए । भाषाभिव्यक्ति का मुख्य आधार व्याकरण, शुद्ध भाषा और उच्चारणशास्त्र पर है। हर एक शिक्षक को अपने विद्यार्थियों से बातचीत करते समय सर्वथा शुद्ध उच्चारण, सस्वर भाववाही एवं आरोह- अवरोहयुक्त भाषा में ध्यान रखना पड़ता है ताकि अपने विचारों की स्पष्टता आसानी से कर सकें । वस्तुतः भाषा शिक्षण का प्राकृतिक तरीका यह है कि शिक्षक के उच्चारण पर छात्रों की भाषाभिव्यक्ति अवलंबित है, क्योंकि छात्र स्वयं दूसरों का अनुकरण करते हैं। इसलिए प्रत्येक हिन्दी शिक्षक को उच्चारणशास्त्र का सैद्धन्तिक एवं प्रायोगिक दृष्टि से अध्ययन कर लेना चाहिए ।

(3) अध्यापन कार्य का ज्ञाता :

अध्यापन कार्य का अनुभवी शिक्षक वर्ग नियंत्रण कर छात्रों को एकाग्र करके सफल शिक्षण कार्य कर सकता है। अध्यापन कार्य में उपयोगी पद्धतियों, प्रयुक्तियों के साथ सही शिक्षा के उपकरणों का उपयोग करके अध्यापन कार्य कर सकें, यह अपेक्षा शिक्षक से रखी जाती है ।

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED COLLEGE-RAJKOT

(4) हिन्दी साहित्य में अभिरुचि :

माध्यमिक या उच्च माध्यमिक कक्षा में हिन्दी पढ़ानेवाले शिक्षक को हिन्दी साहित्य का गहरा अध्ययन करने की अभिरुचि होनी जरूरी है। हिन्दी साहित्य की जानकारी में वर्तमान विद्याओं से लेकर नई गतिविधियाँ का ज्ञान भी होना चाहिए। भाषा साहित्य का विकास दिन- प्रतिदिन बढ़ता जाता है, इसलिए हिन्दी भाषा के शिक्षक को नयी-नयी पुस्तकें, पत्र-पत्रिकाएँ आदि का सतत अध्ययन करते हुए भाषासंबंधी योग्यताएँ बढ़ानी चाहिए ।

(5) अन्य भाषाओं का ज्ञान :

अहिन्दी भाषा क्षेत्रों में हिन्दी भाषा पढ़ाते समय हमारे छात्रों के पास जो मातृभाषा का ज्ञान है उसका असर पड़ता है। इसलिए हिन्दी शिक्षक को अन्य भाषाओं एवं अन्य विषयों का ज्ञान हो तो वह आवकार्य है ।

(6) साहित्य सृजन की शक्ति :

शिक्षक में साहित्यिक अभिरुचि के साथ साहित्य सृजन शक्ति हो तो वह श्रेष्ठ माना जाता है। शिक्षक स्वयं कोई रचना कर सकता है तो उसके छात्रों पर उसका जरूर असर होगा । यदि शिक्षक स्वयं सृजनशील है तो वह अग्रणी बनेगा, विद्यालय में एक वातावरण तैयार कर पायेगा और लेखन-सृजन के लिए प्रेरणा प्रदान करेगा ।

4.3 हिन्दी शिक्षक की व्यावसायिक यो यताएँ :

शिक्षक तभी सफल हो सकता है जब कि वह अपने विद्यार्थियों को समझ सकें । अपने विषय को अधिकार के साथ पढ़ा सकें । इन दोनों का समन्वय ही अपने व्यवसाय में रुचि पर आधार रखता है। हिन्दी शिक्षक में शैक्षिक योग्यताओं में सम्मिलित सारी बातें ज्ञानात्मक एवं कलात्मक रूप से कहीं जायेगी फिर भी कुछ कमी महसूस होती है। उसकी कमी व्यावसायिक योग्यताओं में पूरी की जा सकती है। जैसे

(1) शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान

(2) भाषा-शिक्षा की पद्धतियों का ज्ञान

(3) दृश्य-श्रव्य उपकरणों का प्रयोग

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

(4) क्रियात्मक अनुसंधान का कार्य-कौशल

(5) व्यवसाय के प्रति रुचि

(6) शिक्षक का व्यक्तित्व

हिन्दी शिक्षक की व्यावसायिक योग्यता में उपरोक्त बातें हमारे सामने आती है ।

(1) शिक्षा मनोविज्ञान का ज्ञान :

शिक्षा में मनोविज्ञान का ज्ञाना शिक्षक छात्र-छात्राओं का स्वाभाविक मनोविश्लेषण कर स्थायीभाव स्वभाव, रुचि, बुद्धि आदि को समझकर अन्य प्रवृत्तियों का आयोजन करेगा। हर छात्र दूसरे से अलग है - ऐसी वैयक्तिक बातों को समझने के लिए शिक्षक को मनोविज्ञान उपयोगी होगा । शिक्षा में मनोविज्ञान के सिद्धान्तों पर ध्यान देनेवाला शिक्षक छात्रों को वैयक्तिक भिन्नता को समझ सकेगा। व्यक्तिगत प्रश्नों को हल करेगा एवं प्रेमपूर्वक व्यवहार कर सकेगा ।

(2) शिक्षा पद्धतियों का ज्ञाता :

हिन्दी शिक्षक चाहे विषयवस्तु में माहिर हो, फिर भी मनोवैज्ञानिक तौर पर उसे भाषा शिक्षण पद्धतियों पर भी ध्यान रखना पड़ेगा । भिन्न-भिन्न पद्धतियाँ साधन मात्र हैं साध्य है शिक्षक का सफल अनुकरण । जब शिक्षक नूतन पद्धतियों का प्रयोग करता रहेगा, अपनी गलतियाँ सुधारता रहेगा तो जरूर एक आदर्श शिक्षक बन पायेगा ।

हिन्दी शिक्षा में स्वानुभव हो सके इसलिए प्रोजेक्ट, जूथचर्चा, सेमिनार, परिसंवाद जैसी प्रयुक्तियों की जानकारी शिक्षक के पास होनी चाहिए । शिक्षा पद्धतियों के ज्ञान के साथ-साथ शिक्षा में क्रियाशीलता, सर्जनात्मकता एवं नई गतिविधियों पर भी शिक्षक का प्रभाव होना चाहिए ।

(3) दृश्य-श्राव्य उपकरणों का प्रयोग :

शिक्षा में भिन्न-भिन्न विषयांग के कठिन पहलूओं को अधिक सरल बनाने के लिए शिक्षक दृश्य-श्राव्य साधनों का प्रयोग कर सकता है। शिक्षा में केवल शाब्दिक कथन करने के अलावा शिक्षण कार्य करते समय चित्र, टेपरेकार्डर,

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

नाट्यप्रयोग, रेडियो सुनाना, टी.यी एवं कम्प्यूटर केसेट द्वारा शिक्षा प्रदान की जा सकती है। इन उपकरणों से कठिन बातें छात्र आसानी से समझ पाते हैं। ये सभी बातें तथ सही रूप से सिद्ध हो सकती हैं जब हिन्दी शिक्षक अधिक उत्साह के जरिए दृश्य-श्रव्य उपकरणों का प्रयोग कर सकें ।

(4) क्रियात्मक अनुसंधान का कार्य कौशल :

आज कल शिक्षा क्षेत्र में अनेक समस्याएँ पैदा होती हैं। प्रत्येक क्षेत्र में यह समस्याएँ अलग-अलग होती हैं। जैसे हिन्दी भाषा की शिक्षा में हमारे छात्रों को ध्यान में रखते हुए

•शुद्ध हिन्दी वाचन नहीं कर सकते ।

•कुछ छात्रों को व्याकरण के प्रति रुचि नहीं है।

•कुछ छात्र नियमित रूप से स्वाध्याय नहीं करते ।

•कई छात्रों के हिन्दी में हस्ताक्षर खराब हैं।

•कुछ छात्र हिन्दी शुद्ध रूप से बोल नहीं सकते हैं।

उपरोक्त दैनंदिन समस्याओं का सही समाधान ढूँढने के लिए क्रियात्मक अनुसंधान आवश्यक है। इस प्रकार की समस्याओं के सही उत्तर प्राप्त करने का तरीका क्रियात्मक अनुसंधान है। शिक्षक को इसकी जानकारी होनी चाहिए ।

(5) व्यवसाय के प्रति रुचि :

शिक्षक को अपने व्यवसाय का गर्व होना चाहिए । डॉ. राधाकृष्णन् के मतानुसार शिक्षा देना शिक्षक के लिए धर्म बन जाता है। अच्छे शिक्षकों की कमी है फिर भी कई शिक्षक बेकार भी हैं, यह इसलिए कहा जाता है कि सच्चे शिक्षकों की आवश्यकता है। एक कुशल शिक्षक अपने पेशे का इस प्रकार गौरव करता है और अपने पद को निभाता है जिससे समग्र राष्ट्र की ताकत बढ़ जाती है । राष्ट्र का निर्माण और प्रलय स्वयं शिक्षक के हाथों में है।

(6) शिक्षक का व्यक्तित्व :

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT

राष्ट्रभाषा का शिक्षक स्वयं स्कूल में अपना एक सांस्कृक्तिक पच खड़ा कर सकता है। पढ़ाते वक्त सौम्यता एवं प्रभावशाली व्यक्तिला सदा कर सकें, यह आवश्यक है। किसी शिक्षक के पास हँसता हुआ चेहरा, वाणी में प्रवाहिता, भाषा में स्पष्टता और वक्तृत्व कला है उसे दूसरे शब्दों में उसका व्यक्तित्व कहा जाएगा। हिन्दी शिक्षक में विषय का ज्ञान, शुद्ध आचरण, जिज्ञासा वृत्ति, तन्निकी शान, उदारता, परिश्रम जैसे विशिष्ट गुणों का होना आवश्यक है।

—----------

स्वाध्याय

—----------

(1) निम्नलिखित प्रश्नों के सविस्तर उत्तर दीजिए ।

(1) हिन्दी शिक्षक किन आवश्यक गुणों से समन्वित होना चाहिए ?

(2) आदर्श हिन्दी शिक्षक स्कूल में अपना कर्तव्य किस प्रकार अदा करता है ?

(3) हिन्दी शिक्षक में कौन-सी व्यावसायिक सज्जता होनी चाहिए ?

(2) निम्न प्रश्नों के संक्षिप्त में उत्तर दीजिए ।

(1) हिन्दी शिक्षक में कौन-सी भाषाकीय योग्यताएँ होनी चाहिए ?

(2) हिन्दी भाषा के शिक्षक का महत्त्व क्या है ?

SHREE H.N.SHUKLA GROUP OF B.ED. COLLEGE-RAJKOT